विक्रम संवत् 2083 ▪ वैशाख/ज्येष्ठ मास/अधिमास (03) ▪ 01 मई 2026 ▪ मूल्यः 23 रु.

# चरैवेति

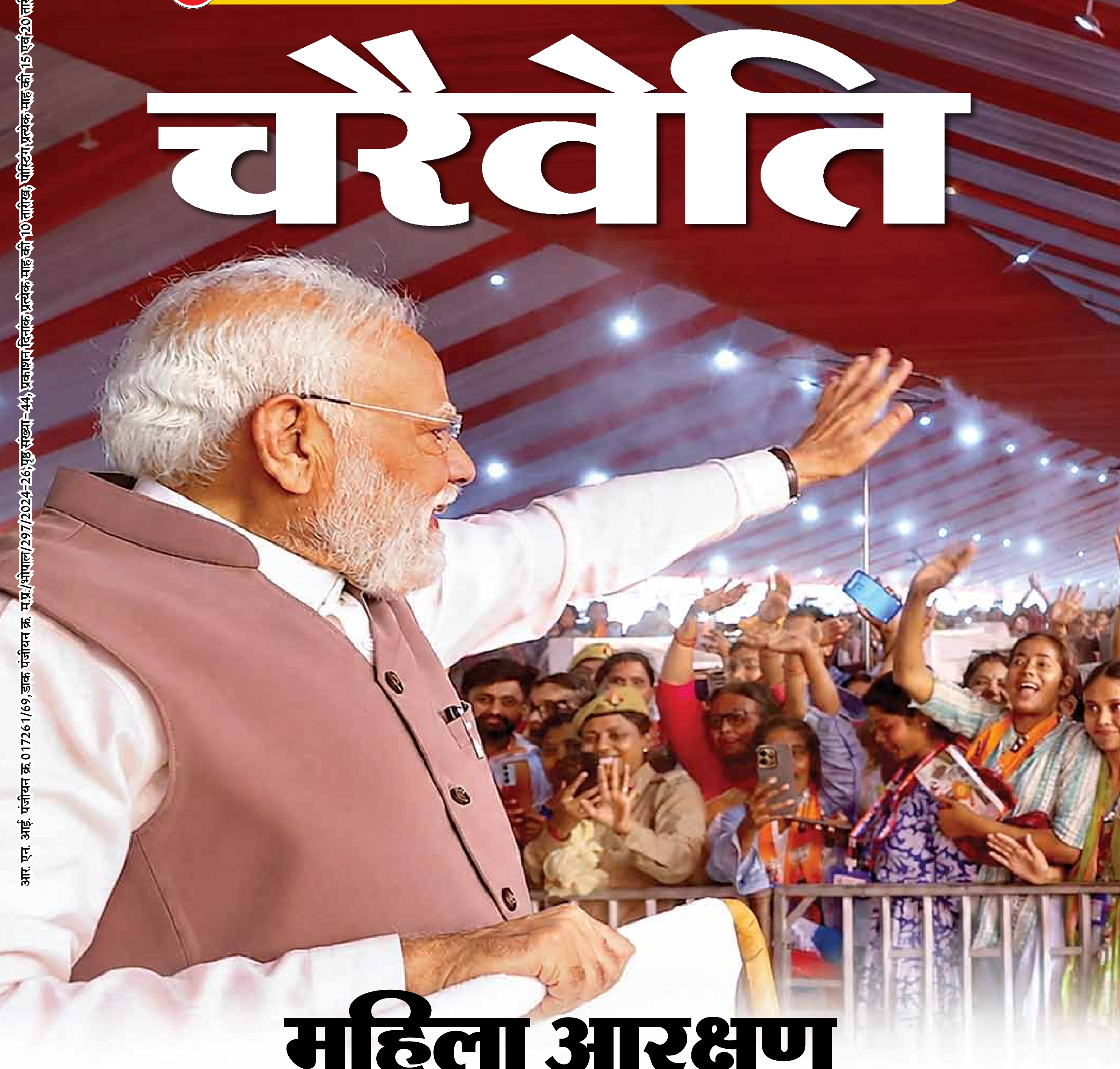

# महिला आरक्षण हेतु प्रयास रुकेगा नहीं, थमेगा नही

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष में उठाए जा रहे उपायों की समीक्षा की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने ''भाजपा के 47वें स्थापना दिवस'' के अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

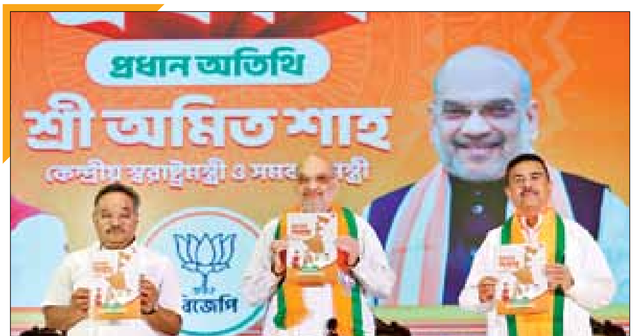


▪ केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने पश्चिम बंगाल में विकसित पश्चिम बंगाल के लिए भाजपा संकल्प पत्र लॉन्च किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री गुरु भैरवैक्य मंदिर का उद्घाटन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कोलकाता स्थित थंथानिया कालीबाड़ी में प्रार्थना की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनगणना 2027 के लिए स्व-गणना प्रपत्र भरा।

# अनुक्रमणिका


» **संपादकीय ▪ संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ "नारी शक्ति वंदन अधिनियम" मोदी की गारंटी है

» **कवर स्टोरी ▪** 05

▪ महिला आरक्षण हेतु प्रयास रुकेगा नहीं, थमेगा नही


05

19

▪ **नारी शक्ति वंदन अधिनियम** 08
» विपक्ष ने महिलाओं का अधिकार रोका - डॉ. मोहन यादव
» विपक्ष महिलाओं को अधिकार के खिलाफ - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **लोकसभा में प्रधानमंत्री जी** 10
» नारी शक्ति नीति निर्धारण का हिस्सा बने
▪ **नारीशक्ति वंदन सम्मेलन** 12
» नारीशक्ति ने असीमित योगदान दिया है
▪ **कविता** 13
» कौरव कौन, कौन पाण्डव
▪ **47वां स्थापना दिवस** 14
» "राष्ट्र प्रथम"
▪ **स्थापना दिवस** 16
» भाजपा गुड गवर्नेंस और लास्ट माइल डिलीवरी का सिंबल
▪ **युवा मोर्चा** 18
» संगठन कार्यों को आगे बढ़ाएं - डॉ. मोहन यादव
» संगठन को बुलंदियों तक पहुंचाएं - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **भाजपा स्थापना दिवस** 19
» आदर्श, लक्ष्य व कार्य राष्ट्रवाद पर आधारित
» भाजपा विचार और विश्वास की यात्रा
▪ **मुख्यमंत्री का संदेश** 21
» समृद्ध किसान की विकसित भारत में महत्वपूर्ण भूमिका
▪ **डॉ. अंबेडकर जयंती** 22
» डॉ. अंबेडकर जी के सपने पूरा करेंगे
» भारत के निर्माता हैं बाबा साहेब - मुख्यमंत्री डॉ. यादव
▪ **गांव-बस्ती चलो अभियान** 24
» भाजपा अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कार्य कर रही
» सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचायें - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **नारीशक्ति वंदन अधिनियम पर विशेष आलेख** 26
» महिला भागीदारी के बिना 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था का सपना अधूरा
▪ **जिला प्रशिक्षण वर्ग की योजना बैठक** 27
» कार्यकर्ता संगठन की आत्मा, शक्ति और प्राण हैं - शिवप्रकाश जी
» स्वदेशी व सादगी से परिपूर्ण हो प्रशिक्षण वर्ग - अजय जामवाल
» प्रशिक्षण कार्यपद्धति से अवगत कराने का माध्यम
▪ **डॉ. अंबेडकर जयंती** 28
» बाबा साहब की दूरदर्शी सोच - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **वक्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** 29
» प्रशिक्षण वर्ग से व्यक्तित्व निर्माण
▪ **'सेवा प्रकल्प'** 30
» भाजपा की कल्पनाशीलता है सेवा का प्रकल्प - डॉ. मोहन यादव
» राजनीति का मतलब, जनता की सेवा - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **वक्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** 31
» प्रशिक्षण वर्ग आवश्यक
▪ **जन आक्रोश महिला समेलन** 32
» बहनों का आक्रोश लाएगा जागृति - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **मन की बात** 33
» डिजिटल जनगणना सफल बनाऐं
» 'मन की बात' देशवासियों के मन में - मुख्यमंत्री डॉ. यादव
» फास्ट ब्रीडर रिएक्टर की सफलता मील का पत्थर - हेमंत खण्डेलवाल
▪ **जयंती** 38
» वीर योद्धा छत्रसाल
» लोकमाता महारानी अहिल्याबाई
» सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर ने
▪ **विचार प्रवाह** 41
» संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है


## • मुख्य व्रत-त्यौहार

1. कूर्म अवतार, महर्षि भृगु जयंती, टेकचंद महा. जयंती, श्रमिक एवं महाराष्ट्र, गुजरात स्थापना दिवस 3. मीना समाज मंदिर 15. विश्व परिवार दिवस 17. विश्व दूरसंचार दिवस 22. राजा राममोहन राय जयंती 27. पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्यतिथि 31. विश्व धूम्रपान निरोधक दिवस

## • मुख्य जयंती-दिवस

1. स्ना. दा. व्रत, वैशाखी, बुद्ध पूर्णिमा 5 अं. गणेश चतुर्थी व्रत 13. अचला/ अपरा एकादशी व्रत 14. प्रदोष व्रत 15. शिव चतुर्दशी व्रत, भ. शांतिनाथ ज. व मोक्ष, पाक्षिक प्रति. 16. वट सावित्री अमावस्या व्रत 17. पुरुषोत्तम मास प्रारम्भ 18. चन्द्रदर्शन, रोहिणी व्रत 20. विनायकी चतुर्थी व्रत 26. गंगा दशहरा 27. कमला एकादशी व्रत 28. प्रदोष व्रत 30. व्रत पूर्णिमा, पाक्षिक प्रति. 31. स्नानदान पूर्णिमा

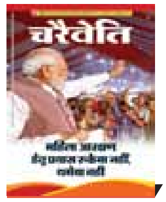



वर्ष-58, अंक : 03, भोपाल, मई 2026

**हमारे प्रेरणास्रोत**
पं. दीनदयाल उपाध्याय

## ध्येय बोध

"विकास के लिए हमारे पास एक ही मंत्र होना चाहिए - हर हाथ को काम और हर खेत को पानी"।

**- पं. दीनदयाल उपाध्याय**


•

**सम्पादक**
मुद्रक एवं प्रकाशक
**संजय गोविंद खोचे***

•

सहायक सम्पादक
**पं. सलिल मालवीय**

•

व्यवस्थापक
**योगेन्द्रनाथ बरतरिया**

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

# “नारी शक्ति वंदन अधिनियम” मोदी की गारंटी है

21 वीं सदी का अति महत्वपूर्ण अध्याय पूर्ण होते-होते रह गया, महिलाओं को अधिकार देना, नीति-निर्णय निर्धारण में भागीदारी देना-मात्र एक नारा है- संसद में वोट करते समय, किनारा करना है- काँग्रेस समेत सम्पूर्ण विपक्ष ने सिद्ध किया।

संसद में प्रस्ताव गिर जाने से-भारतीय लोकतंत्र को एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण मोड़ से निकलने को मजबूर होना पड़ा।

आखिर विपक्ष ने महिलाओं को अधिकार देने के निर्णय में सहभागिता से अपने हाथ क्यों खींच लिए? क्या विपक्ष संसद व विधानसभाओं में महिलाओं की हिस्सेदारी से परहेज करता है? क्या विपक्ष मोदी सरकार द्वारा लाए गये प्रस्ताव को मोदी सरकार में लोकतंत्र का ऐतिहासिक दिन बनने से रोकना चाहता था? क्या विपक्ष को डर था कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने से 5 राज्यों की विधानसभा चुनावों में भाजपा को महिलाओं के एक तरफा वोट मिल सकते हैं? क्या परिवारवादी पार्टियों को परिवार की महिलाओं के एकाधिकार पर अंकुश लगने का डर हावी था? जो भी तर्क हों? कारण हों? समस्याऐं हों? सभी बातों के बाद भी यह तो स्पष्ट है कि महिलाओं के अधिकारों के मार्ग में काँग्रेस समेत सम्पूर्ण विपक्ष ने रोड़ा अटकाया, और प्रस्ताव को रोका, पर वे शायद निर्णय करने में अति उत्साह का परिचय दे गये, उन्होंने किन्चित मात्र भी यह नहीं सोचा कि प्रस्ताव मोदी जी लाए हैं,तो प्रस्ताव को पास करवाने की गारंटी भी मोदी जी की ही है, और मोदी की गारंटी का अर्थ गारंटी पूरा होने की गारंटी होता है, ऐसे में विपक्ष ने महिलाओं का भरोसा भी खोया और मोदी जी को महिलाओं के आरक्षण का प्रस्ताव पास करवाने का बड़ा दायित्व भी सौप दिया। कुछ वक्त लग सकता है, पर महिलाओं का पूर्ण विश्वास है- मोदी की गारंटी का अर्थ, गारंटी पूरा होने की गारंटी होता है।

विपक्ष अपने बुने जाल में खुद ही उलझ कर रह गया। एक तरफ विपक्ष अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है, पर अपने निर्णयों से कहीं विपक्ष को अपने अस्तित्व की लड़ाई के लिए भी लड़ाई लड़नी न पड़ जावे।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को लेकर संसद में विपक्षी दलों द्वारा किया गया व्यवहार पूरी तरह से निंदनीय है। आज भाजपा के पास भले ही आवश्यक दो तिहाई बहुमत न हो पर शत-प्रतिशत महिलाओं का दिल दुखाने के लिए देश विपक्षी दलों को माफ नहीं करेगा।

भाजपा ने अपना 47वाँ स्थापना दिवस मनाया। जनसंघ से लेकर1980 के बम्बई अधिवेशन तक फिर आज तक की भाजपा की यात्रा विभिन्न पड़ावों से होती हुई आज 14 करोड़ सदस्यों के साथ विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल तक का मार्ग तय कर चुकी है। भाजपा 12 वर्षों से देश का संचालन कर रही है। कई राज्यों में लगातार सेवा प्रदान कर रही है। बचे हुए राज्यों में संगठन के माध्यम से जनाधार को मजबूत करने के प्रयास लगातार जारी हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब देश के कोने-कोने में भाजपा का झण्डा बुलंद होगा। पर ऐसा क्यों? भाजपा ही क्यों? देश में तो बहुत सारे अन्य दल भी हैं?

जनता ने भाजपा को मौका देकर भाजपा व अन्य दलों में अन्तर को अच्छे से पहचान लिया है, और अब मतदाता भाजपा के पक्ष में वोट डालने के लिए उत्साह दिखा रहा है, इसी का परिणाम है केरल में भी भाजपा मिल रही है, पश्चिम बंगाल में भी भाजपा, उड़ीसा में भी भाजपा, जहाँ नजर डालो भाजपा ही भाजपा, भाजपा के नीति, नियम व सिद्धांत एकदम स्पष्ट हैं, परिस्थितियां कैसी भी हों, भाजपा ने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। आज की भाजपा करोड़ों कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या और बलिदान से सिंचित है, पूर्णतः लोकतांत्रिक दल है, जनता व कार्यकर्ताओं का अटूट् विश्वास ही भाजपा की असली ताकत है। भाजपा का कार्यकर्ता विधायक, सांसद से लेकर राज्य का मुख्यमंत्री, देश का प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक बन सकता है।

मप्र के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने संदेश में बताया कि प्रदेश सरकार हर हाल में किसानों के साथ खड़ी है। किसान कल्याण वर्ष में कृषि को विशेष प्राथमिकता प्रदान की जावेगी। मप्र गेहुँ उपार्जन में 22 लाख मीट्रिक टन का अतिरिक्त उपार्जन कर किसानों को बहुत बड़ा सहयोग प्रदान करेगा। प्रदेश सरकार ने भू-अर्जन को लेकर भी किसानों के हित में बहुत बड़ा निर्णय किया है, अब प्रदेश में किसानों की भूमि के बदले 4 गुणा मुआवजा मिलेगा।

भाजपा स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव व प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी के नेतृत्व में 14 जिला कार्यालयों का भूमिपूजन व 3 जिला कार्यालयों का कार्यारंभ हुआ। एक साथ 17 जिला कार्यालयों का कार्य, मप्र भाजपा की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

भाजपा में प्रशिक्षण वर्ग सतत् प्रक्रिया है, प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व निर्माण, संगठन की कार्यपद्धति और विचारधारा को आगे बढ़ाने में बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। भाजपा राष्ट्र प्रथम और जनता की सेवा के लिए कार्य करती है। प्रशिक्षण महाभियान के प्रथम चरण में 1313 मंडलों में कार्यशालाऐं आयोजित की गईं। अब कार्यकर्ताओं को केन्द्र सरकार व राज्य सरकार की जनहितैषी योजनाओं व कार्यों की जानकारी जन-जन तक पहुँचाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संकल्प विकसित भारत@2047 को सिद्ध करने के लिए कार्यकर्ताओं को समर्पित भाव से संगठन को और अधिक सशक्त बनाने के लिए जुटना होगा। हर कार्यकर्ता को अपना पूर्ण योगदान देना होगा। सभी कार्यकर्ताओं को यह संकल्प लेना होगा कि हम ही भाजपा हैं, हम ही भाजपा की पहचान बढ़ाएंगे, इस अमृतकाल में ऐसे संकल्प के साथ आगे बढ़ें जिसमें भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाने का सपना शामिल हो। पंचायत से संसद तक भगवा लहराये, भारत को विकसित बनाना है तो भाजपा को भी उसी प्रकार से मजबूत बनाना होगा। ▪

**(संजय गोविन्द खोचे)**
सम्पादक

# महिला आरक्षण हेतु प्रयास रुकेगा नहीं, थमेगा नही

## महिला आरक्षण की रुकावट खत्म करके रहेंगे

- **महिलाएं सब कुछ भूल सकती हैं, लेकिन अपने स्वाभिमान का अपमान कभी नहीं भूलतीं।**
- **नारी शक्ति वंदन अधिनियम संशोधन 21वीं सदी की महिलाओं को सशक्त बनाने का एक 'महायज्ञ' था।**
- **नारी शक्ति वंदन अधिनियम का वंशवादी दलों द्वारा विरोध करने का एक प्रमुख कारण उनका डर है।**
- **हम महिला आरक्षण की राह में आने वाली हर बाधा को दूर करेंगे।**
- **महिलाओं के अधिकार छीनते हुए ये लोग मेजें थपथपा रहे थे, यह महिलाओं की गरिमा और उनके आत्मसम्मान पर एक आघात था।**
- **महिला आरक्षण का विरोध करने के लिए विपक्ष को अपने किए गए पाप की सजा मिलेगी।**

भारत का हर नागरिक देख रहा है कि कैसे भारत की नारी शक्ति की उड़ान को रोक दिया गया। उनके सपनों को बेरहमी से कुचल दिया गया है। हमारे भरसक प्रयास के बावजूद हम सफल नहीं हो पाए, नारी शक्ति वंदन अधिनियम में संशोधन नहीं हो पाया! और मैं इसके लिए सभी माताओं-बहनों, उनसे मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

हमारे लिए देश हित सर्वोपरि है, लेकिन जब कुछ लोगों के लिए दल हित सब कुछ हो जाता है, दल हित, देश हित से बड़ा हो जाता है, तो नारी शक्ति को, देश हित को, इसका खामियाजा उठना पड़ता है। इस बार भी यही हुआ है। कांग्रेस, डीएमके, टीएमसी और समाजवादी पार्टी जैसे दलों की स्वार्थी राजनीति का नुकसान देश की नारी शक्ति को उठाना पड़ा है।

देश की करोड़ों महिलाओं की नजर संसद पर थी, देश की नारी शक्ति देख रही थी, मुझे भी यह देखकर बहुत दुख हुआ, कि जब ये नारी हित का प्रस्ताव गिरा, तो कांग्रेस, डीएमके, टीएमसी, सपा, जैसी परिवारवादी पार्टियां, खुशी से तालियां बजा रही थीं। महिलाओं से उनके अधिकार छीनकर ये लोग मेजें थपथपा रहे थे। उन्होंने जो किया वो केवल टेबल पर थाप नहीं थी, वो नारी के स्वाभिमान पर, उसके आत्मसम्मान पर चोट थी और नारी सब भूल जाती है, अपना अपमान कभी नहीं भूलती, इसलिए संसद में कांग्रेस और उसके सहयोग के उन सबके व्यवहार की कसक हर नारी के मन में हमेशा रहेगी। देश की नारी जब भी अपने क्षेत्र में इन नेताओं को देखेगी, तो वो याद करेगी कि इन्हीं लोगों ने, संसद में महिला आरक्षण को रोकने का जश्न मनाया था, खुशियां मनाई थीं। संसद में नारी शक्ति वंदन संशोधन का जिन दलों ने विरोध किया है, उनसे मैं दो टूक कहूंगा, ये लोग नारी शक्ति को फॉर ग्रांटेड ले रहे हैं, वो ये भूल रहे हैं, कि 21वीं सदी की नारी देश की हर घटना पर नजर रख रही है, वो उनकी की मंशा भाप रही है और सच्चाई भी भली भांति जान चुकी है। इसलिए महिला

जिन दलों (पार्टियों) ने संसद में नारी शक्ति वंदन अधिनियम संशोधन का विरोध किया है, वे महिला शक्ति को हल्के में ले रहे हैं। देश की 100 प्रतिशत नारी शक्ति का आशीर्वाद हमारे साथ है।

आरक्षण विरोध करके जो पाप विपक्ष ने किया है, इसकी उन्हें सजा जरूर मिलेगी। इन दलों ने संविधान निर्माताओं की भावनाओं का भी अपमान किया है और जनता द्वारा इसकी सजा से भी वो बच नहीं पाएंगे।

सदन में नारी शक्ति वंदन संशोधन किसी से भी कुछ छीननें का नहीं था। नारी शक्ति वंदन संशोधन हर किसी को कुछ ना कुछ देने का था, देने के लिए संशोधन का था। ये 40 साल से लटके हुए नारी के हक को, 2029 के अगले लोकसभा चुनाव से उसका हक देने का संशोधन था।

नारी शक्ति वंदन संशोधन 21वीं सदी के भारत की नारी को नए अवसर देने, नई उड़ान देने, उसके सामने से बाधाएं हटाने का महायज्ञ था। देश की 50 प्रतिशत यानी आधी आबादी को उसका अधिकार देने का साफ नियत के साथ, ईमानदारी के साथ किया गया एक पवित्र प्रयास था। नारी को भारत की विकास यात्रा में सहयात्री बनाने और सबको जोड़ने का प्रयास था। नारी शक्ति वंदन संशोधन समय की मांग है। नारी शक्ति वंदन संशोधन उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी राज्यों की हर राज्य की शक्ति में समान वृद्धि का प्रयास था। ये संसद में सभी राज्यों की आवाज को अधिक शक्ति देने का प्रयास था। राज्य छोटा हो, राज्य बड़ा हो, राज्य की आबादी कम हो या राज्य की आबादी ज्यादा हो। सब की समान अनुपात में शक्ति बढ़ाने की कोशिश थी। लेकिन इस ईमानदार प्रयास की कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने सदन में पूरे देश के सामने भ्रूण हत्या कर दी है। ये कांग्रेस, टीएमसी, समाजवादी पार्टी, टीएमके जैसे दल, इस भ्रूण हत्या के गुनहगार हैं। ये देश के संविधान के अपराधी हैं, ये देश की नारी शक्ति के अपराधी हैं।

कांग्रेस महिला आरक्षण के विषय से ही नफरत करती है, उसने हमेशा से ही महिला आरक्षण को रोकने के लिए षड्यंत्र किए हैं। इस दिशा में पहले जितनी बार भी प्रयास हुए, हर बार कांग्रेस ने इसमें रोड़े अटकाए हैं। इस बार भी कांग्रेस और उसके साथियों ने महिला आरक्षण को रोकने के लिए एक के बाद एक नए झूठ का सहारा लिया। कभी संख्या को लेकर, कभी किसी और तरीके से, कांग्रेस और उसके साथियों ने देश को गुमराह करने की कोशिश की। ऐसा करके इन दलों ने भारत के नारी शक्ति के सामने अपना असली चेहरा सामने ला दिया है। अपना मुखौटा उतार दिया है।

मुझे व्यक्तिगत तौर पर आशा थी कि कांग्रेस अपनी दशकों पुरानी गलती सुधारेंगी। कांग्रेस अपने पापों का प्रायश्चित करेगी, लेकिन कांग्रेस ने इतिहास रचने का, महिलाओं के पक्ष में खड़े होने का, अवसर खो दिया। कांग्रेस खुद देश के अधिकांश हिस्सों में अपना वजूद खो चुकी है। कांग्रेस परजीवी की तरह क्षेत्रीय दलों के पीठ पर सवार होकर खुद को जिंदा रखे हुए है। लेकिन कांग्रेस, ये भी नहीं चाहती कि क्षेत्रीय दलों की ताकत बढ़े, इसलिए कांग्रेस ने इस संशोधन का विरोध करवा कर अनेक क्षेत्रीय दलों के भविष्य को अंधकार में धकेलना का राजनीतिक षड्यंत्र किया है।

कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, डीएमके, टीएमसी और दूसरी पार्टियां, इतने वर्षों से हर बार वही बहाने, वही कुतर्क गढ़ते आए हैं, बनाते आए हैं, कोई ना कोई टेक्निकल पेंच फंसाकर, ये महिलाओं के अधिकारों पर डाका डालते रहे हैं। देश राजनीति का यह भद्दा पैटर्न बराबर समझ चुका है, और उसके पीछे की वजह भी जान चुका है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम के विरोध की एक बड़ी वजह है, इन परिवारवादी पार्टियों का डर। इन्हें डर है, अगर महिलाएं सशक्त हो गईं, तो इन परिवारवादी पार्टियों का नेतृत्व खतरे में पड़ जाएगा। ये कभी नहीं चाहेंगे कि उनके परिवार के बाहर की महिलाएं आगे बढ़ें। आज पंचायतों में, लोकल बॉडीज में, जिन हजारों लाखों महिलाओं ने अपनी क्षमता को साबित किया है, जब आगे बढ़कर लोकसभा और विधानसभाओं में आना चाहती हैं, देश की सेवा करना चाहती हैं, परिवारवादियों के भीतर उनसे असुरक्षा की भावना बैठी हुई है। परिसीमन के बाद महिलाओं के लिए कहीं ज्यादा सीटें होंगी, महिलाओं का कद बढ़ेगा, इसीलिए, इन लोगों ने नारी शक्ति वंदन संशोधन का विरोध किया है। देश की नारी शक्ति कांग्रेस और उसके सहयोगियों को इस पाप के लिए कभी माफ नहीं करेगी।

कांग्रेस और उसके साथी दल, डिलिमिटेशन पर लगातार झूठ बोल रहे हैं। ये इस बहाने विभाजन की आग को सुलगाना चाहते हैं। क्योंकि, बांटो और राज करो, कॉंग्रेस ये पॉलिटिक्स अंग्रेजों से विरासत में सीखकर आई है। और, कांग्रेस आज भी उसी के सहारे चल रही है। कांग्रेस ने हमेशा देश में दरार पैदा करने वाली भावनाओं को हवा दी है। इसलिए, ये झूठ फैलाया गया कि डिलिमिटेशन यानी परिसीमन से कुछ राज्यों को नुकसान होगा! जबकि, सरकार ने पहले दिन से स्पष्ट किया है, कि न किसी राज्य की भागीदारी का अनुपात बदलेगा, न किसी का representation कम होगा। बल्कि, सभी राज्यों की सीटें समान अनुपात में ही बढ़ेंगी। फिर भी कॉंग्रेस, DMK, TMC और समाजवादी पार्टी जैसे दल इसे मानने को तैयार नहीं हुए।

ये संशोधन बिल सभी दलों, और सभी राज्यों के लिए एक मौका था, एक अवसर था। ये बिल पास होता तो तमिलनाडु, बंगाल, यूपी, केरलम, हर राज्य की सीटें बढ़तीं। लेकिन अपनी स्वार्थी राजनीति की वजह से इन दलों ने, अपने राज्य के लोगों को भी धोखा दे दिया। जैसे कि, DMK के पास मौका था कि वो और ज्यादा तमिल लोगों को सांसद, विधायक बना सकती

थी, तमिलनाडु की आवाज और मजबूत कर सकती थी! लेकिन, उसने वो मौका खो दिया। TMC के पास भी बंगाल के लोगों को आगे बढ़ाने का मौका था। लेकिन TMC ने भी ये मौका गवां दिया। समाजवादी पार्टी के पास भी मौका था कि वो महिला विरोधी छवि होने के दाग को कुछ कम कर सके। लेकिन सपा भी इसमें चूक गई। समाजवादी पार्टी लोहिया जी को तो पहले ही भूल चुकी है। सपा ने नारी शक्ति वंदन संशोधन का विरोध करके, लोहिया जी के सारे सपनों को पैरों तले रौंद दिया है। सपा महिला आरक्षण विरोधी है, ये यूपी की और देश की महिलाएं कभी नहीं भूलेंगी।

महिलाओं के आरक्षण का विरोध करके, कांग्रेस ने फिर एक बात सिद्ध कर दी है। कांग्रेस, एक एंटी रिफॉर्म पार्टी है। 21वीं सदी के विकसित भारत के लिए, जो भी निर्णय, जो भी रिफॉर्म्स जरूरी हैं, जो भी निर्णय देश ले रहा है, कांग्रेस उन सबका विरोध करती है, उसे खारिज कर देती है, उस काम के अंदर खलल डालती है। यही कांग्रेस का इतिहास है और यही कांग्रेस की नेगेटिव पॉलिटिक्स है।

ये वही कांग्रेस है, जिसने जनधन-आधार-मोबाइल की त्रि-शक्ति का विरोध किया। कांग्रेस ने, डिजिटल पेमेंट्स का विरोध किया, कांग्रेस ने, GST का विरोध किया, कांग्रेस ने, सामान्य वर्ग के गरीबों को आरक्षण का विरोध किया, कांग्रेस ने, ट्रिपल तलाक के विरुद्ध कानून का विरोध किया। कांग्रेस ने, आर्टिकल 370 हटाने का विरोध किया। हमारा संविधान, हमारे कोर्ट, जिस यूनिफॉर्म सिविल कोड, समान नागरिक आचार संहिता को, यूसीसी को जरूरी बताते हैं, कांग्रेस उसका भी विरोध करती है। Reform का नाम सुनते ही कांग्रेस, विरोध की तख्ती लेकर दौड़ पड़ती है। ऐसा कोई भी काम जिससे देश मजबूत होता है, कांग्रेस उसमें बाधाएं खड़ी करने के लिए पूरी शक्ति लगा देती है। कांग्रेस, वन नेशन वन इलेक्शन का विरोध करती है, कांग्रेस, देश से घुसपैठियों को भगाने का विरोध करती है, कांग्रेस, मतदाता सूची के शुद्धिकरण, SIR का विरोध करती है, कांग्रेस, वक्फ बोर्ड में Reform का विरोध करती है।

कांग्रेस ने, शरणार्थियों को सुरक्षा देने वाले CAA कानून तक का विरोध किया। इस पर झूठ बोलकर-अफवाहें फैलाकर देश में बवंडर खड़ा कर दिया। कांग्रेस, माओवादी-नक्सली हिंसा को समाप्त करने के देश के प्रयासों में भी रुकावटें डालती है। कांग्रेस का एक ही पैटर्न रहा है, कोई भी Reform आए तो झूठ बोलो, भ्रम फैलाओ। इतिहास साक्षी है, कांग्रेस ने हमेशा यही नेगेटिव रास्ता चुना है।

जो भी कार्य देश के लिए जरूरी फैसला होता है, कांग्रेस इसको कार्पेट के नीचे डाल देती है। कांग्रेस के इसी रवैये की वजह से भारत विकास की उस ऊंचाई पर नहीं पहुंच पाया, जिसका भारत हकदार है। आजादी के समय, उस दौर में हमारे साथ और भी कई देश आजाद हुए थे। ज्यादातर देश हमसे बहुत आगे निकल गए, और इसकी वजह थी, कि कांग्रेस हर Reform को रोककर बैठी रही। लटकाना-भटकाना- अटकाना यही कांग्रेस का सिद्धांत रहा है, यही कांग्रेस का वर्क कल्चर रहा है। कांग्रेस ने पड़ोसी देशों के साथ सीमा-विवादों को लटकाया, कांग्रेस ने पाकिस्तान के साथ पानी के बंटवारे से जुड़े विवादों को लटकाया, कांग्रेस ने ओबीसी आरक्षण के निर्णय को 40 साल तक लटकाए रखा। कांग्रेस ने सैनिकों के लिए वन रैंक वन पेंशन को 40 साल तक रोके रखा।

कांग्रेस के इस रवैये ने हमेशा देश का बहुत बड़ा नुकसान किया है। कांग्रेस के हर विरोध, हर अनिर्णय, हर छल-प्रपंच का खामियाजा देश ने भुगता है, देश की पीढ़ियों ने भुगता है। आज देश के सामने जितनी भी बड़ी चुनौतियां हैं, वो कांग्रेस के इसी रवैये से उपजी हुई हैं। इसलिए, ये लड़ाई सिर्फ एक कानून की नहीं है, ये लड़ाई, कांग्रेस की उस एंटी-रिफॉर्म मानसिकता के साथ है, जिसमें सिर्फ नेगेटिविटी है, नकारात्मकता है। और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है, कि देश की सभी बहनें-बेटियां, कांग्रेस की इस मानसिकता को करारा जवाब देकर रहेगी।

कुछ लोग देश की महिलाओं के सपने टूटने को सरकार की नाकामी बता रहे हैं। लेकिन, ये विषय कामयाबी या नाकामयाबी क्रेडिट का था ही नहीं। मैंने संसद में भी कहा था, आधी आबादी को उनका हक मिल जाने दीजिये, मैं इसका क्रेडिट, विज्ञापन छपवाकर विपक्ष के सभी लोगों को दे दूंगा। लेकिन, महिलाओं को दकियानूसी सोच से देखने वाले फिर भी अपने झूठ पर अड़े रहे, कायम रहे!

नारीशक्ति को भागीदारी दिलाने की लड़ाई दशकों से चल रही है। वर्षों से मैं भी इसके लिए प्रयास करने वालों में से एक हूं। कितनी ही महिलाएं ये विषय मेरे सामने उठाती रही हैं। कितनी ही बहनों ने पत्र के द्वारा मुझे सारी बातें बताई हैं। मेरे देश की माताएं-बहनें-बेटियां, मैं जानता हूं, आप सब दुखी हैं। मैं भी आपके इस दुःख में दुःखी हूँ। भले ही, बिल पास कराने के लिए जरूरी 66 परसेंट वोट हमें नहीं मिला हो, लेकिन मैं जानता हूं, देश की 100 परसेंट नारी शक्ति का आशीर्वाद हमारे साथ है। मैं देश की हर नारी को विश्वास दिलाता हूं, हम महिला आरक्षण के रास्ते में आने वाले हर रुकावट को खत्म करके रहेंगे, हटाकर के रहेंगे। हमारा हौसला भी बुलंद है, हमारी हिम्मत भी अटूट है और हमारा इरादा भी अडिग है। महिला आरक्षण का विरोध करने वाली पार्टियां, ये देश की नारी शक्ति को संसद और विधानसभाओं में उनकी भागीदारी बढ़ाने से कभी भी रोक नहीं पाएंगे, सिर्फ वक्त का इंतजार है। नारी शक्ति के सशक्तिकरण का बीजेपी-एनडीए का संकल्प अक्षुण्ण है। हमारे पास संख्या बल नहीं था, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हम हार गए। हमारा आत्म बल अजेय है। हमारा प्रयास रुकेगा नहीं, हमारा प्रयास थमेगा नहीं। हमारे पास आगे अभी और मौके आएंगे, हमें आधी आबादी के सपनों के लिए, देश के भविष्य के लिए, इस संकल्प को पूरा करना ही है। ■

# विपक्ष ने महिलाओं का अधिकार रोका - डॉ. मोहन यादव

**कांग्रेस ने एक विधेयक का नहीं महिलाओं को सशक्त बनाने और अधिकार देने का विरोध किया है। महिला आरक्षण विधेयक को संसद में गिराना महिलाओं के अधिकारों के चीरहरण जैसा।**

- **राष्ट्रहित के कार्य को कांग्रेस और विपक्षी दलों ने राजनीति के तराजू से तौला व महिला आरक्षण रोका।**
- **लड़की हूँ लड़ सकती हूँ का नारा लगाने वाली ने नारी शक्ति को अपमानित करने का कार्य किया।**
- **विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया जाएगा, जन-जन को बताएंगे किसने महिलाओं का अधिकार रोका।**
- **भाजपा कहती नहीं, करके दिखाती है। प्रदेश के 17 जिलों में महिलाएं कलेक्टर व 10 जिलों में एसपी हैं।**
- **'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम का विरोध विपक्षी दलों की अलगाववादी मानसिकता को दिखाता है।**

विपक्षी दलों द्वारा 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम का जिस प्रकार विरोध किया गया, उसे पूरे देश ने देखा है। यह सिर्फ एक साधारण विधेयक नहीं था, बल्कि महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें उनके अधिकार दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास था। विरोधी दलों के इस रवैये ने देश की महिलाओं की आकांक्षाओं और सपनों को आहत करने का काम किया है। देश ने 5 हजार वर्ष पुराने द्रौपदी के चीरहरण की कथा इतिहास में सुनी थी, लेकिन लोकतंत्र के मंदिर में बहनों के अधिकार व सम्मान के साथ जिस प्रकार विपक्षी दलों ने खिलवाड़ किया, वह अत्यंत पीड़ादायक और शर्मनाक है। ऐसे लोगों को देश की जनता कभी माफ नहीं करेगी। सदन में विरोधी दलों द्वारा 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम के खिलाफ अपनाई गई रणनीति यह दर्शाती है कि वे हमारे लोकतांत्रिक ढांचे को कमजोर करने का काम कर रहे हैं। विशेष रूप से कांग्रेस और डीएमके का रवैया 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम पर अत्यंत चिंताजनक रहा है। देश की जनता ने इस पूरे घटनाक्रम को देखा है और समय आने पर जनता ही इसका उचित जवाब देगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जब वर्ष 2023 में देश की संसद और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिलाने के लिए 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम लेकर आए थे, तब कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने समर्थन किया था। लेकिन जब वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव में इसे लागू करने का समय आया तो कांग्रेस व विपक्षी दलों ने इसका विरोध किया। कांग्रेस व विपक्षी दलों की यह पलटी अवसरपरस्ती का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है। वर्ष 2023 में विपक्ष इस अधिनियम को समर्थन के लिए इसलिए तैयार हो गया था कि उन्हें लगा था कि समर्थन नहीं करेंगे तो वर्ष

2024 के लोकसभा चुनाव में उन्हें नुकसान हो जाएगा। अब लोकसभा के चुनाव तीन साल बाद हैं, ऐसे में विपक्षी दलों ने पलटी मारकर महिलाओं के अधिकारों को छीनने का कार्य किया है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को लेकर संसद में विपक्षी दलों द्वारा किया गया व्यवहार पूरी तरह से निंदनीय है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद में कहा था कि आज भले हम दो तिहाई नहीं हैं, लेकिन 100 प्रतिशत बहनों का दिल दुखाने के लिए देश विपक्षी दलों को माफ नहीं करेगा। महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण के खिलाफ जिस तरीके से कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने कार्य किया है, उसको लेकर भाजपा देशभर में जनता के समक्ष जाएगी। देश में सबसे बड़ी अदालत जनता की अदालत होती है। भाजपा जनता को यह बताएगी कि किस प्रकार से विपक्षी दलों ने महिलाओं के अधिकार छीनने का पाप किया है। भाजपा संगठन सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर प्रदेश के जिलों, संभागों में आक्रोश रैली व पदयात्राएं निकालकर जनता तक अपनी बात पहुंचाएगी। महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण के मुद्दे पर भाजपा चुप नहीं बैठने वाली है। जब तक महिलाओं को उनका अधिकार नहीं दिला दिया जाता, भाजपा प्रयास करती रहेगी। प्रदेश के विधानसभा का एक दिवसीय सत्र बुलाया जाएगा, जिसमें नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर चर्चा होगी। प्रदेश के सभी नगर पालिका, नगर पंचायतों और नगर निगमों में नारी शक्ति वंदन अधिनियम को लागू करने के लिए प्रस्ताव पारित कराए जाएंगे।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने अधिनियम के विभिन्न बिंदुओं को बारीकी से सदन में स्पष्ट किया। प्रधानमंत्री जी ने तो बड़ा मन करके महिलाओं को आरक्षण दिलाने के लिए सभी विपक्षी दलों को खुला पत्र भी लिखा कि कोई राजनीतिक दल यह नहीं कह सके कि हमें नहीं बताया, हमसे नहीं पूछा। लेकिन जिस 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम पर वर्ष 2023 में विपक्षी दल समर्थन में थे, आज उसी का खुलेआम विरोध किया। अधिनियम का विरोध विपक्षी दलों की अलगाववादी मानसिकता को दिखाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने संसद में स्पष्ट किया कि वर्ष 1971 में देश की आबादी 54-55 करोड़ थी तो उस हिसाब से सीटें थीं। आज देश की आबादी करीब 140 करोड़ है तो उस हिसाब से लोकसभा की सीटें बढ़ेंगी। लेकिन विपक्षी दलों ने यह भ्रम फैलाने का प्रयास किया कि दक्षिण के राज्यों की सीटें कम हो जाएंगी। कांग्रेस, डीएमके व अन्य विपक्षी दलों ने यह झूठ फैलाकर अलगाववादी मानसिकता को प्रदर्शित किया है। महिलाओं को अधिकारों से वंचित करने के लिए कांग्रेस व विपक्षी दलों ने जिस प्रकार झूठ और भ्रम का सहारा लिया है, उसकी असलियत भाजपा जनता को बताएगी। भाजपा महिलाओं को देश की संसद और राज्यों की विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण मिलने तक चुप नहीं बैठेगी। भाजपा महिलाओं को उनका अधिकार दिलाकर रहेगी, क्योंकि भाजपा जो कहती है, उसे पूरा करके दिखाती है। ▪

# विपक्ष महिलाओं को अधिकार के खिलाफ - हेमंत खण्डेलवाल

- **महिला आरक्षण के विरोध से राहुल गांधी और कांग्रेस की महिला विरोधी मानसिकता उजागर हुई।**
- **प्रधानमंत्री जी महिलाओं को सशक्त बनाने 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम लेकर आए हैं।**
- **'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम के विरोध से विपक्ष का असली चेहरा जनता के सामने आ गया।**

कांग्रेस पार्टी और अन्य विपक्षी दल हमेशा से महिलाओं को अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे। 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम को लेकर लोकसभा में जो घटनाक्रम हुआ वह सिर्फ एक संसदीय परंपरा नहीं बल्कि देश की आधी आबादी से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय था। राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडी गठबंधन ने एक बार फिर साबित कर दिया कि उनकी मानसिकता महिला विरोधी है। 'नारी शक्ति वंदन' विधेयक का लोकसभा में पारित न हो पाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। यह विधेयक देश की माताओं-बहनों को सशक्त बनाने, उन्हें निर्णय प्रक्रिया में उचित भागीदारी दिलाने तथा नए भारत के निर्माण में उनकी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल थी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों ने अपनी संकीर्ण राजनीति और स्वार्थ के चलते इस महत्वपूर्ण विधेयक को गिराने का काम किया, जो स्पष्ट रूप से उनके महिला विरोधी चरित्र को उजागर करता है। यह पहली बार नहीं है जब कांग्रेस ने महिलाओं को अधिकार नहीं मिलने दिया। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के समय भी इसको लेकर प्रयास किए गए, तब भी कांग्रेस और विपक्षी दलों ने अड़ंगा लगा दिया था। कांग्रेस के शासनकाल में तो महिला आरक्षण को लेकर कोई प्रयास ही नहीं किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए लगातार योजनाएं बनाकर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार सदैव नारी सम्मान, सुरक्षा तथा सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केन्द्र एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए निरंतर ऐतिहासिक निर्णय ले रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नारी शक्ति को उसका पूर्ण अधिकार दिलाने के लिए भाजपा सरकारें संकल्पित हैं। ▪

# नारी शक्ति नीति निर्धारण का हिस्सा बने

- **हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम नारी शक्ति को कुछ दे रहे हैं, यह उनका अधिकार है।**
- **हमारे संसदीय लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी केवल संख्या की बात नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता है।**

राष्ट्र के जीवन में कुछ महत्वपूर्ण पल आते हैं और उस समय की समाज की मनोस्थिति और नेतृत्व की क्षमता, उस पल को कैप्चर करके एक राष्ट्र की अमानत बना देती है, एक मजबूत धरोहर तैयार कर देती है। आवश्यकता तो यह थी कि 25-30 साल पहले जब से यह विचार सामने आया, आवश्यकता महसूस हुई, हम इसको लागू कर देते और हम आज उसको काफी परिपक्वता तक पहुंचा देते हैं। और आवश्यकता के अनुसार उसमें समय-समय पर सुधार भी होते और यही तो लोकतंत्र की ब्यूटी होती है।

हम मदर ऑफ डेमोक्रेसी हैं। हमारी हजारों साल की लोकतंत्र की एक विकास यात्रा रही है, और उस विकास यात्रा में एक नया आयाम जोड़ने का एक शुभ अवसर मिला है।

हम भारतीय सब मिलकर के देश को नई दिशा देने जा रहे हैं। शासन व्यवस्था को संवेदनशीलता से भरने का एक सार्थक प्रयास करने के लिए जा रहे हैं, इस मंथन से जो अमृत निकलेगा, वह देश की राजनीति के रूप स्वरूप को तो तय करने ही करने वाला है, लेकिन यह देश की दिशा और दशा भी तय करने वाला है।

21वीं सदी में भारत एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्व में भारत की स्वीकृति हम सब महसूस कर रहे हैं और यह हम सबके लिए गौरव का पल है। इस समय को हमने एक विकसित भारत के संकल्प के साथ जोड़ा है। विकसित भारत, जिसके नीति निर्धारण में सबका साथ- सबका विकास का मंत्र समाहित हो। देश की 50 प्रतिशत जनसंख्या नीति निर्धारण का हिस्सा बने, यह समय की मांग है। देश में जब से वूमेन रिजर्वेशन को लेकर चर्चा हुई है और उसके बाद जब-जब चुनाव आया है, हर चुनाव में महिलाओं को मिलने वाले इस अधिकार का जिस-जिस ने विरोध किया है, देश की महिलाओं ने उन्हें माफ नहीं किया है। उनका हाल बुरे से बुरा किया है।

जो भी राजनीतिक जीवन में सफलतापूर्वक आगे बढ़ना चाहते हैं, उनको यह मानकर चलना पड़ेगा कि पिछले 25-30 साल में लाखों बहनें ग्रास रूट लेवल पर लीडर बन चुकी हैं। अब उनके अंदर सिर्फ यहां 33 प्रतिशत का नहीं,

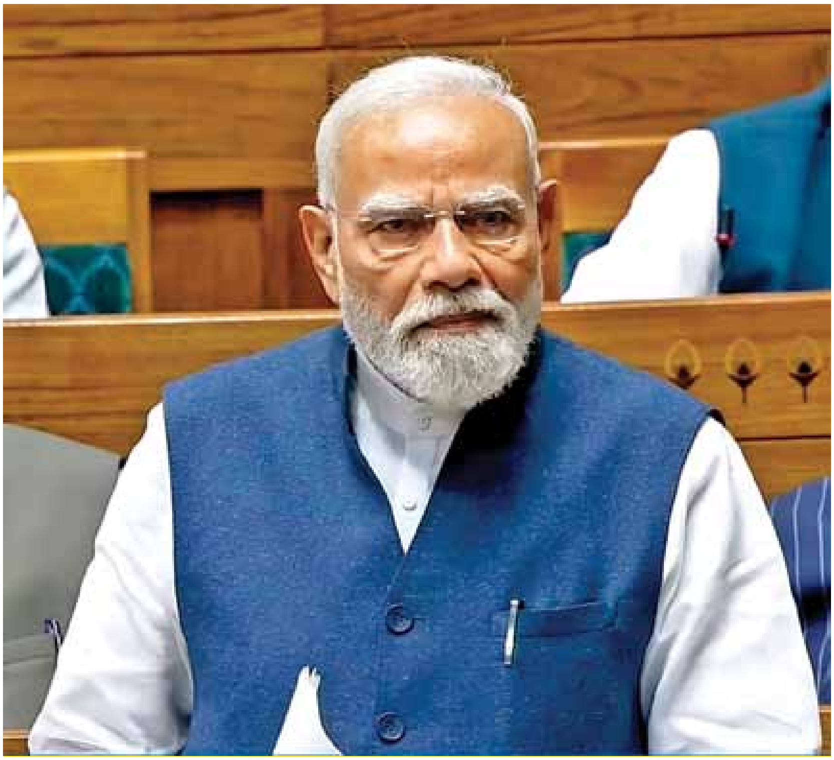

यह हमारी नारी शक्ति को सशक्त बनाने का एक ऐतिहासिक अवसर है।

निर्णय लेने की प्रक्रिया में नारी शक्ति को सम्मिलित करना एक विकसित भारत के निर्माण की कुंजी है।

अधिक से अधिक महिलाएं जमीनी स्तर पर नेतृत्व कर रही हैं।

वहां भी वह आपके फैसलों को प्रभावित करने वाली हैं और इसलिए जो आज विरोध करेंगे उसको लंबे समय तक कीमत चुकानी पड़ेगी। और इसलिए राजनीतिक समझदारी भी इसी में है कि हम ग्रास रूट लेवल पर महिलाओं की जो पॉलिटिकल लीडरशिप खड़ी हुई है, उसको आपने अब कंसीडर करना पड़ेगा।

देश की बहनों पर भरोसा करो, उनकी समझदारी पर भरोसा करो, एक बार 33 प्रतिशत बहनों को यहां आने दो, आकर के उनको निर्णय करने दो, किसको देना है, किसको नहीं देना है, इस वर्ग को देना है, उस वर्ग को देना है, करेंगे वह निर्णय, हम उनके सामर्थ्य पर आशंका क्यों करते हैं? एक बार आने तो दो!

मेरा दायित्व समाज के सबको साथ लेकर के चलने का है और यही मेरे संविधान ने मुझे यही रास्ता दिखाया है। संविधान ही सर्वोपरि है।

आज जीवन के हर एक क्षेत्र में हम देखें कि नारी शक्ति देश के गौरव को बढ़ाने वाले, परचम लहराने में कहीं पीछे नहीं हैं। हम गर्व कर सकें, इस प्रकार से जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में आज हमारी माताएं-बहनें बहुत बड़ा योगदान, हमारी बेटियां तो कमाल कर रही हैं, जीवन के हर क्षेत्र में! इतना बड़ा सामर्थ्य, उसको हम हिस्सेदारी से रोकने के लिए क्यों इतनी ताकत खपा रहे हैं, उनके जुड़ने से सामर्थ्य बढ़ने वाला है। यह राष्ट्रहित का निर्णय है।

पूरा देश और विशेष करके नारी शक्ति, हमारे निर्णय तो देखेंगी, लेकिन निर्णय से ज्यादा हमारी नीयत को देखेगी। और इसलिए हमारी नीयत की खोट, देश की नारी शक्ति कभी माफ नहीं करेगी।

2023 में सर्वसम्मति से इस अधिनियम को स्वीकार किया था। अब सवाल यह है कि हमें कितने समय तक इसको रोकना है, लेकिन पिछले दिनों जब हम 2023 में चर्चा कर रहे थे, तब भी व्यापक रूप से बात यह थी कि इसको जल्दी करो, हर कोई कह रहा था जल्दी करो। अब 24 में संभव नहीं था क्योंकि इतने कम समय में यह करना मुश्किल था। अब 29 में हमारे पास अवसर है, अगर हम उन 29 में भी नहीं करते, तो स्थिति क्या बनेगी, हम कल्पना कर सकते हैं, तो फिर हम देश की माताओं-बहनों को यह विश्वास नहीं बना पाएंगे कि हम सचमुच में यह प्रयास सच्चे अर्थ से कर सकते हैं। और इसलिए समय की मांग है कि अब हम ज्यादा विलंब ना करें, इस दरमियान राजनीतिक दल के लोगों से, संविधान के जानकार लोगों से, जो महिलाओं में एक्टिविस्ट के नाते काम करने वाले, ऐसे लोगों से भी कई चर्चाएं हुई, कुछ लोगों ने खुद होकर के भी सुझाव दिए। सारा मंथन करते-करते यहां भी सभी दलों से लगातार बातें करके होती रही हैं। स्ट्रक्चरल वे में भी हुई है, इनफॉर्मल वे में भी हुई है और उसमें से आखिर बनाए हुए यह कुछ रास्ता निकालना होगा, ताकि हम हमारी माताओं-बहनों की शक्ति को जोड़ सकते हैं।

संविधान ने देश को टुकड़ों में सोचने का अधिकार ही नहीं दिया है। हम सबको एक राष्ट्र के रूप में विचार करना हमारा दायित्व बनता है। चाहे कश्मीर हो या कन्याकुमारी, हम टुकड़ों में ना सोच सकते हैं, ना टुकड़ों में हम निर्णय कर सकते हैं। और इसलिए निराधार रूप में, जिसमें कोई सच्चाई नहीं, रत्ती भर सच्चाई नहीं, सिर्फ राजनीतिक लाभ लेने के लिए जो बवंडर खड़ा किया जा रहा है, दक्षिण हो, उत्तर हो, पूरब हो, पश्चिम हो, छोटे राज्य हो, बड़े राज्य हो, निर्णय प्रक्रिया किसी के साथ भी भेदभाव नहीं करेगी, निर्णय प्रक्रिया किसी के साथ अन्याय नहीं करेगी, भूतकाल में जो सरकारें रहीं और जिनके कालखंड में जो परिसीमन हुआ और जो अनुपात उस समय से चला आ रहा है, तो उस अनुपात में भी कोई बदलाव नहीं होगा और वृद्धि भी उसी अनुपात पर होगी।

हम इस भ्रम में ना रहें कि हम देश की नारी शक्ति को हम कुछ दे रहे हैं, जी नहीं। उसका हक है, हमने कई दशकों से उसको रोका हुआ है, उसका प्रायश्चित करके हमें उस पाप में से मुक्ति पाने का यह अवसर है। भांति-भांति के बहानेबाजी, भांति-भांति टेक्निकल मुद्दों के आधार पर चीजों को उलझा करके तीन दशक तक इसको अड़ंगे डालें हमने फंसा-फंसा कर रखा।

संसदीय लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी यह सिर्फ आंकड़ों का खेल या एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में सुधार, इतना सीमित नहीं है। लोकतंत्र की जननी के रूप में, मदर ऑफ डेमोक्रेसी के रूप में यह निर्णय भारत का कमिटमेंट है, यह सांस्कृतिक कमिटमेंट है और इसी कमिटमेंट के कारण पंचायतों में यह व्यवस्था बनी और अब तो 20 से अधिक राज्यों में 50 प्रतिशत हुआ है संवेदनशीलता के साथ समस्याओं के समाधान में उनका कमिटमेंट बहुत ही परिणामकारी रहते थे, विकास की यात्रा को गति देने में रहते थे, इस सदन में उनकी आवाज नई शक्ति बनेगी, नई सोच जुड़ेगी, देश की दिशा में एक संवेदनशीलता जुड़ेगी, तथ्य और तर्क के आधारों पर अनुभव जब जुड़ता है, उसका सामर्थ्य अनेक गुना बढ़ जाता है और सदन कितना समृद्ध होता है।

हमारे देश में अनुभवी नारी शक्ति की कोई कमी नहीं है, सामर्थ्यवान में कोई कमी नहीं है, हम भरोसा करें, वह कंट्रीब्यूट करेंगी, बहुत अच्छा कंट्रीब्यूट करेंगी और आज भी जितनी बहनों को अवसर मिला है, उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से अपनी बात बताई है, सदन को समृद्ध किया है।

आज देश में वर्तमान में, देश में 650 से ज्यादा डिस्ट्रिक्ट पंचायत हैं, करीब पौने तीन सौ महिलाएं उसका नेतृत्व कर रही हैं और केंद्र के कैबिनेट मिनिस्टर से ज्यादा उनके पास जिम्मेदारी और धन और व्यवस्था होती है, काम करती हैं। करीब 6700 ब्लॉक पंचायतों में 2700 से अधिक ब्लॉक पंचायत ऐसी हैं, जिसका नेतृत्व महिलाओं के हाथ में है। आज देश में 900 से अधिक शहरों में अर्बन लोकल बॉडीज की हेड के रूप में मेयर्स हों या स्टैंडिंग कमेटी का काम देखने वाली बहनें हैं, उनकी ताकत है। और मैं मानता हूं कि आज देश जो प्रगति कर रहा है, उस प्रगति में इनका भी महत्वपूर्ण योगदान है, उस ऋण को हमें स्वीकार करने का यह अवसर है। और जब यह अनुभव सदन के साथ जुड़ेगा, तब वह अनेक गुना ताकत बढ़ा देगा।

एक लंबी प्रतीक्षा यानी एक प्रकार से हम सबके लिए यह सवालिया निशान पैदा हो, ऐसी परिस्थिति हम ही लोगों ने पैदा की है। यह अवसर है कि हम पुरानी जो कुछ भी मर्यादा रही होंगी, मुश्किलें रही होंगी, उससे बाहर निकले, हिम्मत के साथ हम आगे बढ़े और नारी शक्ति का राष्ट्र के विकास में उनकी सहभागिता को हम सुनिश्चित करें।

इतने बड़े देश का आधा जिम्मा जो उठा रहे हैं, उनका भी कोई हक बनता है यहां आने का, हमें रोकना नहीं चाहिए। और दूसरा संख्या के संबंध में भी एक मत पहले से बनता आया था, पहले जो संख्या थी 33 प्रतिशत और बढ़ा दो, ताकि किसी को ऐसा ना लगे कि मेरा हक चला गया। एक नई शक्ति जुड़ेगी, अतिरिक्त शक्ति जुड़ेगी। ■

# नारीशक्ति ने असीमित योगदान दिया है

देश की विकास यात्रा के इन अहम पड़ावों के बीच भारत 21वीं सदी के सबसे बड़े निर्णयों में से एक निर्णय लेने जा रहा है। ये निर्णय नारीशक्ति को समर्पित है, नारीशक्ति वंदन को समर्पित है। एक ऐसा नया इतिहास जो अतीत की संकल्पनाओं को साकार करेगा, जो भविष्य के संकल्पों को पूरा करेगा। एक ऐसे भारत का संकल्प जो समता मूलक हो, जहां सामाजिक न्याय केवल एक नारा न हो, लेकिन हमारी कार्य संस्कृति का, हमारे work culture का, हमारी निर्णय प्रक्रिया का, स्वाभाविक हिस्सा हो।

राज्यों की विधानसभाओं से लेकर देश की संसद तक, दशकों की प्रतिक्षा के अंत का समय है। 2023 में नई संसद में जो नया भवन निर्माण हुआ, उसमें हमने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के रूप में प्रथम कदम उठाया था। वह समय से लागू हो सके, महिलाओं की भागीदारी हमारे लोकतंत्र को मजबूती दे।

लोकतांत्रिक संरचना में महिलाओं को आरक्षण देने की जरूरत दशकों से हर कोई महसूस कर रहा था, चर्चा भी होती थी। इस विमर्श को करीब-करीब 4 दशक बीत गए, 40 साल बीत गए। इसमें सभी पार्टियों के और कितनी ही पीढ़ियों के प्रयास शामिल हैं। हर दल ने इस विचार को अपने-अपने ढंग से आगे बढ़ाया है। 2023 में जब नारी शक्ति वंदन अधिनियम आया था, तब भी सभी दलों ने सर्वसम्मति से इसे पास कराया था। और तब एक सुर में ये बात भी उठी थी कि इसे हर हाल में 2029 तक लागू हो जाना चाहिए। ये बात सबने कही थी, कानून पारित हो लेकिन लागू न हो, ये सदन में किसी को मंजूर नहीं था, और खासकर के हमारे विपक्ष के सभी साथियों ने मुखर होकर के इस बात पर जोर डाला था कि 2029 में ये लागू होना चाहिए। 2029 की समय सीमा को ध्यान में

हमारे देश में पंचायती राज संस्थाएं महिला नेतृत्व का उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

आज महिलाएं उन सेक्टरों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं जिन्हें कभी पुरुष प्रधान माना जाता था।

**सरकार जीवन के हर स्तर पर महिलाओं की सहायता कर रही है।**

**भारत की नारीशक्ति ने अपनी कड़ी मेहनत, साहस और आत्मविश्वास से नई ऊंचाइयां हासिल की हैं, अब हमें उन्हें और सशक्त बनाने के लिए एकजुट होना होगा।**

रखते हुए, सरकार ने, क्योंकि विपक्ष ने जो बात रखी थी, हमारे लिए वो बात भी गंभीर होती है और इसलिए हम लगातार विचार-विमर्श करते रहे, मंथन करते रहे, नए-नए रास्ते खोजते रहे, संविधान की जिनको ज्यादा अध्ययन है, ऐसे लोगों की भी सलाह ली।

विधानसभा और लोकसभा पहुँचने के सपनों को नए पंख मिलने जा रहे हैं। देश में एक सकारात्मक माहौल बना है।

आजादी की लड़ाई से लेकर संविधान सभा के निर्णयों तक, स्वतंत्र भारत की नींव रखने में भारत की नारीशक्ति ने असीमित योगदान दिया है, इतिहास गवाह है। और आजादी के बाद भी जिन महिलाओं को प्रतिनिधित्व का मौका मिला, उन्होंने देश के लिए बहुत शानदार काम किया है। हमारे देश में राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री तक, महिलाएं जहां भी रहीं हैं, उन्होंने अपनी अलग लेगसी बनाई है। इस समय भी हमारे देश में राष्ट्रपति जी से लेकर वित्त मंत्री तक, ऐसे अहम पद महिलाएं ही संभाल रहीं हैं। उन्होंने देश की गरिमा और गौरव, दोनों को बढ़ाया है।

हमारे देश में महिला नेतृत्व का एक बेहतरीन उदाहरण पंचायती राज संस्थाएं भी हैं। आज भारत में 14 लाख से अधिक महिलाएं लोकल गवर्नमेंट बॉडीज में सफलतापूर्वक काम कर रही हैं। लगभग 21 राज्यों में तो पंचायतों में उनकी भागीदारी करीब-करीब 50 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है।

ये कोई साधारण बात नहीं है। लाखों महिलाओं की राजनीति और सामाजिक जीवन में ये सक्रियता, दुनिया के बड़े-बड़े नेताओं और राजनीतिक विशेषज्ञों को भी बहुत ही हैरान करने वाली बात होती है। और इससे पूरे भारत का बहुत गौरव बढ़ता है।

अनेक अध्ययनों में ये सामने आया है कि जब निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी, तो इससे व्यवस्थाओं में भी संवेदनशीलता आई है। और ये बहुत बड़ी ताकत होती है, और इसका परिणाम है पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, ऐसे कई विषयों पर ज्यादा समर्पण भाव से, ज्यादा संवेदनशीलता से, परिणामकारी काम हुए हैं। जल जीवन मिशन, उसकी सबसे बड़ी सफलता का उदाहरण है, इसमें पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी की ही बहुत बड़ी भूमिका है।

लोकल बॉडीज और संस्थानों में इतने वर्षों से जो लाखों महिलाएं काम कर रहीं हैं, नेतृत्व कर रही हैं, उनके पास ग्रासरूट लेवल का बहुत समृद्ध और लंबा अनुभव है। वो अब और बड़ी भूमिका के लिए तैयार हैं और तत्पर भी हैं।

नारीशक्ति वंदन अधिनियम को लागू करना, महिलाओं के जीवन का बहुत बड़ा अवसर बनने जा रहा है। अब पंचायत से आगे बढ़कर पार्लियामेंट पहुंचने का उनका सफर और आसान होने जा रहा है।

आज विकसित भारत की हमारी यात्रा में महिलाओं की भूमिका और भी अहम हो गई है।

भारत में महिलाओं को सशक्त करने के लिए उनकी आर्थिक भागीदारी को बढ़ाना आवश्यक है। इसलिए हमने अपनी सरकार के हर निर्णय में, हर योजना में इस पहलू का ध्यान रखा है।

Women led development के विजन की बहुत बड़ी सफलता ये है कि इसने महिलाओं के प्रति पुरानी सोच को चुनौती दी है। इस सोच का परिणाम है कि, आज महिलाएं उन सेक्टर्स में भी बुलंदियों को छू रहीं हैं जहां कभी पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था।

जीवन के हर पड़ाव, हर चिंता, सुख-दुख, हर अवसर पर, हर परिस्थिति में ध्यान देते हुए, हमारी सरकार ने अनेक छोटे-बड़े कदमों से महिलाओं को सशक्त किया है। इसी का परिणाम है, देश अब अपने लोकतंत्र को नई बुलंदी पर लेकर जाने के लिए तैयार है।

देश की नारीशक्ति ने अपने परिश्रम, साहस और आत्मविश्वास से नई ऊंचाइयों को छुआ है। अब हमें मिलकर इस शक्ति को नई ऊर्जा देनी है, उसके लिए अवसरों का विस्तार करना है। देश उनकी आकांक्षाओं को समझता है, और उनके सपनों को साकार करने के लिए हर आवश्यक कदम उठा रहा है।

नारी शक्ति के पास उनके अधिकार होंगे, और वो निर्णय प्रक्रिया में पूरी तरह भागीदार भी बनेंगी। यही हमारे उज्ज्वल भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी है। ▪

# कौरव कौन, कौन पाण्डव

अटल बिहारी वाजपेयी

कौरव कौन
कौन पाण्डव,
टेढ़ा सवाल है।
दोनों ओर शकुनि
का फैला
कूट जाल है।
धर्मराज ने छोड़ी नहीं
जुए की लत है।
हर पंचायत में
पांचाली
अपमानित है।
बिना कृष्ण के
आज
महाभारत होना है,
कोई राजा बने,
रंक को तो रोना है।

# "राष्ट्र प्रथम"

भाजपा की स्थापना 1980 में हुई, लेकिन यह कहा जा सकता है कि जनसंघ काल से जिस विचार और जिस राष्ट्रवाद को लेकर हमारे वरिष्ठ नेताओं ने काम किया, वह आज भी हमारे लिए प्रेरणा का विषय है। इसी कारण भाजपा इस स्वरूप में दिख रही है, जिसमें लाखों कार्यकर्ताओं का योगदान है, जिन्होंने पार्टी की अब तक की सफल यात्रा को यहां तक पहुंचाया है।

यह केवल संगठन का स्थापना दिवस नहीं है, बल्कि उस विचारधारा का उत्सव है, जिसमें डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का प्रखर राष्ट्रवाद, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय का दर्शन और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की सुशासन की राजनीति समाहित है। इसी वैचारिक विरासत को आत्मसात करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'विकसित भारत' का जो विजन दिया है, वह आज 140 करोड़ देशवासियों का साझा संकल्प बन चुका है। भाजपा के लिए राजनीति सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रनीति का मार्ग है। पार्टी की यह यात्रा आसान नहीं रही है और हजारों कार्यकर्ताओं ने संघर्ष, अमानवीय यातनाएं और बलिदान देकर संगठन को इस मुकाम तक पहुंचाया है।

'राष्ट्र प्रथम' की विचारधारा के साथ भाजपा निरंतर आगे बढ़ रही है और आज 14 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन चुकी है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों के अटूट विश्वास का प्रतीक है। हमें अपने पथ प्रदर्शकों और संस्थापकों के सपनों को साकार करने तथा आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'विकसित भारत' के संकल्प को सिद्ध करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को समर्पित भाव से संगठन को और अधिक सशक्त बनाने में जुटना होगा। पार्टी का लक्ष्य अभी दूर है और इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए हर कार्यकर्ता को अपना पूरा योगदान देना होगा। प्रत्येक बूथ को 'अपराजेय बूथ' में बदलना होगा और इसी दिशा में कार्य करते हुए संगठन को मजबूत करना होगा। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, 'बाधाएं आती हैं आएं, प्रलय की घोर घटाएं घिरें, पांवों के नीचे अंगारे, सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं, निज हाथों में हंसते-हंसते, आग लगाकर जलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा।' 'नेशन फर्स्ट, पार्टी नेक्स्ट, सेल्फ लास्ट' भाजपा के मूल संस्कार हैं, इसी भावना के साथ समर्पित भाव से आगे बढ़ते हुए सभी कार्यकर्ताओं को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने और संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए कार्य करना होगा।

'राष्ट्र प्रथम' की विचारधारा के साथ भाजपा निरंतर आगे बढ़ रही है और आज 14 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन चुकी है।

यदि 1980 के उस सफर को देखा जाए, तो कई कालखंड आए और अनेक विषय सामने आए, लेकिन जब स्वर्गीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी, स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के उस कालखंड को याद किया जाता है, तो यह स्पष्ट होता है कि आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी राष्ट्रवाद, अंत्योदय और सुशासन के उस गवर्नेंस मॉडल को आत्मसात कर उसे आगे बढ़ा रहे हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लगातार इन तीनों विषयों को साथ लेकर आगे बढ़ने का कार्य किया है। और जब माननीय प्रधानमंत्री जी 2047 के विकसित भारत के सपने की बात करते हैं तो यह लगता है कि विकास का जो विषय उन्होंने सबके सामने रखा है, वह आज 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प बनता जा रहा है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने लंबे समय तक राज्यों में संघर्ष किया। 1984 के परिणामों में भाजपा केवल दो सीटों पर विजयी हुई थी। फिर भी उस समय भाजपा कार्यकर्ता और नेता न थके, न डरे और न झुके। उन्होंने एक दृढ़ संकल्प लिया और यही कारण है कि दो सीटों के बावजूद हमारे नेताओं ने पार्टी को आगे बढ़ाने का मार्ग तैयार किया। आज भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। त्याग, तपस्या और समर्पण के भाव से हमारे नेताओं और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने काम किया। यदि हम उस कालखंड की घटनाओं को स्मरण करें, तो यह स्पष्ट होता है कि कार्यकर्ताओं के संघर्ष के दौरान पोस्टर लगाना, दीवार लेखन करना, रिक्शे से यात्रा करना और ट्रेन से प्रवास करना आम बात थी। श्रद्धेय अटल जी भी रिक्शा से यात्रा करके विभिन्न स्थानों तक

पहुंचते थे, लालकृष्ण आडवाणी जी भी ऐसे ही यात्रा करते थे। मुरली मनोहर जोशी जी का बिहार आना-जाना होता था, राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के बावजूद भी वह बिना किसी कार्यक्रम के अक्सर लोगों के घरों पर जाते और उनसे मिलते थे। यही भाव कार्यकर्ताओं को जोड़ने का काम करता था। हमें उनके इस भाव को आज स्मरण करना चाहिए।

केरल और पश्चिम बंगाल प्रवास में मैं केरल में उन कार्यकर्ता परिवारों से मिला, जिनमें किसी ने अपने पति को खोया, किसी ने अपने बेटे को खोया और किसी ने अपने भाई को खोया है। बंगाल में भी उन कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिला, जिन कार्यकर्ताओं ने राजनीतिक रंजिश के कारण अपने परिवार के सदस्यों को खोया है, अपमान झेला है, लेकिन उसके बावजूद उनका संकल्प अडिग है, आज भी उनका समर्पण भाजपा के साथ है। हर कार्यकर्ता को अपने जीवन में अपने समय का पुरुषार्थ करना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है, तब जाकर एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित होता है। हमें जो सत्ता मिली है वह इस देश की सेवा करने के लिए मिली है। हमें जो सत्ता मिली है वह भविष्य में भारत को और विकसित भारत बनाने के लिए मिली है। यदि हम 2047 के विकसित भारत के सपने को साकार करना चाहते हैं तो हमें भाजपा को भी 2047 में उसी वटवृक्ष की तरह और बड़ा करना पड़ेगा, तभी यह सपना साकार हो सकता है। हमने देखा है कि जिन राज्यों में भाजपा सरकार में आती है, वहां काम होता है। किन्तु यदि किसी कारणवश सत्ता वहां से चली जाती है तो विकास की बातें बंद हो जाती हैं और विनाश व भ्रष्टाचार शुरू हो जाता है। अब अस्थिर होकर बैठने का समय नहीं है। हमें अभी और संघर्ष करना है। आज की पीढ़ी के कार्यकर्ताओं को हमारा इतिहास स्मरण करने की आवश्यकता है और साथ ही अपने भीतर भविष्य के लिए संघर्ष का संकल्प लाने की आवश्यकता है।

सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को यह संकल्प लेना होगा कि हम ही भाजपा हैं, हम ही इसकी पहचान बढ़ाएंगे और हम ही इसके भविष्य को सुनहरा बनाएंगे। हमें अपने अंदर भाजपा को आत्मसात करना होगा, क्योंकि कई बार अपने कार्यों के दौरान हम उन वीर कार्यकर्ताओं के संघर्ष और समर्पण को भूल जाते हैं। हमारे लाखों-करोड़ों गुमनाम कार्यकर्ताओं ने संघर्ष किया, जिन्हें कोई पद या पहचान नहीं मिली, फिर भी उन्होंने संघर्ष किया क्योंकि उन्हें मालूम था कि एक दिन अंधेरा छटेगा और कमल खिलेगा। जब लोग 'बारी-बारी सबकी बारी, अबकी बारी अटल बिहारी' के नारे लगाते थे, तब वे नारे अटल जी के चेहरे को देखकर नहीं, बल्कि केवल इस विश्वास के साथ लगाए जाते थे कि एक दिन उनके अपने प्रधानमंत्री बनेंगे। भाजपा ने एक वोट की खातिर सरकार गिराना मंजूर किया, पर अपनी कार्यप्रणाली और कार्य पद्धति से कोई समझौता नहीं किया। अटल जी का वह भाषण भी हमने संसद में कई बार सुना है और उस भाषण को सुनने से हमारा संकल्प और मजबूत होता है। जब उन्होंने संसद में भाषण दिया, तब उनके मन में कहीं भी यह भाव नहीं दिखा कि उनकी सरकार जा रही है। हमारी पीढ़ी के कार्यकर्ताओं को यह देखना चाहिए कि एक व्यक्ति, सर्वोच्च पद पर बैठने के बावजूद भी, पद जाने पर उनके चेहरे पर किसी प्रकार का मलाल नहीं था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जिस प्रकार से लोगों के विश्वास के साथ जुड़ रहे हैं, वह प्रेरणादायक है। हाल ही में असम में जब वे चाय बागान के लोगों से मिल रहे थे, तब ऐसा लगा कि कोई व्यक्ति किस प्रकार एक परिवार के सदस्य के रूप में घुल-मिलकर संवाद कर सकता है। हमारी पीढ़ी के कार्यकर्ताओं और नेताओं को निश्चित रूप से आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस भाव को समझना होगा।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष, नाकामी मिलने पर निराश हो जाते हैं और अपने ही देश तथा अपने ही राज्य के लोगों को अपमानित करने लगते हैं। इसके विपरीत, भाजपा हार से थकती नहीं है और न ही झुकती है। यदि हार होती भी है, तो वह उसे संकल्प, नई सोच और नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ने का अवसर मानती है। लोगों में यह विश्वास बना है कि भाजपा जो कहती है, वह करती है। जब इस देश में लोग पूछते थे कि मंदिर कब बनेगा तब मैं कहता था कि 'राम लल्ला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे।' उस समय दुनिया हमसे प्रश्न करती थी, लेकिन हमारे भीतर विश्वास, संकल्प और करोड़ों कार्यकर्ताओं की आस्था थी। यही कारण है कि हमारा संकल्प सिद्ध हुआ और आज करोड़ों हिंदुओं की भावना का प्रतीक अयोध्या का पवित्र राम मंदिर निर्मित हुआ।

2011 में राष्ट्रीय एकता यात्रा के माध्यम से मुझे कश्मीर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहां देखा कि कश्मीर के लाल चौक पर पाकिस्तान का झंडा लहरा रहा था, जबकि दिल्ली और जम्मू-कश्मीर में बैठी सरकार मौन थी। उस समय हमने कभी कल्पना नहीं की थी, लेकिन जब मैं स्वयं वहां गया तो मुझे 'स्टोन पेल्टिंग' शब्द का प्रयोग और उसका अनुभव देखने को मिला। आज वही लाल चौक जब तिरंगे से लहराता हुआ नजर आता है, तो हमारे अंदर गहरी आत्म संतुष्टि और गर्व का भाव उत्पन्न होता है। हमें यह गर्व अपने नेतृत्वकर्ता और अपनी पार्टी के हजारों-लाखों कार्यकर्ताओं पर है, जिन्होंने संघर्ष करते हुए कश्मीर को सही रूप में असली आजादी दिलाई है। आज संकल्प से सिद्धि का जो दौर चल रहा है, वह केवल एक पड़ाव है और अभी बहुत लंबा सफर तय करना बाकी है। भाजपा हमेशा कहती है कि देश को परम वैभव पर ले जाना है और यदि इस कल्पना को साकार करना है तो इस पीढ़ी को भी पूरे संघर्ष और समर्पण भाव से कार्य करना होगा। श्रद्धेय अटल जी ने कहा था कि ''अंधेरा छटेगा, कमल खिलेगा।'' आज कमल अवश्य खिला है, लेकिन उसे देश के विकास के लिए पूरी तरह स्थापित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए सभी को पूर्ण प्रयास और मेहनत करनी होगी।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं और उसकी सफलताओं को जनता के बीच ले जाना आवश्यक है। इस अमृतकाल में सभी ऐसे संकल्प के साथ आगे बढ़ें, जिसमें देश को 2047 तक विकसित बनाने का सपना शामिल हो। साथ ही, भाजपा का यह सपना कि पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक भगवा लहराए, तभी साकार होगा जब निरंतर इसी प्रकार की सफलताओं के साथ आगे बढ़ा जाएगा। एक बड़ा प्रयास डिजिटल प्रशिक्षण अभियान के रूप में शुरू हुआ है, भाजपा के कार्यकर्ताओं के लिए शुरू किए गए इस प्रशिक्षण अभियान में संख्या के साथ-साथ गुणवत्ता बढ़ाने का भी संकल्प लिया गया है। यही कारण है कि यह अभियान जहां भौतिक रूप से भी बड़े पैमाने पर मंडलों में चलाया जा रहा है और अभी तक लगभग 80 प्रतिशत से अधिक मंडलों में पूरा हो चुका है, आने वाले समय में यह जिलों और फिर प्रदेश स्तर तक भी पहुंचेगा। पार्टी के लगभग 14 करोड़ कार्यकर्ताओं के लिए भी एक डोमेन लाया गया है। इस डिजिटल प्रशिक्षण अभियान के माध्यम से भाजपा को जानने और समझने का अवसर मिलेगा तथा इसके जरिए पार्टी को और निचले स्तर तक तथा सामान्य लोगों तक पहुंचाने में सफलता मिलेगी।

सभी को यह संकल्प फिर से लेना है कि यदि भारत को 'विकसित' बनाना है, तो भाजपा को भी उसी प्रकार से मजबूत और सशक्त बनाना होगा। ■

# भाजपा गुड गवर्नेंस और लास्ट माइल डिलीवरी का सिंबल

- **हमने नारी शक्ति वंदन एक्ट लाकर अपनी प्रतिबद्धता पूरी कर ली है और इसे 2029 के चुनावों में लागू करने का लक्ष्य रखा है।**
- **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदर्शों से प्रेरित होकर, भाजपा ने "स्वच्छ और मूल्य-आधारित शासन" की प्रतिबद्धता के साथ राजनीति में प्रवेश किया।**
- **भारत अपने जलवायु लक्ष्यों को समय से पहले हासिल कर रहा है और उसने अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता, विशेष रूप से सौर ऊर्जा में, उल्लेखनीय वृद्धि की है।**

आज बीजेपी जिस शिखर पर है, उसकी चमक सबको दिखती है। लेकिन, यहाँ तक पहुँचने के लिए लाखों कार्यकर्ताओं का जो श्रम है, उन्होंने जो तप, त्याग और तितिक्षा की पराकाष्ठा की है...उसे वही जान सकता है... जो इस पार्टी के संकल्पों के लिए समर्पित होकर स्वयं इस साधना का हिस्सा रहा है।

भारतीय जनता पार्टी एक मात्र ऐसा राजनैतिक दल है, जहां हम पार्टी को अपनी मां मानते हैं। इसलिए, पार्टी का स्थापना दिवस हमारे लिए ये केवल एक राजनीतिक आयोजन नहीं होता। ये हम सब कार्यकर्ताओं के लिए एक भावुक अवसर होता है। ये दिन हमें पार्टी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का मौका देता है कि पार्टी ने हमें राष्ट्र सेवा का सौभाग्य दिया।

इस समय पाँच राज्यों में चुनाव है। वहां भी पार्टी में...एक नई ऊर्जा देख रहा हूं...कार्यशैली में नयापन देख रहा हूं।

आज बीजेपी जिस शिखर पर है, उसकी चमक सबको दिखती है। लेकिन, यहाँ तक पहुँचने के लिए लाखों कार्यकर्ताओं का जो श्रम है, उन्होंने जो तप, त्याग और तितिक्षा की पराकाष्ठा की है...उसे वही जान सकता है...जो इस पार्टी के संकल्पों के लिए समर्पित होकर स्वयं इस साधना का हिस्सा रहा है। एक वो भी दौर था...भाजपा के पास किसी कोने में दूर-दूर तक सत्ता का नामोनिशान नहीं था। न कोई संसाधन और न ही कोई सुविधा थी! उस समय भाजपा कार्यकर्ता के लिए कहा जाता था कि उसका एक पैर रेल में और दूसरा जेल में होता है। जनता के साथ जुड़ने के लिए भाजपा कार्यकर्ता रेल से एक शहर से दूसरे शहर भागता रहता था, दौड़ता रहता था...और जनता से जुड़े मुद्दे उठाने के लिए जेल जाने में भी संकोच नहीं करता था। उस कठिन समय में भी भाजपा के कार्यकर्ताओं के पास... सबसे बड़ी चीज थी- आने वाले भविष्य पर भरोसा। उनका दृढ़ विश्वास था कि वो आज जो मेहनत कर रहे हैं... उससे आने वाले भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा। और इस भरोसे के लिए भाजपा के कार्यकर्ताओं ने क्या-क्या नहीं सहा! आपातकाल, इमर्जेंसी का घनघोर दमन...काँग्रेस के षड्यंत्र....राजनीतिक रूप से अछूत हमें बनाने की लगातार कोशिशें...इन सबसे लड़कर हमारे निःस्वार्थ कार्यकर्ता पार्टी को अपने परिश्रम से, अपनी साधना से, अपने संकल्प से यहाँ तक लेकर आए हैं। और इस यात्रा में हमारे कितने ही कार्यकर्ताओं को अपनी जान तक गंवानी पड़ी है! हमने बंगाल और केरलम जैसे राज्यों में देखा है...वहाँ किस तरह हिंसा को पॉलिटिकल कल्चर बना दिया गया है। लेकिन भाजपा कार्यकर्ता, ऐसे हालातों में

भी डिगा नहीं...डरा नहीं। आज भी भाजपा का कार्यकर्ता देशसेवा के भाव के साथ निरंतर काम कर रहा है।

आज लोकतन्त्र की कितनी ही उपलब्धियां बीजेपी के नाम पर हैं। देश में लंबे अंतराल के बाद किसी पार्टी को इतना स्पष्ट जनमत मिला है। लेकिन हम इस सफलता की विवेचना करें...तो हमें नीयत...नीति ...निष्ठा...की एक लंबी यात्रा हम भली-भांति देख सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विशाल और पवित्र वटवृक्ष के नीचे...हमें साफ नीयत के साथ... शुचिता के साथ राजनीति में कदम रखने की प्रेरणा मिली। फिर शुरुआत के कुछ दशकों में, चाहे वो जनसंघ का समय रहा हो या भाजपा का, हमने एक संगठन के लिए नीतियां निर्धारित करने में अपनी ऊर्जा लगाई। फिर उसके बाद जो समय आया...उसमें भाजपा ने पूरी निष्ठा से अपनी ताकत खुद को एक सशक्त काडर बेस्ड पार्टी बनाने में झोंक दी। हमने कार्यकर्ताओं का एक ऐसा विशाल काडर खड़ा किया...जिनमें सेवा भावना से कार्य करने का समर्पण था। जिन्होंने पार्टी के सिद्धांतों को अपने जीवन का आदर्श बनाया...और, जिन्होंने...किसी भी परिस्थिति में अपने मूल्यों से समझौता स्वीकार नहीं किया।

हम एक ओर अपने मूल्यों पर अडिग रहे... वहीं साथ ही....लोक सेवा यानी जन कल्याण को अपनी प्राथमिकता बनाया। हमारे पास संसाधन सीमित थे...तब हम कहीं सरकार में भी नहीं थे...लेकिन हमारी पार्टी लोगों की सेवा के लिए समर्पित रही। चाहे आपदा हो, या समाज में कोई सकारात्मक बदलाव हो, हर जगह हमारे कार्यकर्ता सेवाभाव से जनता के बीच उपस्थित रहे। इसी सेवाभाव के कारण लोगों का बीजेपी पर विश्वास बढ़ता चला गया।

हम सभी सन् 1984 का वो दौर भूल नहीं सकते, जब कांग्रेस ने रिकॉर्ड सीटें जीती थीं। लेकिन देश की जनता देख रही थी कि कैसे कांग्रेस सत्ता हासिल करके उसके साथ विश्वासघात कर रही है। ऐसे में देश के लोगों का भाजपा पर भरोसा दिनों-दिन बढ़ता रहा। भाजपा धीरे-धीरे चुनाव जीतने लगी थी। और हमारे आने से, देश की राजनीति में दो धाराएं बहुत स्पष्ट हो गईं। एक धारा बनी, सत्ता आधारित राजनीति की। तो दूसरी धारा बनी, सेवा आधारित राजनीति की। सत्ता को प्राथमिकता देने वाली राजनीति का धीरे-धीरे पतन होने लगा! और, सेवाभाव वाली राजनीति को धीरे-धीरे लोगों का भारी समर्थन मिलने लगा। आज हमें इस बात पर गर्व है कि...हमने अपने आचरण से भारत की राजनीति में एक नया सिद्धान्त स्थापित किया है! 'राष्ट्र प्रथम' का सिद्धान्त! राष्ट्रीय एकता...राष्ट्रहित सर्वोपरि...ये हमारी पहचान बन गई है।

भारत की राजनीति में भाजपा ने गठबंधन की राजनीति का भी एक नया आदर्श स्थापित किया। हमारे देश में सत्ता के लिए गठबंधन के अनेक प्रयोग हुए। लेकिन राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए, राष्ट्र के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, अगर कोई गठबंधन बना...तो वो भाजपा द्वारा बनाया गया गठबंधन था- NDA... अब तो NDA गठबंधन 25 वर्ष से भी ज्यादा का हो गया है। हमारे NDA परिवार का निरंतर बढ़ना ये दिखाता है...कि भाजपा कितनी सर्वसमावेशी है और क्षेत्रीय आकांक्षाओं को सर्वोपरि रखते हुए काम करती है।

हमसे पहले देश ने परिवारवादी-वंशवादी राजनीति का बोलबाला देखा था। और आज भी अलग-अलग कोने में वो खेल चल ही रहा है। या तो फिर, लेफ्ट का गवर्नेंस मॉडल देखा था। लेकिन, हमारा गवर्नेंस मॉडल यूनीक रहा। हमारे गवर्नेंस मॉडल में पॉलिसी में स्थिरता थी... सरकार में स्थिरता थी। हमने जो कहा, वो करके दिखाया। आज भाजपा की पहचान के साथ, ये बात जुड़ गई है कि जो वो कहती है, वो जरूर करती है।

भाजपा ने वडोदरा में 1994 में महिला आरक्षण का प्रस्ताव पारित किया था। हमने ये भी तय किया था कि संगठन में ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को आगे बढ़ाएंगे। और सरकार में आने के बाद हमने महिला आरक्षण का अपना वायदा पूरा करके दिखाया। अब हम पूरी शक्ति से जुटे हैं कि साल 2029 में नारीशक्ति वंदन अधिनियम की भावना के अनुरूप ही चुनाव हो।

आज भाजपा गुड गवर्नेंस का सिंबल बन गई है...लास्ट माइल तक डिलीवरी का सिंबल बन गई है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने हमें अंत्योदय का सिद्धांत दिया था। हमने इसी विजन पर चलते हुए सैचुरेशन का मार्ग अपनाया...इसी का नतीजा था कि देश के 25 करोड़ गरीबों को...गरीबी से बाहर निकालने में हम कामयाब रहे।

डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर के लिए अपना बलिदान तक दे दिया था। दशकों से जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370... देश की संवैधानिक एकता और अखंडता के लिए एक चुनौती बना हुआ था। एक दीवार खड़ी कर दी गई थी। उस समय कश्मीर से 370 को खत्म करना.... इसे पूरी तरह से असंभव माना जाता था, नामुमकिन माना जाता था। लेकिन, अपनी स्थापना के दिन से ही भाजपा का ये संकल्प था कि 370 का कलंक देश के माथे से हटकर रहेगा। और, हमने ये काम करके दिखाया।

राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद पर प्रहार...ये भाजपा के लिए ऐसे मुद्दे रहे हैं जिन पर हमारी पार्टी हमेशा अडिग रही है। आज हम डिफेंस में देश को आत्मनिर्भर बना रहे हैं, बॉर्डर पर सुरक्षा के लिए नए-नए उपाय कर रहे हैं...सीमावर्ती गांवों को प्रथम मानकर वहां विकास कर रहे हैं ताकि भारत की सीमाएं हमेशा सुरक्षित रहें। इसी तरह देश में नक्सलवाद-माओवाद की कमर तोड़ने का काम भी अगर किसी ने किया है... तो वो भाजपा है।

भाजपा के शुरुआती दिनों से ही हम कहा करते थे- कच्छ हो या कोहिमा...अपना देश...अपनी माटी। भाजपा आज एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना के साथ देश की एकता के लिए काम कर रही है। GST लाकर हमने One Nation One Tax का संकल्प साकार किया। One Nation- One Ration Card....One Nation- One Grid ऐसे कितने की प्रयासों से देश को हम जोड़ रहे हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से हम मातृभाषा पर... स्थानीय भाषा में पढ़ाई पर भी जोर दे रहे हैं।

हमारी संस्कृति ने हमें सिखाया है- वसुधैव कुटुंबकम...हम पूरे विश्व को एक परिवार मानते हैं। आज युद्ध के इस समय में भी भारत की इस भावना को हम प्रतिष्ठापित होते देख रहे हैं। एक समय था जब भारत सबसे समान दूरी बना के रखने में गर्व करता था। आज का भारत...सबसे समान निकटता बनाकर चल रहा है।

हम विकास और विरासत, दोनों को साथ लेकर चल रहे हैं। कांग्रेस ने हमेशा सिर्फ एक परिवार को प्राथमिकता दी है..बाकी के साथ अन्याय किया। घोर अन्याय किया। जबकि भाजपा...मां भारती की हर महान संतान को उचित सम्मान दे रही है। नेताजी सुभाष बाबू के नाम पर पराक्रम दिवस...अंडमान में उनकी प्रेरणा से द्वीपों के नाम...26 जनवरी की परेड में आजाद हिंद फौज को सैल्यूट...ऐसे कितने ही

काम हुए हैं जो कांग्रेस सरकार में सोचे तक नहीं गए। खादी को पुनर्जीवित करना हो...स्वदेशी के लिए लोगों को फिर से जागृत करना हो... भाजपा ने राष्ट्र की चेतना को नई ऊर्जा दी है, नई प्रेरणा दी है।

पूरे विश्व में एक अवधारणा रही है कि पर्यावरण की रक्षा करते हुए विकास बहुत मुश्किल होता है। लेकिन भारत ने इस अवधारणा को भी तोड़ा है। हमने पर्यावरण की रक्षा करते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को तेज गति दी है। 11 साल पहले भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। इतने कम वर्षों में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बने हैं। और ये तेज विकास...पर्यावरण की रक्षा करते हुए हुआ है। भारत आज क्लाइमेट चेंज से जुड़े लक्ष्यों को समय से पहले प्राप्त कर रहा है। जब बात environment- friendly स्रोतों से 50 प्रतिशत से अधिक ऊर्जा प्राप्त करने के वैश्विक संकल्प की आती है...तो उसे हासिल करने वाले देशों में भारत सबसे अग्रणी रहा है। 2014 से पहले भारत की सौर ऊर्जा क्षमता 3 गीगावाट से भी कम थी...लेकिन आज यह बढ़कर 140 गीगावाट से अधिक हो चुकी है।

21वीं सदी के भारत में भाजपा के पास अपने लक्ष्य हैं...अपने संकल्प हैं। हम वर्तमान चुनौतियों से निपटने के साथ ही... देश को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। डेमोग्राफी में हो रहा बदलाव...घुसपैठियों का ज्वलंत मुद्दा...भ्रष्टाचार...परिवारवाद....गुलामी की मानसिकता...बहुत से विषय हैं जिन पर लगातार काम हो रहा है। और भाजपा को इन चुनौतियों से देश को मुक्त करना ही होगा। ये जिम्मेवारी भाजपा ही पूरा कर सकती है। हमारी ईमानदार कोशिशों के नतीजे...भूतकाल गवाह है, परिणाम सकारात्मक रहे हैं। आगे भी रहेंगे। देश जानता है कि हर चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय जनता पार्टी ईमानदारी से कोशिश करती है। आज भी करते हैं। आगे भी करते रहेंगे। पहले भी सकारात्मक नतीजे मिले हैं। आगे भी सकारात्मक नतीजे मिलने वाले हैं।

अंग्रेजों के दौर के सैकड़ों काले कानूनों का अंत....लोकतन्त्र के लिए नए संसद भवन का निर्माण....सामान्य समाज के गरीबों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण....कानून बनाकर तीन तलाक पर रोक...CAA का कानून...अयोध्या में राममंदिर का निर्माण....ऐसे कितने ही काम हैं... जो भाजपा के ईमानदार प्रयासों का नतीजा हैं। और, हमारा मिशन अभी भी जारी है। Uniform Civil Code....One nation, one election......ऐसे सभी विषयों पर आज देश में एक गंभीर चर्चा भी हो रही है, और इस दिशा में सकारात्मक प्रगति भी हो रही है।

हमारा लक्ष्य है- विकसित भारत का निर्माण...आत्मनिर्भर भारत का निर्माण...और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम निःस्वार्थ भाव से लगे रहेंगे।

कुछ ही वर्षों में भाजपा अपने 50 वर्ष पूरे करने जा रही है। ये बहुत बड़ा पड़ाव है, बहुत बड़ी प्रेरणा है। हमें नए लक्ष्यों का मंथन भी करना है और बदलती टेक्नोलॉजी के इस जमाने में खुद को ढालना भी है। ▪

# संगठन कार्यों को आगे बढ़ाएं - डॉ. मोहन यादव

## समाज के अंतिम पंक्ति तक पहुंच बनाने के लिए कार्य करें।

युवा देश के भविष्य हैं। युवा कार्यकर्ता आने वाले समय में बड़े दायित्व निभाने के लिए खुद को तैयार करते रहें, क्योंकि भाजपा देश की एक मात्र ऐसी पार्टी है जिसके सामान्य कार्यकर्ता पार्टी के सबसे बड़े दायित्व तक पहुंचते हैं। भाजपा के बूथ के कार्यकर्ता और बूथ के अध्यक्ष भी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन जाते हैं। इसलिए कार्यकर्ता संगठन की मजबूती के लिए कार्य करें। मोर्चा कार्यकर्ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की उपलब्धियां, जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें। ▪

# संगठन को बुलंदियों तक पहुंचाएं - हेमंत खण्डेलवाल

## भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाएं युवा मोर्चा कार्यकर्ता।

युवा मोर्चा कार्यकर्ता पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाकर संगठन को और बुलंदियों तक पहुंचाएं। मोर्चा कार्यकर्ता संगठन विस्तार के लिए कार्य करें। युवा मोर्चा कार्यकर्ता भाजपा की रीति-नीति को जनता तक पहुंचाएं और बताएं कि हमारी पार्टी राष्ट्रवाद के आधार पर देश को आगे ले जाने के लिए कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को वर्ष 2047 विकसित और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। युवा मोर्चा के सभी कार्यकर्ता संगठन को और बुलंदियों तक पहुंचाएं और भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें। युवाओं को संगठन से जोड़कर घर-घर तक पार्टी की पहुंच बनाएं। ▪

# आदर्श, लक्ष्य व कार्य राष्ट्रवाद पर आधारित

भाजपा का उद्धेश्य अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

भाजपा की यात्रा केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि वैचारिक और आध्यात्मिक साधना है।

- **पार्टी कार्यालय हम सभी के लिए मंदिर और हमारे कार्य का आधार होते हैं।**
- **भाजपा सरकार किसानों के हित में कार्य कर रही।**
- **जनसंघ से खड़ा हुआ संगठन, जनता पार्टी में विलय के दौरान 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांत पर अडिग रहा।**

भाजपा का स्थापना दिवस बहुत ही उत्साह और उमंग वाला दिन है। पार्टी कार्यालय हम सभी के लिए मंदिर और हमारे कार्य का आधार होते हैं। हम सभी के लिए बहुत बड़ा दिन है कि एक साथ चौदह जिला कार्यालयों का भूमिपूजन और तीन जिला कार्यालयों पर कार्यारंभ हुआ है। एक साथ इतने जिलों में ऐसा कार्य करके प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कमाल कर दिया है। हमारे बीच में से जो प्रमुख कार्यकर्ता जिन्होंनें अपना पूरा जीवन पार्टी को दिया वह हमारे बीच में नहीं है, उनके परिवार के सदस्यों का स्वागत और सम्मान करते हुए मुझे अत्यंत खुशी का अनुभव हुआ है। भारतीय जनता पार्टी की यात्रा हमारे लिए केवल एक राजनीतिक यात्रा नहीं, बल्कि एक वैचारिक और आध्यात्मिक साधना है। पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता इसे परमात्मा के कार्य के रूप में मानकर समर्पण भाव से जुड़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारे आदर्श, लक्ष्य, कार्य करने का तरीका और हमारी सोच सब राष्ट्रभाव पर आधारित हैं। वैश्विक राजनीति के परिदृश्य में जब अधिकांश राजनीतिक दल अपने स्वार्थ और सत्ता के इर्द-गिर्द केंद्रित थे, तब हमारे सामने यह प्रश्न था कि राजनीति की दिशा क्या होनी चाहिए। एक ओर साम्यवाद और दूसरी ओर पूंजीवाद की दो धाराओं के बीच स्वतंत्रता के बाद भारत के सामने यह चुनौती थी कि उसका लक्ष्य क्या हो और उसकी राजनीतिक दिशा कैसी हो। भारतीय जनता पार्टी ने इसी संदर्भ में राष्ट्र निष्ठा और समर्पण की राह को चुना। कई लोगों ने हमारा मजाक भी बनाया, लेकिन हमने उसकी परवाह नहीं की। उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए, हम पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के उस विचार पर अडिग रहे कि हमारा राष्ट्र केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं हो सकता। सच्चे अर्थों में राजनीति का अंतिम उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार लगातार किसानों के हित में कार्य कर रही है। कांग्रेस के समय प्रदेश में साढ़े सात लाख हेक्टर सिंचाई का रकबा था, जो आज बढ़कर 55 लाख हेक्टर का हो गया है। वर्ष 2003 से पहले मध्यप्रदेश में कांग्रेस के शासनकाल में समर्थन मूल्य पर गेहूं की नाम मात्र की खरीदी की जाती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार 2625 रुपए क्विंटल में गेहूं खरीदी कर रही है। सरकार सबसे पहले छोटे किसानों का गेहूं खरीदेगी, यह हमारी प्रतिबद्धता है। सिंचाई के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। बिजली-पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं में भी व्यापक सुधार हुआ है। हम सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूल मंत्र के साथ आगे बढ़ रहे हैं। एक समय ऐसा भी आया जब न्यायपालिका के निर्णय पर प्रश्न खड़े हुए, विशेषकर इंदिरा गांधी को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद उनकी अयोग्यता के मामले पर हमारे दल ने सभी को साथ लेकर स्पष्ट कहा कि जिसे न्यायालय ने अयोग्य घोषित किया है, उसे पद पर बने रहने का अधिकार नहीं है। इसी संघर्ष ने लोकतंत्र की रक्षा की एक लंबी लड़ाई का इतिहास रचा। लोकतंत्र की रक्षा के लिए हमारे हजारों कार्यकर्ता

'लोकतंत्र सेनानी' बनकर जेलों में गए और उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं था कि आने वाला कल क्या होगा, फिर भी वे लोकतंत्र, न्याय और राष्ट्रहित की लड़ाई में डटे रहे।

जनसंघ के समय खड़ा हुआ संगठन, जनता पार्टी में विलय के दौरान भी 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांत पर अडिग रहा। भारतीय जनता पार्टी की स्थापना कर हमने अपनी मूल वैचारिक धारा को बनाए रखते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लिया, यही हमारी पहचान है। फीनिक्स पक्षी की कथा हम सुनते आए हैं, जो राख से पुनः जन्म लेता है। वह केवल एक कहानी हो सकती है, लेकिन जनसंघ से भारतीय जनता पार्टी का पुनर्जन्म हमने साकार रूप में देखा है, एक अमर पक्षी की तरह, जो हर चुनौती के बाद और अधिक सशक्त होकर उभरा है। हम जो कहते हैं, वह करके दिखाते हैं। यही कारण है कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का वह कथन आज भी प्रेरणा देता है कि भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता ऐसा होता है, जिसके रोम-रोम से राष्ट्रवाद की भावना प्रकट होती है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का समर्पण अद्भुत है। उनके त्याग, तप और राष्ट्रभक्ति का उदाहरण हर परिस्थिति में देखने को मिलता है। हमारे नेताओं का चरित्र और उनका दर्शन भी उतना ही प्रेरणादायी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है। उनके सशक्त नेतृत्व ने हर कार्यकर्ता का आत्मविश्वास बढ़ाया है और देश को स्थिर, मजबूत सरकार दी है। यह कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और समर्पण का ही परिणाम है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में भी हमने जो कहा, वह करके दिखाया। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से लेकर देश को परमाणु शक्ति संपन्न बनाने तक, अनेक ऐतिहासिक कार्य हुए। आज भी देश की सुरक्षा और सम्मान सर्वोपरि रखते हुए, आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। जनता की भलाई के लिए समय-समय पर राहत प्रदान की गई। किसान, युवा, महिला और गरीब कल्याण के लिए निरंतर कार्य हो रहा है। पार्टी का हर कार्यकर्ता निरंतर समाज और राष्ट्र की सेवा में लगा हुआ है। ■

# भाजपा विचार और विश्वास की यात्रा

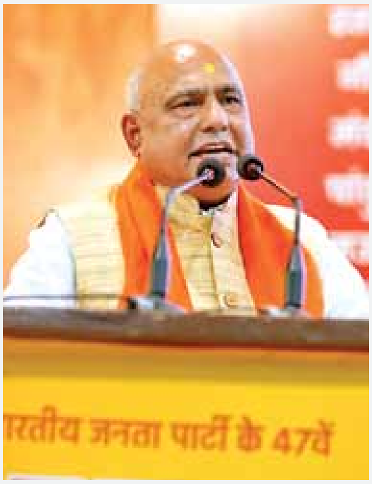


6 अप्रैल पार्टी का केवल स्थापना दिवस नहीं है, बल्कि कार्यकर्ताओं के तप, त्याग और संकल्प का उत्सव है। भारतीय जनता पार्टी सत्ता की पार्टी नहीं है, बल्कि विचार और विश्वास की यात्रा का एक संगठन है। कार्यकर्ताओं की ताकत हर कार्यकर्ता होता है। राष्ट्र निर्माण को लेकर हमारी विचारधारा और संगठन का जो बीज श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने विपरीत परिस्थितियों में बोया उसको आगे बढ़ाने का काम पं. दीनदयाल उपाध्याय जी, श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जी और पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी सहित शीर्ष नेतृत्व लगातार संगठन कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। पार्टी की विचारधारा जो सन् 1952 में थी उसमें आज तक कोई परिवर्तन नहीं आया है। सन् 1985 में एक वक्त ऐसा आया कि जब हम सिर्फ दो सीट पर थे, लेकिन हमने जो वर्ष 1952 में सोचा था कि जम्मू-कश्मीर से धारा-370 हटेगी, अयोध्या में श्री राम मंदिर बनेगा, तीन तलाक पर कानून बनेगा। इन बातों से हमारी पार्टी कभी पीछे नहीं हटी। यही दृढ़ता हमारा निश्चय है जिसके कारण आज हम विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बन गए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 2047 का जो विकसित भारत का संकल्प लिया है उसको हम सब मिलकर पूरा करेंगे। हमारा प्रयास होना चाहिए की अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का उत्थान हो। भारत का उज्जवल भविष्य ही भारतीय पार्टी जनता का प्रण है।

हमारे 62 संगठनात्मक के जिले हैं और इन 62 जिलों में 7 ग्रामीण जिले हैं और 55 हमारे शहरी जिले हैं। स्थापना दिवस पर 14 जिला कार्यालयों का भूमिपूजन किया है, तीन जिलों आगर, मंदसौर और रतलाम के जिला कार्यालयों का कार्य प्रारंभ हुआ है। वर्ष 2027 के स्थापना दिवस पर इन 14 जिलों सहित प्रदेश के सभी 62 संगठनात्मक जिलों में अपना कार्यालय बनकर तैयार हो जाएगा। भाजपा के सभी जिलों के कार्यालयों को और आधुनिक बनाया जाएगा। सोलर के द्वारा पर्यावरण की भी हम रक्षा करें। भाजपा का कार्यकर्ता ही उसकी पूंजी होती है। हर व्यक्ति कार्यकर्ता है, आज किसी के पास दायित्व है कल किसी के पास रहेगा, लेकिन हममें कार्यकर्ता का भाव हमेशा बना रहना चाहिए। इसलिए हमने प्रयास किया है कि हमारे संभाग प्रभारी, हमारे जिला प्रभारी हर महीने 10 तारीख से पूर्व एक बार जिलों का दौरा करें। मोर्चो सहित, जिला अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष बूथों तक जाएं ताकि हर कार्यकर्ता हमारी विचारधारा के साथ नीचे तक और सक्रिय हो सकें। हमारा सौभाग्य है कि दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारा दल लगातार आगे बढ़ रहा है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी के नेतृत्व का सानिध्य हमें मिल रहा है और हमें जो समय-समय पर दिशा-निर्देश मिल रहे हैं, उनका पालन कर हम लगातार आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। ■

# समृध्द किसान की विकसित भारत में महत्वपूर्ण भूमिका

मध्यप्रदेश का समृद्ध किसान ही विकसित भारत 2047 के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सच्चा वादा और पक्का काम, यही संकल्प है। किसानों से जो वादा किया, वह पूरा करके भी दिखाया है। जब खेतों से लेकर कारखाने तक समृद्धि आएगी, तभी तो किसान भी समृद्ध और खुशहाल होंगे। प्रदेश के सभी किसान भाइयों-बहनों की मेहनत, पसीना और भविष्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसानों की समृद्धि ही मध्यप्रदेश की असली ताकत है। ''किसान कल्याण वर्ष'' में मध्यप्रदेश को कृषि के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक ले जाएं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश तेजी से विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है। प्रदेश की तीव्र गति के विकास का मुख्य आधार किसान भाई-बहन हैं। सरकार किसानों की खुशहाली और उनकी समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। न केवल किसानों की आर्थिक उन्नति के लिए संकल्पित हैं, बल्कि उनके जीवन में सुख और आनंद के सूर्योदय का भी प्रयास कर रहे हैं।

किसानों की आमदनी बढ़ाये बिना प्रदेश के सर्वांगीण विकास की कल्पना अधूरी है। सरकार किसानों के हर सुख-दुख में साथ है। इसी का परिणाम है कि मध्यप्रदेश सरकार निरंतर किसान हितैषी ऐतिहासिक निर्णय ले रही है।

मध्यप्रदेश सरकार किसान हितैषी संकल्प के साथ निरंतर कार्य कर रही है और इसी भावना के साथ इस वर्ष को किसान कल्याण वर्ष के रूप में समर्पित किया गया है।

प्रदेश में रिकॉर्ड गेहूं उत्पादन को देखते हुए राज्य सरकार ने केंद्र सरकार से खरीदी की सीमा बढ़ाने का आग्रह किया था।

किसानों के हित को सर्वोपरि रखते हुए गेहूं उपार्जन का लक्ष्य 78 लाख मीट्रिक टन से बढ़ाकर 100 लाख मीट्रिक टन कर दिया गया है। यह 22 लाख मीट्रिक टन की अभूतपूर्व वृद्धि न केवल किसानों की मेहनत का सम्मान है, बल्कि उनकी आय को सुनिश्चित करने की दिशा में एक ठोस कदम भी है। इसके लिए प्रधानमंत्री श्री

मोदी और केन्द्र सरकार का आभार है।

पूरे प्रदेश के छोटे-बड़े सभी किसान भाइयों से समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए स्लॉट बुकिंग पूरी तरह से खोली जा चुकी है। गेहूं उपार्जन अब सप्ताह में 6 दिन होगा और शनिवार को अवकाश नहीं रहेगा। उपार्जन केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर गेहूं का उपार्जन निर्बाध रूप से जारी रहेगा।

किसान भाइयों को कोई समस्या न हो, यह सरकार का संकल्प है। राज्य सरकार सदैव किसानों के साथ है। सरकार ने भू-अर्जन को भी लेकर एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है। अब किसानों को उनकी भूमि के बदले 4 गुना तक मुआवजा दिया जाएगा। यह निर्णय किसानों के अधिकारों की रक्षा और उनके भविष्य को सुरक्षित करने के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह सिर्फ निर्णयों की सूची नहीं, बल्कि उस विश्वास की कहानी है जो सरकार और किसानों के बीच मजबूत हो रही है। सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, फसल विविधीकरण को बढ़ावा, आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रसार इन सभी क्षेत्रों में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। देश में ऐसा पहली बार हो रहा है कि मध्यप्रदेश सरकार ने दलहन, उड़द और तिलहन फसल सरसों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए बड़ा कदम उठाया है। उड़द को तय समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा और किसानों को तय समर्थन मूल्य के अतिरिक्त खरीदी गई उड़द पर 600 रुपए प्रति क्विंटल बोनस राशि भी दी जाएगी।

मध्यप्रदेश में सोयाबीन की सफलता के बाद सरसों पर भी भावांतर योजना लागू करने की घोषणा के फलस्वरूप बाजार भाव में वृद्धि हुई और किसानों को सरसों का दाम एमएसपी से भी अधिक मिल रहा है।

सबको विदित है कि सरकार इस वर्ष को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है, जिसमें किसानों को मात्र पांच रुपये में कृषि पंप का कनेक्शन दिया जा रहा है। साथ ही, योजना है कि किसानों को रात के बदले दिन में ही सिंचाई के लिए पर्याप्त बिजली मिलेगी। कृषक मित्र योजना में 90 प्रतिशत सब्सिडी पर किसान को सोलर सिंचाई के पंप दिए जा रहे हैं, जिससे बिजली के मामले में किसान आत्मनिर्भर बनेंगे।

प्रदेश को मिल्क कैपिटल बनाने की दिशा में निरंतर नवाचारों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। दुग्ध उत्पादन से लेकर संकलन बढ़ाने के भी प्रयास किए हैं। नई 1752 दुग्ध समितियों का गठन किया है। प्रतिदिन दूध संकलन 10 लाख किलोग्राम से अधिक पहुँच गया है और दुग्ध उत्पादक किसान भाइयों को 1600 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का भुगतान किया गया है। किसानों को अब दूध का दाम प्रति किलो 8 से 10 रुपये बढ़कर मिल रहा है। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि मध्यप्रदेश को मिल्क कैपिटल बनाने की दिशा में क्रांतिकारी कदम हैं। प्रयास हैं कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए पशुपालन के साथ ही दूसरे नये रास्ते भी तैयार हों।

युद्ध की स्थिति के बावजूद प्रदेश में यूरिया की उपलब्धता 5.90 लाख मीट्रिक टन है, जो पिछले साल से अधिक है। इसी प्रकार अन्य उर्वरक के भी पर्याप्त भंडारण किए गए हैं। उर्वरकों की वितरण प्रणाली में भी सुधार किया गया है। नवाचार और तकनीक का उपयोग कर किसानों को अब बिना लाइन लगाए मनचाहे स्थानों से खाद दिलाने की व्यवस्था की गई है।

किसानों के साथ जो रिश्ता बनाया है, उसे आगे भी निभाएंगे। हर परिस्थिति में आखिरी दम तक अन्नदाताओं के साथ खड़े रहेंगे। ▪

# डॉ. अंबेडकर जी के सपने पूरा करेंगे

पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें कोटि-कोटि नमन हम सब बाबा साहब के आदर्शों एवं विचारों से प्रेरणा लेने का प्रण लेते हैं।

- **बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने सर्वस्पर्शी एवं सर्वसमावेशी विकास के जरिये विकसित भारत का सपना देखा था। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी उसी विचारों और आदर्शों के आधार पर विकसित भारत का निर्माण कर रहे हैं।**

- **बाबा भीमराव अंबेडकर जी ने नारी शक्ति को आगे बढ़ाने, महिलाओं की शिक्षा और उनकी भागीदारी को लेकर संविधान में जो विचार रखे, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी केंद्र सरकार उनके एक और सपने को 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के रूप में पूरा करने जा रही है।**

- **पंडित नेहरू और कांग्रेस पार्टी ने बाबा भीमराव अंबेडकर को 1952 और 1954 में जिस तरह से लगातार अपमानित किया, उसे देश हमेशा याद रखेगा। नेहरू-गाँधी परिवार ने उन्हें चुनाव में हराने का हर संभव प्रयास किया।**

- **नेहरू-गांधी परिवार ने बाबा साहब को भारत रत्न देने तक के योग्य नहीं समझा जबकि नेहरू-गांधी परिवार ने स्वयं को भारत रत्न दिया। केंद्र में भाजपा समर्थित सरकार आने पर बाबा साहब को भारत रत्न से सम्मानित किया गया।**

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी का जीवन समाज को सुधारने, शिक्षित करने और समाज की भागीदारी सुनिश्चित करने के उनके विचार पर आधारित रहा। आज भी भारत के नवनिर्माण में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जिस प्रकार से काम कर रहे हैं, उसमें उनके आदर्शों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। जिस प्रकार से बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी ने संविधान में सबकी भागीदारी की बात की, महिलाओं को अधिकार दिलाने की बात की और समाज के हर वर्ग की आवाज को बुलंद करने का कार्य किया, वह आज भी समाज के हर वर्ग को उत्साहित और प्रेरित करता है। वर्तमान में संविधान के निर्माण के विषय को लेकर जिस प्रकार से अलग-अलग व्याख्याएं की जाती हैं, उनका उद्देश्य केवल यह है कि विकास की योजनाओं में अंतिम व्यक्ति को कैसे जोड़ा जाए। हमारे प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भी अंतिम व्यक्ति तक विकास की योजनाओं को पहुंचाने के लिए अंत्योदय का सपना देखा था। बाबा भीमराव अंबेडकर जी और दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन के जो विचार रहे, आज श्री नरेन्द्र मोदी सरकार उन विचारों और उनके आदर्शों को पूरा कर रही है।

एक समय ऐसा भी था जब इस देश में नेहरू-गांधी परिवार के इतर किसी को सम्मान नहीं दिया जाता था और आजादी के साठ वर्षों के बाद भी संविधान के शिल्पकार बाबा भीमराव अंबेडकर को सम्मान नहीं मिला। जब संयुक्त मोर्चा की भाजपा समर्थित सरकार बनी, तभी पहली बार बाबा भीमराव अंबेडकर जी को भारत रत्न दिया गया, जबकि उससे पहले नेहरू-गांधी परिवार ने स्वयं को भारत रत्न दिया और आज वही लोग संविधान की प्रति लेकर घूमते हैं। यदि उनके आदर्शों को थोड़ा भी आत्मसात किया होता और साठ वर्षों तक कार्य किया होता, तो आज संविधान की प्रति लेकर नहीं घूमना पड़ता। पंडित नेहरू ने बाबा भीमराव अंबेडकर को 1952 और 1954 में जिस तरह से लगातार अपमानित किया, उसे

देश हमेशा याद रखेगा। संविधान के निर्माता को गांधी-नेहरू परिवार द्वारा जो सम्मान मिलना चाहिए था, उसके स्थान पर उन्हें चुनाव में हराने के प्रयास कर अपमानित करने का कार्य किया गया।

जिस एसआईआर के विषय को लेकर राहुल गांधी और पूरा विपक्ष बेचैन है, उसी कांग्रेस ने उस समय बाबा भीमराव अंबेडकर जी के क्षेत्र में गलत तरीके से वोटर्स लिस्ट को काटने का काम कर उन्हें हराने का प्रयास किया गया था। उस युग के बाद श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संसद में बाबा साहब का तैल चित्र लगवाया, उनके विचारों को आगे बढ़ाते हुए सर्व शिक्षा अभियान को आगे बढ़ाया और आज शिक्षित समाज बनाने में इस अभियान की बहुत बड़ी भूमिका रही है। अब यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जहां एक ओर पंच तीर्थ बनाकर उनके विचारों और आदर्शों को स्थापित किया, वहीं विपक्ष को भी यह जवाब दिया कि जिस शख्सियत को सम्मान देना चाहिए था और पूजना चाहिए था, उसे अपमानित किया गया, लेकिन भारत की जनता के आशीर्वाद से वे उनके सम्मान को आगे बढ़ा रहे हैं। ये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं जिन्होंने बाबा साहब से जुड़े पंच तीर्थों का विकास किया, संविधान दिवस मनाने की शुरुआत की और अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर राष्ट्र को समर्पित किया।

आज पंचतीर्थ के माध्यम से देश में ही नहीं, बल्कि विदेश में भी, जहां बाबा भीमराव अंबेडकर जी ने लंबा समय बिताया, उन स्थानों को शामिल कर उनके अनुयायियों और पूरे भारत वर्ष को गौरवान्वित किया गया है। बाबा भीमराव अंबेडकर जी ने नारी शक्ति को आगे बढ़ाने, महिलाओं की शिक्षा और उनकी भागीदारी को लेकर संविधान में जो विचार रखे, आने वाले समय में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार उनके एक और सपने को पूरा करने जा रही है।

हम सब बाबा भीमराव अंबेडकर जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और संकल्पित होते हैं कि पूरा भाजपा परिवार उनके विचारों तथा अपने प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के साथ आगे बढ़ेगा और समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की योजनाओं को पहुंचाएगा। ■

# भारत के निर्माता हैं बाबा साहेब - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **डॉ. अंबेडकर ने संविधान के रूप में हमें दिया लोकतंत्र का सबसे बड़ा ग्रंथ।**
- **नारी सशक्तिकरण के साहसी और प्रबल समर्थक थे बाबा साहेब।**
- **न्यूनतम मजदूरी, कम्पनी लॉ, महिला श्रमिकों के अधिकार हैं बाबा साहेब की देन।**
- **लोकसभा और विधानसभा में सुनिश्चित होगा 33 प्रतिशत आरक्षण।**

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक ऐसे युग दृष्टा थे, जिन्होंने एक हजार साल की गुलामी की कठिनाइयों को दूर करने और समाज के अंदर समानता के भाव को विकसित करने के लिए लड़ाई लड़ी थी। बाबा साहेब के योगदान से हम सभी गौरवान्वित होते हैं। हमें उनके बनाए संविधान के अनुसार ही चलना चाहिए। इससे श्रेष्ठ संविधान और कोई नहीं हो सकता। डॉ. अम्बेडकर ने बहनों को पिता की संपत्ति में अधिकार दिलाने, तलाक के समय मुआवजा और मातृत्व अवकाश दिलाने के लिए सराहनीय कार्य किया। उन्होंने हमें माताओं-बहनों के लिए 'समान काम-समान वेतन' का दूरदृष्टि पूर्ण विचार दिया।

बाबा साहेब महिला सशक्तिकरण के साहसी और प्रबल समर्थक थे। महिलाओं के सम्मान और अधिकारों के लिए बाबा साहेब ने अपनी कुर्सी तक छोड़ दी थी। न्यूनतम मजदूरी, कंपनी लॉ और महिला श्रमिकों को अधिकार हमें बाबा साहेब की ही देन है। केन्द्र सरकार संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर के आदर्शों पर चलते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए 21वीं सदी का सबसे बड़ा निर्णय लेने जा रही है। इससे माताओं-बहनों को लोकसभा और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित होगा। महिलाओं के कल्याण के लिए डॉ. अम्बेडकर ने जो किया, इसके लिए देश उन्हें सदैव स्मरण करता रहेगा। बाबा साहेब ने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण भारत माता की आराधना करते हुए समाज को आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया था।

बाबा साहेब के जीवन से जुड़े सभी 5 पड़ावों को सरकार ने पंचतीर्थ के रूप में विकसित किया है। जातिगत असमानता को खत्म करने के लिए अंतर्जातीय विवाह करने पर नवदम्पत्तियों को सरकार प्रोत्साहन राशि के रूप में 2 लाख रुपए दे रही है। अनुसूचित जाति-जनजाति के कल्याण के लिए सरकार ने सालाना बजट का एक तिहाई हिस्सा इन्हें समर्पित किया है।

अंबेडकर जयंती केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि समाज में समरसता और एकता को सुदृढ़ करने का अवसर है। हमें बाबा साहब अंबेडकर के सामाजिक समरसता के संदेश को जीवन में आत्मसात करना चाहिए। ■

# भाजपा अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कार्य कर रही

- कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से भाजपा दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना।
- कांग्रेस ने किसानों के साथ इतने पाप किए हैं कि कांग्रेस की दो पीढ़ियां माफी मांगे तो भी कम है।
- भाजपा ने जनसंघ से लेकर आज तक विचारधारा से कभी समझौता नहीं किया।
- कांग्रेस की वजह से जम्मू-कश्मीर में हजारों निर्दोष लोगों का खून बहाया गया।
- कांग्रेस ने तुष्टिकरण के लिए मुस्लिम बहनों की जिंदगी नर्क बना दी थी।

कांग्रेस की अपनी स्वयं की कोई विचारधारा नहीं है। देश की आजादी के बाद पंडित मदन मोहन मालवीय जब वाराणसी में काशी हिंदू विश्व विद्यालय की स्थापना करा रहे थे, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू सोमनाथ मंदिर से लेकर अयोध्या में भगवान श्रीराम लला के मंदिर को लेकर क्या कर रहे थे, देश जानता है। कांग्रेस पार्टी के कुछ नेताओं के व्यक्तिगत हितों के कारण केसर की क्यारी वाली धरती जम्मू-कश्मीर में हजारों निर्दोष लोगों का खून बहाया गया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान का विरोध करते हुए आंदोलन किया और जनसंघ की स्थापना की। वर्ष 1952 में जनसंघ की स्थापना से लेकर आज तक भाजपा की विचारधारा में कभी समझौता नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा-370 हटाकर कलंक मिटाने का कार्य किया है। भाजपा ने सनातन संस्कृति के भाव से कभी समझौता नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद अयोध्या में श्रीराम लला का मंदिर बनवाकर दुनिया को दिखाया कि भारत एक भाव से कार्य कर रहा है।

**भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्र प्रथम के भाव से कार्य करते हैं, कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति करती है।**

**कांग्रेस के व्यक्तिगत हितों की कीमत पूरे देश ने वर्षों तक चुकाई है, उसकी कोई विचारधारा नहीं।**

कांग्रेस हमेशा तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति करती है। वर्षों पहले देश के सर्वोच्च न्यायालय से तीन तलाक को लेकर फैसला दिया था, लेकिन कांग्रेस पार्टी की तत्कालीन केंद्र सरकार ने न्यायालय के फैसले के तहत मुस्लिम बहनों को न्याय दिलाने की बजाय तुष्टिकरण करने लगी। तत्कालीन केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ कानून में संशोधन कर मुस्लिम बहनों की जिंदगी नर्क बना दी थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने तीन तलाक को लेकर सख्त कानून बनाकर देश की लाखों मुस्लिम बहनों की जिंदगी संवारने का कार्य किया है।

भाजपा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के सिद्धांतों को प्रतिपादित करते हुए अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति की जिंदगी संवारने का कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकारें लोगों का जीवन संवारने के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चला रही हैं। प्रधानमंत्री जी ने देश के 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क राशन देने के साथ गरीबों को पक्के आवास, पांच लाख तक का मुफ्त इलाज, पीने के लिए नल से शुद्ध जल, गांव-बस्ती तक पक्की सड़कों का जाल फैलाने का कार्य कर रहे हैं। हम लोग देश की धरती को भी भारत माता कहते हैं। मध्यप्रदेश की सरकार महिलाओं को सरकारी नौकरियों में महिलाओं को आरक्षण देने के साथ नगरीय निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दे रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार जल्दी ही महिलाओं को देश के संसद और राज्यों की विधानसभाओं में भी 50 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए कानून बनाने जा रही है। ■

# सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचायें - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी दूरदर्शी नीतियों और कार्यों से विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता बने।**
- **भाजपा सरकारें सभी समाज वर्गों के कल्याण और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही हैं।**
- **भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाकर अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपनी नीतियों और कार्यों से देश की जनता की जिंदगी संवारने का कार्य किया है। भाजपा सरकारें बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं, इन सभी अच्छे कार्यों को जनता तक पहुंचाना कार्यकर्ताओं का दायित्व है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा अनेकों योजनाएं चलाकर हर समाज वर्ग के कल्याण का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी ने पीएम आवास योजना के तहत हर गरीब को पक्के आवास देने के साथ पीएम सड़क योजना के तहत गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछाया। उज्ज्वला योजना के तहत देशभर के करोड़ों उपभोक्ताओं को गैस के कनेक्शन उपलब्ध कराने के साथ आयुष्मान योजना के तहत गरीबों को पांच लाख रूपए तक का निःशुल्क इलाज कराने, प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश की सवा करोड़ लाडली बहनों को प्रति माह 1500 रूपए प्रदान किए जा रहे हैं, जो महिलाओं को सम्मान दिलाकर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। लाड़ली लक्ष्मी योजना में 50 लाख के करीब बेटियों को लखपति बनाया गया है। इन योजनाओं के अलावा भी कई योजनाएं भाजपा सरकारों द्वारा चलाई जा रही हैं जिनसे गरीब, युवा, नारी शक्ति और किसानों का सशक्तिकरण हो रहा है। भाजपा कार्यकर्ता केंद्र और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की उपलब्धियां, उल्लेखनीय

कार्य जन-जन तक पहुंचाकर भाजपा संगठन को और बुलंदियों तक पहुंचाएं।

भाजपा की विचारधारा सभी को साथ लेकर चलने की है। जनसंघ के गठन से लेकर आज तक हमारी पार्टी की विचारधारा नहीं बदली और भाजपा ने अपनी विचारधारा से कभी समझौता नहीं किया। यही कारण है कि भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और परिश्रम से विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत का मान-सम्मान वैश्विक स्तर पर बढ़ा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से अग्रसर है। यह हमारे संगठनात्मक शक्ति के कारण ही संभव हो सका है। भाजपा अपने कार्यकर्ताओं को विचारधारा के साथ पार्टी की रीति-नीति बताने के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण वर्ग भी चलाती रहती है। सभी कार्यकर्ताओं को भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाकर अधिक से अधिक लोगों को संगठन से जोड़ने का कार्य करना है। प्रत्येक कार्यकर्ता को उसकी योग्यता और पार्टी की आवश्यकता के अनुसार जिम्मेदारी दी जाती है। सभी को एक परिवार की तरह काम करना चाहिए। यदि दूसरे की कोई गलती हो तो उसे माफ करें, लेकिन अपनी गलती को जीवनभर याद रखें, ताकि फिर से वही गलती कभी न हो। हम राजनीति में सत्ता के लिए नहीं, बल्कि एक मजबूत विचारधारा और कार्यपद्धति के लिए आए हैं, जिससे देश सही दिशा में आगे बढ़ सके। हर बूथ को मजबूत करते हुए हम सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास करें।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्रीराम राजा लोक के निर्माण के लिए पहले 85 करोड़ और फिर 100 करोड़ की राशि स्वीकृत की है। ओरछा में स्थित श्रीरामलला का मंदिर न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। जहां श्रीराम को भगवान के रूप में नहीं, बल्कि राजा के रूप में पूजा जाता है। भाजपा अपनी विचारधारा पर मजबूती से चल रही है, जबकि कांग्रेस की अपनी कोई विचारधारा नहीं है। देश के आजाद होने के बाद महात्मा गांधी जी ने कांग्रेस को समाप्त करने की बात कही थी, और आज कांग्रेस देश भर में विलुप्त हो रही है। भाजपा का लक्ष्य केवल विचारधारा आधारित विकास है, और हमें इस विचारधारा के प्रचार-प्रसार में हर संभव योगदान देना चाहिए। पार्टी की जड़ें जनता से जुड़ी हुई हैं, और इस मजबूती का श्रेय कार्यकर्ताओं को जाता है, जो न केवल चुनावों के समय, बल्कि हर दिन जनता से जुड़े रहते हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरित होकर भाजपा संगठन निरंतर समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में जुटा हुआ है।

''गांव-बस्ती चलो अभियान'' संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस अभियान के माध्यम से सामाजिक समरसता, जनभागीदारी और सशक्त संगठन निर्माण की दिशा को भी बल मिलेगा। अभियान के माध्यम से कार्यकर्ता गांव-गांव और बस्तियों में जाकर आमजन से संवाद स्थापित करें, उनकी समस्याएं जानें और सरकार की योजनाओं की जानकारी दें। प्रत्येक कार्यकर्ता को कार्यकर्ता भाव के साथ कार्य करते हुए बूथ को मजबूत बनाना है, ताकि आने वाले सभी चुनावों में भाजपा को प्रचंड विजय प्राप्त हो। भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि एक विचार और मिशन है, जो देश के हर वर्ग के उत्थान और उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित है। ▪

# महिला भागीदारी के बिना 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था का सपना अधूरा

सीए अखिलेश जैन

कांग्रेस और विपक्ष ने निहित स्वार्थों में लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर किया

भारत लोकतंत्र की जननी है, भारत को मदर ऑफ डेमोक्रेसी कहा जाता है और भारत की आजादी के स्वर्णिम काल में भारत में एक अति महत्वपूर्ण, अत्यावश्यक व दूरदृष्टि से भरा निर्णय होते-होते रह गया, यह निर्णय केवल राजनीतिक निर्णय भर नहीं था। मातृशक्ति वंदन अधिनियम को लागू करना केवल राजनैतिक निर्णय कहना, निर्णय के साथ नाइंसाफी है। इस निर्णय के दूरगामी परिणामों का विश्लेषण करना अत्यावश्यक है।

महिलाएँ, पंचायत से लेकर स्थानीय निकायों का नेतृत्व काफी समय से कर रही हैं। अगर महिलाओं को संसद व विधानसभाओं में आरक्षण का लाभ मिल जाता है, तो तमाम राजनैतिक दलों को महिलाओं की उन्नति का नारा देकर काम निकालने की जगह वास्तव में महिला प्रतिनिधियों को संसद व विधानसभाओं के लिए अवसर प्रदान करना पड़ता और धीरे-धीरे महिला नेतृत्व समय के साथ परिपक्वता को प्राप्त कर लेता।

जिस देश को लोकतंत्र की जननी कहा जाता है, उसी देश में 50 प्रतिशत आबादी को नीति-निर्णय में भागीदारी से दूर रखने का बहुत दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास हुआ है, लोकतंत्र की दुहाई देने वालों ने लोकतंत्र की जड़ों को सींचने की जगह, लोकतंत्र की जड़ों पर मठ्ठा डाल दिया, वो भी केवल निहित स्वार्थों के चलते।

भारत की आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक प्रगति का आधार भारत का लोकतंत्र है। लोकतंत्र व संविधान ने भारत के प्रत्येक नागरिक को समान नागरिक अधिकार प्रदान किये हैं। देश आज उस मोड़ पर आकर खड़ा है जहाँ से विकसित भारत@2047, 5 ट्रिलियन डॉलर कि अर्थव्यवस्था का सपना संजोये हुआ है। आजादी के 78 वर्षों के बाद भी महिलाओं का योगदान विनिर्माण क्षेत्र में 27 प्रतिशत तक ही पहुँच पाया है। वो भी मोदी सरकार के तमाम प्रयासों के बाद, अगर भारत को विकसित भारत@2047 तथा 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य निर्धारित समय सीमा में हासिल करना है तो देश की 50 प्रतिशत आबादी को घरों से बाहर निकाल कर देश निर्माण में भागीदार बनाना ही पड़ेगा।

महिलाओं की नीति-निर्णय में हिस्सेदारी निश्चित रूप से सरकार के नीति-निर्णयों को प्रभावित करती, महिलाओं के पक्ष को मजबूती मिलती, 50 प्रतिशत आबादी का योगदान सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ता, महिला सुरक्षा और मजबूत होती, महिलाओं को तमाम नए अवसर मिलते, विशिष्ट परिवारों की महिलाओं का वर्चस्व टूटता, सामान्य परिवारों और छोटी-छोटी जगह की महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक निर्णयों में भागादारी होती, वास्तव में सम्पूर्ण देश की महिलाओं का वास्तविक प्रतिनिधित्व होता, निश्चित रूप से प्रगति का पहिया अपने आप तीव्र गति से दौड़ता।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को लागू करने में आने वाली रुकावटें जब तक जारी रहेंगी, नीति-निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी का पक्ष जब तक जनसामान्य की महिलाओं तक पहुँच कर मजबूत व स्थाई नहीं होता, तब तक विकसित भारत@2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य भारत में कठिनाईयों से भरा रहेगा, महिलाओं की नीति-निर्णयों में भागीदारी के बिना अगर एक बार विकसित भारत@2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य किसी तरह हासिल भी कर लिया जाता है तो उसके स्थायित्व पर शंका सदैव बनी रहेगी। ▪

**(लेखक- भाजपा मध्यप्रदेश के प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं)**

# कार्यकर्ता संगठन की आत्मा, शक्ति और प्राण हैं - शिवप्रकाश जी

पार्टी मंडल प्रशिक्षण के दूसरे चरण को पूर्ण कर जिला स्तर के प्रशिक्षण वर्गों की ओर आगे बढ़ रही है। देशभर में अभी तक 13 हजार से अधिक प्रशिक्षण वर्ग सफलता पूर्वक संपन्न हो चुके हैं। मध्यप्रदेश में लगभग साढ़े दस लाख से अधिक कार्यकर्ताओं की सहभागिता उल्लेखनीय रही। यह संगठन की मजबूती और कार्यकर्ताओं की सक्रियता का प्रमाण है। प्रशिक्षण केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसका अनौपचारिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। रात्रि निवास, आपसी संवाद और सामूहिक सहभागिता के माध्यम से कार्यकर्ताओं के बीच आत्मीयता और वैचारिक स्पष्टता विकसित होती है। जिला स्तरीय प्रशिक्षण वर्ग में इसका पूरा ध्यान रखा जाए, ताकि लोगों से आपसी संवाद स्थापित हो सके। संगठन का मूल उद्देश्य श्रेष्ठ, अनुशासित और राष्ट्रनिष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण करना है। प्रशिक्षण में प्राण डालने की आवश्यकता होती है यह हमारी श्रद्धा का विषय है, इसे बोझ नहीं समझना चाहिए। वक्ता और व्यवस्था के नाते यदि हम पूरी तैयारी के साथ कार्य करेंगे, तो हमारे प्रशिक्षण वर्ग निश्चित ही सफल और यशस्वी होंगे। इससे

सीखने का वातावरण बनेगा, जहां सभी कार्यकर्ता एक साथ रहकर, मिलकर सीखेंगे और भविष्य का नेतृत्व तैयार करेंगे। प्रशिक्षण वर्ग में वक्ताओं को अध्ययन और पूर्ण तैयारी के साथ प्रशिक्षण में जाना चाहिए,ताकि इसका लाभ कार्यकर्ताओं को मिल सके।

महान उद्देश्य वाले लोगों की हमें आवश्यकता है। प्रशिक्षण मनुष्य को गढ़ने की एक सतत् प्रक्रिया है। कार्यकर्ता हमारे प्राण हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं- हम न झुकते हैं, न रुकते हैं और न ही टूटते हैं। यह शक्ति उन समर्पित कार्यकर्ताओं से आती है, जो पार्टी के विचारों के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य ऐसे ही विचारवान और समर्पित कार्यकर्ताओं का निर्माण करना है। आज भले ही पार्टी से जुड़े कार्यकर्ताओं को भी अपेक्षाएं हों कि हम उन्हें कुछ दे सकें, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब हमारे पास देने के लिए कुछ नहीं था। उस समय हमारे कार्यकर्ताओं के पास केवल विचार की शक्ति और नेतृत्व के प्रति अटूट विश्वास था। यही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। कार्यकर्ता ही हमारे संगठन के प्राण हैं, और उनके विचार, समर्पण व विश्वास के बल पर ही पार्टी निरंतर आगे बढ़ रही है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि हम हारते नहीं हैं, बल्कि या तो जीतते हैं या फिर सीखते हैं। वर्ष 1984 में जब हमारी पार्टी की केवल 2 सीटें आई थीं, तब भी हमारी विचारधारा नहीं बदली और हमारे सिद्धांत नहीं बदले हैं। सतत् चलते रहे और आज विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बन गए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का देश में डिजिटल ट्रांजेक्शन पर जोर रहा और हमसे अमेरिका जैसे देश पीछे है। इसलिए आवश्यक है कि कार्यकर्ता भी डिजिटल भुगतान को अपने स्वभाव में शामिल करें, इससे न केवल आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ होती है, बल्कि सहभागिता और अपनापन भी बढ़ता है। ■

# स्वदेशी व सादगी से परिपूर्ण हो प्रशिक्षण वर्ग - अजय जामवाल

संगठन के मामले में मध्यप्रदेश एक आदर्श संगठन है। राष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी प्रशंसा होती है। मंडल प्रशिक्षण वर्ग में 100 प्रतिशत प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुए। तय समय पर मंडल का प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होना अनुशासन और संगठन के प्रति निष्ठा व लगन को रेखांकित करता है। जिला प्रशिक्षण वर्ग स्वदेशी और सादगी से परिपूर्ण होना चाहिए। हर प्रशिक्षण वर्ग में कुछ नया सीखने को मिलता है। जो कार्यकर्ता पूर्व के वर्षों में आयोजित प्रशिक्षण वर्गों में शामिल हुए थे, उन्हें भी कुछ नया सीखने को मिलेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रशिक्षण वर्ग के विषय वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर तय होते हैं। भाजपा

के कार्यकर्ता बहुत ही अनुशासित तरीके से कार्य करने के लिए जाने जाते हैं। प्रशिक्षण वर्ग में मिलने वाले अनुभवों से कार्यकर्ता पार्टी संगठन को आगे ले जाने के लिए कार्य करें। कार्यकर्ताओं की निष्ठा, समर्पण से ही भाजपा विश्व का नंबर एक दल बना है। अगली पीढ़ी के कार्यकर्ताओं में राष्ट्रभाव जागृत करना भी आवश्यक है, इसके लिए भी प्रशिक्षण वर्ग आवश्यक होता है। कार्यकर्ताओं को गढ़ने के लिए, उन्हें मजबूत बनाने के लिए और लोगों को अपनी विचारधारा से जोड़ने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक होता है। कार्यकर्ताओं में विश्वास बढ़ाना, उनका निर्माण करना प्रशिक्षण वर्ग का अहम भाग होता है। जिला प्रशिक्षण वर्ग में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, अपने जिले के विकास कार्यों, उल्लेखनीय कार्यों और पार्टी के जिले में हुए बड़े आंदोलनों, आयोजनों के छाया चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जानी है। इन प्रदर्शनियों से नए कार्यकर्ताओं को पार्टी की कार्यपद्धति और राष्ट्र के लिए किए गए योगदान को समझा जा सकता है। ■

# प्रशिक्षण कार्यपद्धति से अवगत कराने का माध्यम

- **प्रशिक्षण पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।**

भाजपा में प्रशिक्षण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। प्रशिक्षण पार्टी के कार्यकर्ताओं को विचारधारा, नीतियों और संगठनात्मक कार्यों से अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम है। भाजपा की एक विशेष विचारधारा और कार्यपद्धति है, जो निरंतर विकसित हो रही है। हर दो वर्ष में पार्टी का यह कार्यक्रम सभी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित किया जाता है, जिसमें पार्टी के इतिहास, नीतियों, और कार्यपद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी जाती है। मध्यप्रदेश में 1313 मंडलों में प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुए हैं। मध्यप्रदेश में सभी मंडलों में शत प्रतिशत वर्ग सम्पन्न हुए, जिसमें एक दिन का रात्रि वर्ग और दो दिन का विस्तृत प्रशिक्षण सत्र शामिल था। अब अगले चरण में प्रदेश के जिलों में प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किए जाएंगे, जिनमें लगभग 11 विषयों पर सत्र होंगे। इन सत्रों में पार्टी के कार्यकर्ताओं को सरकारी योजनाओं, पार्टी की कार्यपद्धति, पार्टी का इतिहास, विचारधारा आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण वर्ग का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं को पार्टी की कार्यपद्धति से पूरी तरह अवगत कराना है, ताकि पार्टी की विचारधारा और विशेष पहचान जनता के बीच स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सके। भाजपा के कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में पार्टी के दृष्टिकोण और कार्यों को प्रभावी ढंग से फैलाने में सक्षम हों, यही हमारा लक्ष्य है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रशिक्षण केवल व्यक्तिगत ज्ञान में वृद्धि नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक और सशक्त समाज की दिशा में सही कदम बढ़ाने का अवसर है। प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और अनुभव का उपयोग समाज की बेहतरी और राष्ट्र निर्माण के लिए करना है। ▪

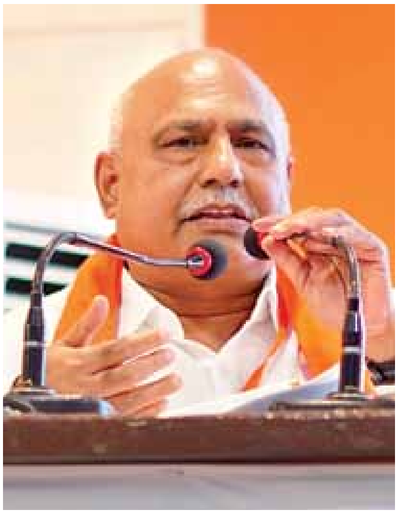

संगठन की विचारधारा व संगठनात्मक कार्यों को कार्यकर्ताओं तक पहुंचाने में प्रशिक्षण वर्ग आवश्यक।

# बाबा साहब की दूरदर्शी सोच - हेमंत खण्डेलवाल

## समरसता, समानता और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं डॉ. भीमराव अंबेडकर।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की दूरदर्शी सोच हर नागरिक को आगे बढ़ने, सशक्त बनने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी की ऊर्जा देती है। उनके आदर्शों पर चलकर हम एक सशक्त समता मूलक और विकसित भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर अग्रसर हैं। सामाजिक उत्थान और समावेशी विकास की दिशा में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार निरंतर सकारात्मक प्रेरणा प्रदान करते हैं।

उनके सिद्धांत समाज में समानता, न्याय और समरसता की मजबूत नींव स्थापित करते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश में विकास और सुशासन को नई दिशा दे रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के प्रयासों से समाज के हर वर्ग को आगे बढ़ने के अवसर मिल रहा है। यह कार्य डॉ. भीमराव अंबेडकर के सपनों को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। ▪

# प्रशिक्षण वर्ग से व्यक्तित्व निर्माण

मध्यप्रदेश में कम समय में मंडल का प्रशिक्षण वर्ग लगभग संपन्न हो गया है। यही है भाजपा के कार्य करने की पद्धति। भाजपा संगठन की कार्यपद्धति और कार्यकर्ताओं के कार्य करने के तरीके की वजह से ही भाजपा को विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनाया है। प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व निर्माण के लिए होता है। प्रशिक्षण वर्ग से कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व निर्माण में निखार आता है। प्रशिक्षण से कार्यकर्ता में स्वयं का भी निखार आता है, जिससे पार्टी की कार्यपद्धति और विचारधारा को आगे बढ़ाना और आसान हो जाता है। देवी अहिल्या बाई ने दो हजार साल पहले वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के साथ भगवान महाकाल से लेकर अनेकों मंदिरों के पुनर्निर्माण व जीर्णोद्धार कराया था। यही भारतीय दर्शन है। हमारी पार्टी के संगठन की विशेषता है कि अपने कार्यकर्ताओं को निखारने और उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए कार्य करती है। देश के बाकी राजनीतिक दल सिर्फ चुनाव लड़ने और राजनीति करने के लिए कार्य करते हैं। भाजपा राष्ट्र प्रथम के भाव से जनता की सेवा के लिए कार्य करती है। भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए सत्ता केवल जनता की सेवा करने का माध्यम है।

पार्टी कार्यकर्ता संगठन के कार्यों के साथ सरकार की उपलब्धियां जनता तक पहुंचाएं। पार्टी कार्यकर्ता जनता को बताएं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र एवं मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार जनता की सेवा का कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश की संसद और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम लेकर आए हैं, लेकिन कांग्रेस और विपक्षी दलों ने इसे पारित नहीं होने दिया। शाहबानो ने तीन तलाक को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। न्यायालय का फैसला भी उसके पक्ष में आया, लेकिन तत्कालीन कांग्रेस की केंद्र सरकार ने कानून बनाकर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को पलट दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तीन तलाक का कानून बनाकर मुस्लिम महिलाओं को उनका अधिकार दिलाया और सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का पालन कराकर अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण भी करवाया। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार गरीब मरीजों को अस्पताल पहुंचाने के लिए हेलीकॉप्टर एंबुलेंस सेवा शुरू की है। किसी के साथ ऐसी घटना न हो, लेकिन अगर इलाज के दौरान किसी का निधन हो जाता है तो सम्मान के साथ उसका शव घर तक पहुंचाने के लिए निःशुल्क एंबुलेंस भी संचालित की जा रही हैं। किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष मना रही है। राज्य सरकार 16 विभागों की एक कार्य योजना बनाकर कृषि को लाभ का धंधा बनाने के साथ कृषि को उद्योग और रोजगार से भी जोड़ रही है। पार्टी कार्यकर्ता संगठन को मजबूत करने के साथ सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। ■

**भाजपा संगठन की कार्यपद्धति और कार्यकर्ताओं के कार्य करने के तरीके की वजह से ही भाजपा को विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनाया है। प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व निर्माण के लिए होता है। प्रशिक्षण वर्ग से कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व निर्माण में निखार आता है।**

# भाजपा की कल्पनाशीलता है सेवा का प्रकल्प - डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के लगातार विस्तार के लिए कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने आयुष्मान योजना बनाकर गरीबों, वंचितों और बुजुर्गों को पांच लाख रूपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा प्रदान की है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल की कार्यकर्ताओं और प्रदेश की जनता की सेवा के प्रति उनके लगन और कल्पनाशीलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है पार्टी का 'सेवा प्रकल्प'। यह योजना भाजपा संगठन और सरकार की जनता के प्रति सेवा की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही है। वर्तमान में मध्यप्रदेश में 55 जिले हैं और 52 जिलों में मेडिकल कॉलेज संचालित हैं, निर्माणाधीन हैं या बनाने के लिए टेंडर प्रक्रियाधीन हैं। प्राइवेट पब्लिक पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल पर हमारी सरकार एक रुपये की दर से 25 एकड़ जमीन मेडिकल कॉलेज निर्माण के लिए उपलब्ध करा रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश भर में बहुत तेज गति से मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। केंद्र में जब लगातार कांग्रेस की सरकारें थीं, मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) के जरिए ऐसे कड़े नियम बनाए थे कि मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए अनुमति ही नहीं मिल पाती थी। मेडिकल कॉलेज नहीं होने से मध्यप्रदेश सहित देशभर की बौद्धिक प्रतिभाओं का पलायन होता रहा, लेकिन कांग्रेस पार्टी और उसकी सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनने के बाद नियमों में सुधार किया गया और अब लगातार मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। नियमों में सुधार कर चिकित्सक बनने वाले युवाओं को बड़ी सौगात दी है। आने वाले वर्षों में मध्यप्रदेश के सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज संचालित हो जाएंगे। मेडिकल कॉलेजों के संचालन के लिए जिला अस्पतालों को भी देने का कार्य किया जा रहा है। सभी मेडिकल कॉलेजों का निर्माण समय-सीमा में पूरा हो, सरकार इस पर भी पूरा ध्यान दे रही है। मेडिकल कॉलेज के लिए आवश्यक स्वास्थ्य अमला जैसे नर्सिंग स्टॉफ, पैरामेडिकल स्टॉफ व अन्य टेक्निकल स्टॉफ की भी समय पर उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। ▪

# राजनीति का मतलब, जनता की सेवा - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी के विश्वास व मुख्यमंत्री की सक्रियता से जनता के दुख दूर करेगा 'सेवा प्रकल्प'।**
- **मध्यप्रदेश के बड़े शहरों तक चिकित्सा प्रकोष्ठ के 'सेवा प्रकल्प' का विस्तार किया जाएगा।**

संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन और उनके सिद्धांत समाज के हर वर्ग को समानता और सम्मान का मार्ग दिखा रहे हैं। बाबा साहब ने जिस समाज का सपना देखा था, जिसमें हर व्यक्ति को समान अधिकार मिले और समाज का सबसे वंचित वर्ग भी उन्नति की मुख्य धारा में शामिल हो, उसे साकार करने की दिशा में मध्यप्रदेश भाजपा ने सेवा और समर्पण का संदेश देते हुए 'सेवा प्रकल्प' की शुरूआत की है। 'सेवा प्रकल्प' भाजपा संगठन की एक महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व पहल है। राजनीति का मतलब सिर्फ पद प्राप्त करना नहीं जनता

की सेवा करना है। भाजपा संगठन 'सेवा प्रकल्प' के जरिए कार्यकर्ताओं और उनके परिजनों की सेवा का संकल्प लिया है। जनता की सेवा भी हमारा लक्ष्य है। यह केवल एक योजना नहीं, बल्कि यह समाज के आखिरी व्यक्ति तक सहायता पहुंचाने का एक संकल्प है। भाजपा संगठन ने प्रदेश कार्यालय में स्थापित 'सेवा प्रकल्प' को आगामी दिनों में विस्तार देते हुए प्रदेश के बड़े शहरों में भी स्थापित करने की योजना बना रहा है, जहां जरूरतमंद को मार्गदर्शन, सहायता और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाऐंगे। इस पहल में चिकित्सा प्रकोष्ठ की अहम भूमिका है, जो संगठन, सरकार और समाज के बीच एक सेतु का कार्य करेगा। अब मरीजों को इलाज के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं होगी। उन्हें एक सरल, सम्मानजनक और त्वरित व्यवस्था प्राप्त होगी, जो उनके इलाज और कल्याण को सुनिश्चित करेगी। पार्टी कार्यालयों को अब स्वास्थ्य सेवाओं और जरूरतमंदों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने हमेशा गरीबों और जरूरतमंदों के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। आयुष्मान भारत जैसी दूरदर्शी और क्रांतिकारी योजनाओं के जरिए, प्रधानमंत्री जी ने यह सुनिश्चित किया है कि प्रत्येक नागरिक, विशेषकर वंचित वर्ग के लोगों को निःशुल्क और सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। यह प्रतिबद्धता गरीबों के स्वास्थ्य अधिकारों को सशक्त बनाती है और उनके जीवन की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार इस दृष्टिकोण को पूरी तरह से अपनाते हुए हर नागरिक को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए लगातार प्रयासरत है। प्रधानमंत्री जी की दृढ़निष्ठा और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की नीतियों का सामूहिक असर, राज्य के हर व्यक्ति को बेहतर और सुलभ इलाज उपलब्ध कराएगा, और यह हमारी प्रतिबद्धता है कि हम बाबा साहब के समतामूलक समाज की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। ▪

# प्रशिक्षण वर्ग आवश्यक

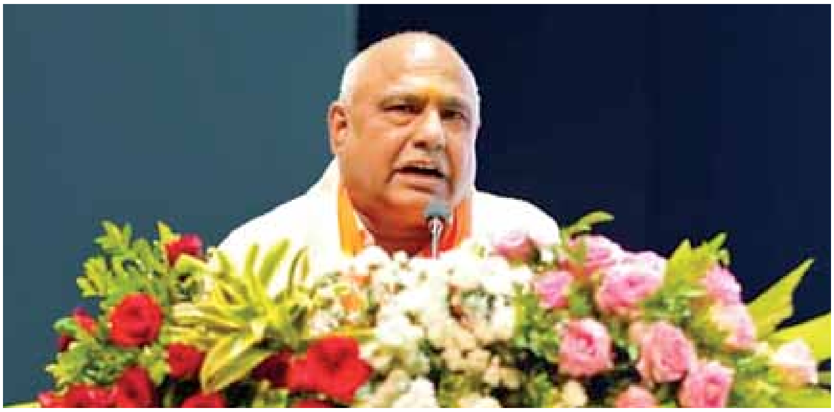

**प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ता को पार्टी की कार्यपद्धति से पूरी तरह अवगत कराना है, जिससे पार्टी की विचारधारा और विशेष पहचान जनता के बीच स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सके। भाजपा के कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में पार्टी के दृष्टिकोण और कार्यों को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाने में सक्षम हों, यही लक्ष्य है।**

भाजपा में प्रशिक्षण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। प्रशिक्षण पार्टी के कार्यकर्ताओं को विचारधारा, नीतियों और संगठनात्मक कार्यों से अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम है। प्रशिक्षण महाभियान के पहले दौर में मध्यप्रदेश के 1313 मंडलों में कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें विभिन्न विषयों पर वक्ताओं ने कार्यकर्ताओं को महत्वपूर्ण जानकारी दी। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ता को पार्टी की कार्यपद्धति से पूरी तरह अवगत कराना है, जिससे पार्टी की विचारधारा और विशेष पहचान जनता के बीच स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सके। भाजपा के कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में पार्टी के दृष्टिकोण और कार्यों को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाने में सक्षम हों, यही लक्ष्य है। कार्यकर्ता प्रशिक्षण को पूरी तरह से आत्मसात करें और पार्टी के कार्यों में अपनी भूमिका को मजबूती से निभाएं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पार्टी के संगठनात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कार्यशाला में देश के 6 राज्यों से लगभग 348 कार्यकर्ता शामिल हुए हैं। इन कार्यकर्ताओं को विभिन्न विषयों में पारंगत वक्ताओं से प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला, और वे अपने प्रदेशों के जिलों में आयोजित होने वाली कार्यशालाओं में इन विषयों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

विकास का मार्ग तभी खुलता है जब सभी मिलकर सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। समाज का असली विकास तभी संभव है जब सब एक-दूसरे की सफलता में योगदान दें और समाज के प्रत्येक सदस्य को सशक्त बनाने के लिए प्रयास करें। भाजपा का प्रशिक्षण वर्ग इन्हीं उद्देश्यों के लिए है। प्रशिक्षण वर्ग केवल व्यक्तिगत ज्ञान में वृद्धि नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक और सशक्त समाज की दिशा में सही कदम बढ़ाना है। प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और अनुभव का उपयोग समाज की बेहतरी और राष्ट्र निर्माण के लिए करना है। यही समय है जब हम सभी कार्यकर्ता मिलकर समाज और राष्ट्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए अपना योगदान दें, क्योंकि सामूहिक प्रयास से ही राष्ट्र का सच्चा विकास संभव है। प्रशिक्षण वर्ग से कार्यकर्ताओं को न केवल व्यक्तिगत, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरणा मिलती है। पार्टी कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारियों को सही रूप में निभाने और पार्टी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्य करें। ▪

# बहनों का आक्रोश लाएगा जागृति - हेमंत खण्डेलवाल

- प्रधानमंत्री जी महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने 'नारी शक्ति वंदन' कानून लाए हैं।
- जिस समाज व राष्ट्र ने महिलाओं को अधिकारों से वंचित किया वह समाप्त हो गए।
- कांग्रेस ने हमेशा से महिलाओं को मिलने वाले अधिकार का विरोध किया है।
- 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम का विरोध देश की आधी आबादी का अपमान है।
- कांग्रेस और विपक्षी दलों ने महिलाओं के अधिकारों पर कुठाराघात किया।
- प्रधानमंत्री जी महिलाओं को सम्मान देने के साथ सशक्त बना रहे हैं।
- पार्टी का हर कार्यकर्ता अपने बूथ को और मजबूत करने में जुटे।

बहनें समाज की शक्ति हैं। जिस समाज और राष्ट्र में महिलाओं को अधिकारों से वंचित किया वे समाज और राष्ट्र समाप्त हो गए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकारें महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही है। लोकसभा में जिस तरह विपक्ष ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम की खिलाफत की है उसके खिलाफ महिलाएं आक्रोशित हैं। महिलाओं का यह आक्रोश हर गली और गांव सहित देश में जागृति का काम करेगा। प्रधानमंत्री जी ने देश की आधी आबादी को उनका संवैधानिक अधिकार देने का ऐतिहासिक प्रयास किया था, लेकिन कांग्रेस और विपक्षी दलों ने हमारी बहनों को अधिकार नहीं मिलने दिया। कांग्रेस पार्टी और उसके नेता नहीं चाहते कि महिलाएं बराबरी का दर्जा प्राप्त करें। कांग्रेस की सोच हमेशा से महिला विरोधी रही है।

कांग्रेस ने नारी शक्ति वंदन के रूप में सिर्फ एक अधिनियम का विरोध नहीं किया है। कांग्रेस और विपक्षी दलों ने महिलाओं के अधिकारों पर कुठाराघात किया है। प्रधानमंत्री जी निःशुल्क शौचालय, उज्ज्वला गैस, नल से जल, मुद्रा योजना, तीन तलाक को खत्म कर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं। यह पहला मामला नहीं है, जब कांग्रेस पार्टी ने महिलाओं के अधिकार छीनने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तीन तलाक को लेकर कानून बनाकर देश की करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को उनका अधिकार दिलाया है।

प्रधानमंत्री जी ने महिलाओं के सम्मान के लिए स्वच्छता अभियान के तहत देशभर में दस करोड़ से अधिक इज्जत घर बनवाए हैं। प्रधानमंत्री जी गरीबों को पीएम आवास योजना के तहत पक्के आवास बनाकर दे रहे हैं, जिसमें मकान का मुखिया घर की महिला को बनाया जा रहा है। स्व-सहायता समूहों के जरिए मध्यप्रदेश और देश की करोड़ों बहनों को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है। लखपति दीदी योजना के तहत महिलाओं को लखपति बनाया जा रहा है। जब हमारी बेटियां सेना में भी अदम्य साहस का परिचय दे रही हैं तो उन्हें अधिकार संपन्न बनाने में किसी भी पार्टी को रोड़ा नहीं अटकाना चाहिए। हमें गांव-गांव, घर-घर संपर्क कर सभी महिलाओं को बताना है कि कांग्रेस पार्टी और उनके सहयोगी दलों की वजह से महिलाओं को देश की संसद और राज्यों की विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण नहीं मिल सका है।

पार्टी का हर कार्यकर्ता अपने-अपने बूथ को और मजबूत बनाने में जुटे। जितना अधिक बूथ मजबूत होगा, भाजपा का संगठन उतना अधिक सशक्त बनेगा। संगठन की मजबूती का आधार ही बूथ है। सभी कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना है। बूथ एवं शक्ति केंद्र स्तर पर संगठन की नियमित बैठकें होती रहें। पार्टी कार्यकर्ता क्षेत्र में लगातार संपर्क बनाएं और भाजपा सरकार के साथ संगठन के कार्यों से जनता को अवगत कराते रहें। कार्यकर्ताओं की सक्रियता, निष्ठा और समर्पण के कारण ही भारतीय जनता पार्टी विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना है। ▪

# डिजिटल जनगणना सफल बनाएं

- मैं उन सभी को बधाई देता हूँ, जिन्होंने भारत के न्यूक्लियर प्रोग्राम में अपना कीमती योगदान दिया है।
- भारत की विंड एनर्जी बनाने की कैपेसिटी अब 56 गीगावाट से ज्यादा हो गई है। पिछले एक साल में ही, लगभग 6 गीगावाट की नई कैपेसिटी जोड़ी गई है।
- आज दुनिया जिस तनाव और टकराव से गुजर रही है, उसके बीच बुद्ध की शिक्षाएं और भी जरूरी हो गई हैं।
- इस साल की बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी भी बहुत यादगार रही। एयरफोर्स, आर्मी, नेवी और CAPF बैंड ने शानदार परफॉरमेंस दी।
- पहली बार, बीटिंग रिट्रीट का म्यूजिक WAVES OTT पर भी उपलब्ध है।
- जब हम नेचर को समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं और उसके साथ तालमेल बिठाकर रहते हैं, तो बदलाव साफ दिखता है।
- आज, पूरे नॉर्थईस्ट में बाँस सेक्टर फल-फूल रहा है। लोग लगातार इसमें नए-नए बदलाव कर रहे हैं और इसकी वैल्यू बढ़ा रहे हैं।
- मैं आप सभी से www.abhilekh-patal.in पर जाने का आग्रह करता हूँ। इससे आपको हमारे इतिहास का एक शानदार अनुभव मिलेगा।
- हर साल देश भर से लगभग 6 लाख स्टूडेंट मैथमेटिकल ओलंपियाड प्रोग्राम में हिस्सा लेते हैं।
- राष्ट्रीय जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं है। यह हम सभी की जिम्मेदारी है।

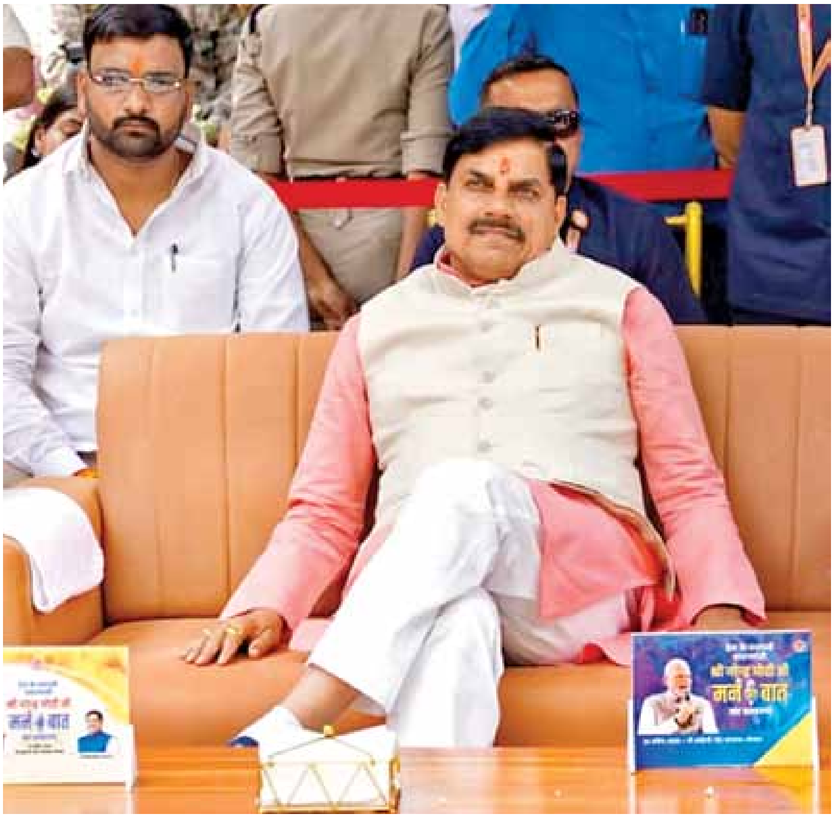


**भारत के सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम ने खेती से लेकर मॉडर्न इनोवेटर्स तक, सभी की बहुत मदद की है।**

हमारे न्यूक्लियर साइंटिस्ट्स ने एक और बड़ी कामयाबी के साथ भारत का गौरव बढ़ाया है, क्योंकि तमिलनाडु के कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर ने Criticality हासिल कर ली है।

- आज, भारतीय Cheese दुनिया भर में अपनी पहचान बना रहा है। चाहे ब्रेकफास्ट हो, लंच हो या डिनर, भारत का स्वाद दुनिया की थाली तक पहुँच रहा है।
- कुछ ही दिनों में, 9 मई को, "पोच्चीशे बोइशाख" के मौके पर, हम गुरुदेव टैगोर की जयंती मनाएंगे।

## इस बार 'मन की बात' की शुरुआत देश की एक ऐसी बहुत बड़ी उपलब्धि से करते हैं।

भारत ने विज्ञान को हमेशा देश की प्रगति से जोड़कर देखा है। इसी सोच के साथ हमारे वैज्ञानिक Civil Nuclear Programme को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके प्रयासों से यह कार्यक्रम राष्ट्र

निर्माण में अहम् योगदान दे रहा है। इससे हमारी industrial growth को, energy sector को, healthcare sector को बहुत लाभ हुआ है। खेती किसानी से लेकर आधुनिक innovators को भी भारत के Civil Nuclear Programme ने बहुत मदद की है।

कुछ ही दिन पहले, हमारे Nuclear Scientist ने एक और बड़ी उपलब्धि से भारत का गौरव बढ़ाया है। तमिलनाडु के कलपक्कम में Fast Breeder Reactor ने Criticality हासिल कर ली है। दरअसल, Criticality वह stage है, जिसमें reactor पहली बार self sustaining nuclear chain reaction में सफलता हासिल करता है। इस stage का मतलब है reactor का operation phase में पहुंचना। भारत की nuclear energy journey में यह एक ऐतिहासिक milestone है। और बड़ी बात ये भी कि परमाणु reactor पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से निर्मित है।

इसे Breeder Reactor क्यों कहते हैं? इसके पीछे भी एक वजह है। यह एक ऐसा system है, जो ऊर्जा के उत्पादन के साथ-साथ भविष्य के लिए नया ईंधन भी खुद ही तैयार करता है।

मुझे मार्च 2024 का वह समय भी याद है, जब मैं कलपक्कम में reactor की core loading का साक्षी बना था। मैं उन सभी को बधाई देता हूँ, जिन्होंने, भारत के परमाणु कार्यक्रम में अपना अमूल्य योगदान दिया है। देशवासियों का जीवन बेहतर और आसान बनाने के लिए उनका यह प्रयास बहुत ही सराहनीय है। इससे विकसित भारत के हमारे संकल्प को एक नई ऊर्जा मिलेगी।

'मन की बात' में, मैं एक ऐसी शक्ति की बात करना चाहता हूँ, जो अदृश्य है, लेकिन, जिसके बिना हमारा जीवन एक पल भी ना चले। यही ताकत भारत को आगे बढ़ा रही है। यह हमारी पवन-शक्ति है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है -

**'वायुर्वा इति व्यष्टिः, वायुरवै समष्टिः।'**

अर्थात् वायु सिर्फ एक तत्व नहीं है, यह जीवन की ऊर्जा है, यह समष्टि की शक्ति है।

यही पवन-शक्ति भारत के विकास की नई कहानी लिख रही है। भारत ने हाल ही में पवन-ऊर्जा यानि Wind Energy में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अब भारत का wind energy generation capacity 56 gigawatt से अधिक हो चुकी है। पिछले एक साल में ही करीब 6 gigawatt नई क्षमता जुड़ी है। Wind energy में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया भी हमारी तरफ देख रही है।

भारत, wind energy capacity में दुनिया में चौथे स्थान पर है। यह हमारे इंजीनियरों की मेहनत है, यह हमारे युवाओं का परिश्रम है, यह देशी की सामूहिक इच्छा शक्ति का प्रतीक है।

गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान देश के अनेक राज्य इस sector में अपना परचम लहरा रहे हैं। गुजरात के कच्छ, पाटन, बनासकांठा जैसे क्षेत्र जहाँ पहले सिर्फ रेगिस्तान नजर आता था, आज वहाँ, बड़े renewable energy park बन रहे हैं। इसका लाभ युवाओं को मिल रहा है, नए अवसर बन रहे हैं, नई skills विकसित हो रही हैं, रोजगार के नए रास्ते खुल रहे हैं।

भारत के विकास के लिए सौर और पवन ऊर्जा जरूरी हैं। ये सिर्फ पर्यावरण की बात नहीं है - ये हमारे भविष्य की सुरक्षा है। इसमें हम सबकी भूमिका है। हमें बिजली बचानी है, हमें स्वच्छ ऊर्जा, clean energy अपनानी है। देश में हर स्तर पर ऐसे प्रयास जरूरी हैं। क्योंकि इन्हीं से बड़ा बदलाव आता है।

मई महीने की शुरुआत एक पावन अवसर के साथ होने जा रही है। कुछ ही दिनों में हम बुद्ध पूर्णिमा मनाएंगे। भगवान गौतम बुद्ध का जीवन संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने हमें सिखाया है कि शांति हमारे भीतर से शुरू होती है, स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय होती है। आज दुनिया जिस तरह के तनावों और संघर्षों से गुजर रही है। ऐसे समय में बुद्ध के विचार और भी अहम हो गए हैं।

दक्षिण अमेरिका के चिली में एक संस्था भगवान बुद्ध के विचारों को आगे बढ़ा रही है। लद्दाख में जन्मे ड्रबपोन ओत्जर रिनपोचे (Drubpon Otzer Rinpoche) के मार्गदर्शन में काम हो रहा है। ये संस्था ध्यान और करुणा को लोगों के जीवन से जोड़ रही है। कोचीगुआज घाटी में बना स्तूप लोगों को शांति का अनुभव कराता है। वाकई, यह देखकर गर्व होता है। भारत की प्राचीन धारा दुनिया तक पहुँच रही है। दूर-दराज के लोग भी इससे जुड़ रहे हैं।

बौद्ध परंपरा हमें प्रकृति से जुड़ना भी सिखाती है। भगवान बुद्ध को ज्ञान एक वृक्ष के नीचे मिला था। प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। देश में भी ऐसे प्रयास हो रहे हैं। कर्नाटक में Karma Monastery इसका अच्छा उदाहरण है। यह मठ एक जीवंत वन क्षेत्र है, जो, 100 एकड़ में फैला है। इस वन में 700 से अधिक देसी वृक्षों को संरक्षित किया गया है। बुद्ध का संदेश सिर्फ अतीत नहीं है। यह आज भी प्रासंगिक है और भविष्य के लिए भी जरूरी है। बुद्ध पूर्णिमा का यह अवसर प्रेरणा देता है। हम अपने जीवन में शांति बढ़ाएँ, करुणा अपनाएं और संतुलन के साथ आगे बढ़ें।

हमारे देश में अब 23 जनवरी, यानि, नेताजी सुभाष की जयंती से लेकर 30 जनवरी, यानि, गांधी जी की पुण्यतिथि तक गणतंत्र का महोत्सव मनाया जाता है। इसी महोत्सव का अहम् हिस्सा होता है - Beating Retreat. मैं आपसे Beating Retreat की चर्चा कर रहा हूँ, क्योंकि, इसके पीछे एक खास वजह है।

यह समारोह अलग-अलग bands की विविध संगीत परंपराओं को दर्शाता है। बीते कुछ सालों से इसमें भारतीय संगीत का समावेश बढ़ा है और ये देश के लोगों को भी बहुत पसंद आ रहा है। इस साल की Beating Retreat ceremony भी बहुत यादगार रही थी। Air Force, Army, Navy और C.A.P.F के bands ने बहुत ही अच्छी performance दी थी।

शानदार Music के साथ-साथ जानदार formations का ये कार्यक्रम, सबका ध्यान खींचता है। Air Force band ने सिंदूर formation बनाया। Naval Band ने मत्स्य यंत्र formation बनाया। वहीं, Army Band के performance में वंदे-मातरम् के 150 साल और cricket में भारत की सफलता को भी दर्शाया गया।

Beating Retreat के बीत जाने के बाद, ये सारी मेहनत, ये उपलब्धि धीरे-धीरे ओझल हो जाती थी, लेकिन, अब इसे लेकर बहुत ही अच्छा प्रयास हुआ है। Beating Retreat का music पहली बार WAVES OTT पर भी उपलब्ध है। आने वाले समय में यह दूसरे platforms पर भी मौजूद होगा - आप इसे जरूर सुनें। आपको अपनी Armed Forces और उनकी परंपराओं पर बहुत गर्व होगा।

पिछले कुछ वर्षों में देश के अलग-अलग हिस्सों से प्रकृति के संरक्षण की प्रेरक कहानियाँ सामने आई हैं। ये कहानियाँ हमें उम्मीद देती हैं और गर्व से भर देती हैं। मैं 'मन की बात' के

श्रोताओं से कुछ उदाहरण साझा करना चाहता हूँ। इनको सुनकर आपका मन प्रसन्न हो जाएगा। पहले, बात कच्छ के रण की। बरसात खत्म होते ही यहां की धरती जीवंत हो जाती है। हर साल लाखों Flamingo यहां आते हैं। पूरा इलाका गुलाबी रंग से रंग जाता है, इसलिए इसे 'Flamingo City' कहा जाता है। ये पक्षी यहीं घोसलें बनाते हैं और अपने बच्चों को बड़ा करते हैं। कच्छ के लोग इन्हें 'लाखा जी के बाराती' कहते हैं। अब लाखा जी के ये बाराती कच्छ में पर्यावरण संरक्षण के बड़े सुंदर प्रतीक बन गए हैं।

दूसरा किस्सा इंसान और वन्य-जीवों के सहयोग का है। और ये उत्तर प्रदेश से है। यहां के तराई इलाकों में फसल के समय हाथियों के झुंड गाँव की ओर आते हैं। इससे टकराव की आशंका बढ़ती है। लेकिन, अब यू.पी. में भी 'गज मित्र' जैसे प्रयास शुरू हुए हैं। गाँव के लोग ही टीम बनाकर हाथियों पर नजर रखते हैं। वे समय रहते लोगों को सतर्क करते हैं। इससे टकराव कम हो रहा है और लोगों में भरोसा बढ़ रहा है।

मध्य भारत से भी एक अच्छी खबर आई है। छत्तीसगढ़ में blackbuck, यानि, काले हिरण फिर से दिखाई देने लगे हैं। एक समय इनकी संख्या बहुत कम हो गई थी, लेकिन लगातार प्रयास हुए, और संरक्षण बढ़ाया गया - आज ये फिर से खुले मैदानों में दौड़ते नजर आते हैं। यह हमारी खोती विरासत की वापसी है। ऐसी ही उम्मीद Great Indian bustard यानि गोडावण के संरक्षण में भी दिख रही है। ये पक्षी हमारे रेगिस्तानी इलाकों की पहचान हुआ करती थी। लेकिन, एक समय इसकी संख्या बहुत कम रह गई थी। हालत ये थी कि ये पक्षी लुप्त होने की कगार पर पहुँच गई थी। लेकिन अब इसके संरक्षण के लिए बड़ा अभियान चल रहा है। वैज्ञानिक तरीके अपनाए जा रहे हैं। प्रजनन केंद्र बनाए गए हैं और अब नए जीवन की शुरुआत दिखाई दे रही है।

प्रकृति और मानव अलग नहीं हैं। हम एक-दूसरे के साथी हैं। जब हम प्रकृति को समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं और उसके साथ मिलकर चलते हैं, तो बदलाव साफ दिखाई देता है। आज यही बदलाव देश के कोने-कोने से नई उम्मीद बनकर सामने आ रहा है।

Northeast हम सब के लिए अष्टलक्ष्मी है। यहां भरपूर talent है और Northeast की प्राकृतिक सुंदरता भी सबका ध्यान खींचती है। 'मन की बात' में भी हम अक्सर Northeast के लोगों की उपलब्धियों पर चर्चा करते आए हैं। आज ऐसी ही एक और उपलब्धि की मैं आपसे चर्चा करूंगा और वो है - Bamboo sector में Northeast की सफलता। जिस चीज को कभी बोझ के रूप में देखा जाता था, वह आज रोजगार, कारोबार और innovation को नई गति दे रही है। हमारी माताएं-बहनें इसकी सबसे बड़ी लाभार्थी हैं। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि bamboo की परिभाषा बदल देने से कितना बड़ा परिवर्तन आया है।

अंग्रेजों के बनाए कानून के हिसाब से bamboo को पेड़ के रूप में परिभाषित किया गया था और इससे जुड़े नियम बहुत कड़े थे। कहीं पर भी bamboo को ले जाना बहुत मुश्किल था। ऐसे में यहां के लोग बांस से जुड़े काम-धंधे से दूर होते गए।

साल 2017 में कानून में बदलाव करके हमने bamboo को पेड़ की category से बाहर किया। जिसके नतीजे सबके सामने हैं। आज पूरे Northeast में bamboo sector फल-फूल रहा है। लोग लगातार innovation करके इसमें value addition कर रहे हैं।

त्रिपुरा के गोमती district के बिजॉय सूत्रधार और south त्रिपुरा के प्रदीप चक्रवर्ती उन्हीं की बात करें। इन्होंने नए कानूनों को अपने लिए एक बड़े अवसर के रूप में देखा। फिर इन्होंने अपने काम को technology से जोड़ा। आज वे पहले से कहीं बेहतर और कहीं ज्यादा बांस के उत्पाद बना रहे हैं।

नागालैंड के दीमापुर और आसपास के इलाकों में कई ऐसे Self Help Groups हैं जिन्होंने bamboo से जुड़े food products में value addition किया है। वहां खोरोलो क्रिएटिव क्राफ्ट जैसी टीमें भी हैं, जो, बांस के furniture और handicrafts पर काम कर रही हैं। मिजोरम के मामित जिले में ऐसी टीमें हैं, जो, बांस के tissue culture और poly-house management पर काम कर रही हैं। मुझे सिक्किम में गंगटोक के करीब Lagastal Bamboo Enterprise Team के बारे में भी पता चला है। यह bamboo से handicrafts, अगरबत्ती sticks, furniture और interior decor items बनाती है।

मैंने यहां पर कुछ ही उदाहरण दिए हैं। देश में bamboo sector की सफलता की यह list काफी लंबी है। मैं आप सभी से आग्रह करूंगा कि Northeast का कोई-न-कोई बांस का उत्पाद जरूर खरीदें। आप इसे gift के रूप में भी दे सकते हैं। आपके इस प्रयास से उन लोगों का हौसला बढ़ेगा, जो bamboo products को बनाने में अपना पसीना बहाते हैं।

तेजी से बदलते हुए इस समय में technology हमारी जिंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा बन गई है। आज हम अपने अतीत को वर्तमान से जोड़ने में भी technology का कमाल देख रहें हैं। इस दिशा में हाल ही में एक ऐसा development हुआ है जिससे शिक्षा से जुड़े लोग और इतिहास में रुचि रखने वाले बहुत खुश हुए हैं। कुछ दिन पहले ही National Archives of India ने एक विशेष portal पर एक अनोखा database शेयर किया है। इस संस्था ने 20 करोड़ से भी ज्यादा अमूल्य दस्तावेजों को digitize कर सार्वजनिक किया है। इनमें से कुछ तो बहुत ही दिलचस्प हैं - 7वीं शताब्दी की गिलगित पांडुलिपियाँ भोजपत्र पर लिखी हुई हैं। यहाँ आपको 8वीं शताब्दी का एक रोचक ग्रंथ श्री भुवालय भी देखने को मिलेगा। अंकों पर आधारित यह ग्रंथ एक grid के रूप में है। रानी लक्ष्मीबाई से जुड़े कुछ अहम् पत्र भी आप यहाँ देख सकते हैं। इनसे 1857 में उनके द्वारा लिए गए कुछ निर्णयों का पता चलता है, जो उनके पराक्रम को दर्शाते हैं। जो लोग नेताजी सुभाष के बड़े प्रशंसक हैं उनके लिए यहाँ नेताजी के जीवन, आजाद हिन्द फौज और उनकी speech से जुड़े कई documents हैं। आपको पंडित मदन मोहन मालवीय जी उनसे जुड़े कई documents भी मिलेंगे। इनमें BHU की स्थापना और हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़ी अहम् जानकारियाँ हैं। यहाँ हमारे संविधान सभा से जुड़े कई अनोखे दस्तावेज भी उपलब्ध हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप www.abhilekh-patal.in को जरूर visit करें। यह आपको अपने इतिहास का अद्भुत अनुभव देगा।

जरा कल्पना कीजिए, आप दुनिया-भर के सबसे प्रतिभाशाली लोगों के बीच हैं, आपके पास गणित के बहुत ही कठिन सवाल हैं। इन्हें सुलझाने के लिए समय है - केवल साढ़े चार घंटे। यानि वक्त बहुत कम है और competition international है, बहुत तगड़ा है। ऐसी स्थिति में nervous होना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन इन्हीं परिस्थितियों में हमारी बेटियों ने कमाल कर दिया। इस महीने की शुरुआत में फ्रांस के बोरदो (Bordeaux)

में European Girls Mathematical Olympiad का आयोजन हुआ था। Maths में गहरी रुचि रखने वाली स्कूली छात्राओं के लिए ये एक बड़ी प्रतियोगिता थी। यह दुनिया की सबसे सम्मानित प्रतियोगिताओं में से एक है। इस Olympiad में हमारी बेटियों ने अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया। मुझे इस प्रतिभाशाली टीम पर बहुत गर्व है। इसमें मुंबई की श्रेया मुंधड़ा, तिरुवनंतपुरम की संजना चाको, चेन्नई की शिवानी भरत कुमार और कोलकाता की श्रिमोयी बेरा शामिल थीं। इसमें हमारी टीम विश्व में छठे स्थान पर रही। श्रेया ने Gold Medal जीतकर इतिहास रच दिया, संजना ने Silver, तो शिवानी ने Bronze Medal अपने नाम किया।

इस Olympiad के लिए भारत में जो selection की प्रक्रिया है, वो अपने आप में बहुत कठिन है। इसका एक multi-stage selection process है। इसमें Regional, State और National Level पर कठिन चुनौतियों को पार करना होता है। इसके बाद सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्राएँ एक महीने के Mathematics Training Camp में शामिल होती हैं। यह camp Tata Institute of Fundamental Research के Homi Bhabha Center for Science Education में आयोजित होता है। इस camp के आखिर में team selection test होता है। इसमें performance के आधार पर ही भारत की टीम चुनी जाती है।

हर वर्ष देश-भर की करीब 6 लाख students इस Mathematical Olympiad Program में हिस्सा लेती हैं। समय के साथ यह संख्या लगातार बढ़ रही है, यानि, देश की बेटियों के बीच Olympiad का यह culture तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इन होनहार बेटियों को support करने के लिए मैं उनके parents की भी सराहना करता हूँ।

हमारे देश में इस समय एक बहुत अहम् अभियान चल रहा है, जिसके बारे में हर भारतीय को जानकारी होनी जरूरी है। ये है जनगणना का अभियान, यह दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना है। जो साथी पहले से इस तरह की प्रक्रिया से गुजरे हैं, इस बार जनगणना का उनका अनुभव, अलग होने वाला है। जनगणना 2027 को digital बनाया गया है। सारी जानकारी सीधे digital माध्यम में दर्ज हो रही है। घर-घर जाने वाले कर्मचारियों के पास mobile app है। वे आपसे बात करके उसी में जानकारी दर्ज करेंगे। इस बार जनगणना में आपकी भागीदारी भी आसान बनाई गई है, आप खुद भी अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं। कर्मचारी के आने से 15 दिन पहले आपके लिए सुविधा शुरू होगी। आप अपने समय के अनुसार जानकारी भर सकते हैं। जब आप प्रक्रिया पूरी करते हैं, तो आपको एक विशेष ID मिलती है। ये ID आपके mobile या e-mail पर आती है। बाद में जब कर्मचारी आपके घर आता है, तो आप यही ID दिखाकर जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं। इससे दोबारा जानकारी देने की जरूरत नहीं पड़ती। समय भी बचता है और प्रक्रिया आसान हो जाती है। जिन राज्यों में स्व-गणना का काम पूरा हो गया है, वहां, गणना कर्मचारी द्वारा घरों के सूचीकरण का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। अब तक लगभग 1 करोड़ 20 लाख परिवारों का मकान सूचीकरण का कार्य पूरा भी हो चुका है। देश की जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं है। यह हम सब की जिम्मेदारी है। आपकी भागीदारी बहुत जरूरी है। आपकी दी गई जानकारी पूरी तरह सुरक्षित रहती है, यह गोपनीय रखी जाती है, digital सुरक्षा के साथ इसे सुरक्षित किया जाता है। हम सब मिलकर इस प्रक्रिया में भाग लें। जनगणना 2027 को सफल बनाएं।

हमारे देश में खाने-पीने की परंपरा सिर्फ स्वाद तक सीमित नहीं रही है। इसी परंपरा का एक दिलचस्प हिस्सा है भारत की Cheese. कुछ दिन पहले मैंने tweet के माध्यम से एक जानकारी साझा की थी। ब्राजील में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय Cheese प्रतियोगिता में भारतीय Cheese के दो brands को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। इस उपलब्धि की चर्चा social media पर भी खूब हुई। कई लोगों ने मुझसे कहा कि भारत में Cheese की जो विविधता है उस पर भी बात होनी चाहिए।

भारत के dairy sector में बहुत बड़ा बदलाव आ रहा है। इस sector में Value addition ने हमारे पारंपरिक स्वाद को एक नई पहचान दी है। आज भारतीय cheese दुनिया-भर में अपनी जगह बना रही है। breakfast हो, lunch हो, या dinner, दुनिया की प्लेटों में भारत का स्वाद पहुंच रहा है। जम्मू-कश्मीर की कलारी cheese को ही लीजिए - इसे 'कश्मीर का मोजेरेला' कहा जाता है। गुज्जर-बकरवाल समुदाय के लोग, पीढ़ियों से इसे बनाते और खाते आए हैं। वहीं सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख में 'छुरपी' बहुत प्रसिद्ध है। पहाड़ों की सादगी और कोमलता इसके स्वाद में भी महसूस होती है। इस cheese की खास बात यह है कि इसे याक के दूध से बनाया जाता है।

महाराष्ट्र और गुजरात में 'टोपली नु पनीर' जिसे 'सुरती cheese' भी कहा जाता है। वह भी अपनी एक अलग पहचान रखता है। मैंने यहां सिर्फ कुछ नाम लिए हैं लेकिन हमारे देश में स्वाद की यह दुनिया बहुत व्यापक है। आज इस परंपरा को नई ताकत मिल रही है। अनेक भारतीय कंपनियां इस क्षेत्र में निवेश कर रही हैं। आधुनिक तकनीक आ रही है, बेहतर packaging हो रही है और हमारे उत्पाद world standard के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इसी का परिणाम है कि भारतीय cheese अब देश की सीमाओं से निकलकर दुनिया के बाजारों और रेस्तरां तक पहुंच रही है। आज हम local से global की बात करते हैं, उसमें भारतीय cheese का उदाहरण, हमें, आगे की दिशा दिखाता है। मुझे विश्वास है भारत का स्वाद, भारत की परंपरा और भारत की गुणवत्ता दुनिया के लोगों को एक नया अनुभव देगी और भारत से एक नया जुड़ाव भी बनाएगी।

इस महीने देश के कई हिस्सों में नववर्ष सहित अनेक पर्व-त्योहार मनाए गए। कुछ ही दिन बाद 9 मई को 'पोच्चीशे बोइशाख' के अवसर पर हम गुरुदेव टैगोर की जन्म-जयंती मनाएंगे। गुरुदेव बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक महान लेखक और विचारक तो थे ही, उन्होंने कई प्रसिद्ध संस्थानों को भी आकार दिया। गुरुदेव टैगोर लोगों के लिए ऐसे उद्योगों के पक्षधर थे, जिनमें स्थायी रोजगार मिलने के साथ ही गांवों का भी कल्याण हो। उनके रवींद्र संगीत का प्रभाव आज भी दुनिया-भर में बना हुआ है। मेरे लिए शांति निकेतन की यात्राएं अविस्मरणीय रहीं। यह वही institution है, जिसे उन्होंने पूरे समर्पण भाव से सींचा और संवारा था। उन्हें एक बार फिर मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

मई का महीना 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद भी दिलाता है। मैं मां भारती की सभी वीर संतानों को नमन करता हूं, जिन्होंने लोगों में देश-भक्ति की भावना जागृत की थी। यह समय स्कूली बच्चों की छुट्टियों का भी होता है। मेरा आग्रह है कि वे अपनी छुट्टियों का भरपूर आनंद लें और कुछ नया सीखने का प्रयास करें। गर्मियों के इस मौसम में आप सभी अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें। ■

# 'मन की बात' देशवासियों के मन में - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

'मन की बात' देश के करोड़ों नागरिकों को जोड़ने वाला एक सशक्त संवाद मंच है। इसके जरिए प्रधानमंत्री श्री मोदी समाज के विभिन्न वर्गों की प्रेरक कहानियों, नवाचारों और सकारात्मक प्रयासों को सामने लाते हैं, जिससे आमजन को नई दिशा और प्रेरणा मिलती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मन की बात कर कार्यक्रम को पूरे देशवासियों के मन में बिठा दिया है। उन्होंने देश को नवाचार की नई दृष्टि दी है। ऐसे कार्यक्रम समाज में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं और राष्ट्र निर्माण में जनभागीदारी को सशक्त करते हैं।

नारी शक्ति वंदन पर केंद्र सरकार तत्पर होकर प्रयास कर रही है, पर विपक्षी दलों के असहयोग के कारण यह प्रस्ताव संसद में पारित नहीं हो पाया।

'मन की बात' प्रधानमंत्री श्री मोदी का पूरे देश को एकजुटता का सकारात्मक संदेश देने का अद्भुत प्रयास है। जल संरक्षण के क्षेत्र में मध्यप्रदेश पूरे देश में अग्रणी है। 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत सरकार नई जल संरचनाओं के निर्माण-विस्तार के साथ-साथ पुराने कुओं, तालाबों, बावड़ियों और अन्य पारम्पारिक जल स्रोतों जैसे हैंडपंप आदि को भी नया जीवन देने का प्रयास कर रही है। इस अभियान में जनभागीदारी भी सुनिश्चित की जा रही है। ■

# फास्ट ब्रीडर रिएक्टर की सफलता मील का पत्थर - हेमंत खण्डेलवाल

**प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में विज्ञान तकनीक और नवाचार से नई ऊंचाइयों पर भारत।**
**'मन की बात' कार्यक्रम हर समाज वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है।**
**डिजिटल नवाचार से सशक्त हो रही जनगणना प्रक्रिया।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत निरंतर विज्ञान, तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर द्वारा क्रिटिकलिटी हासिल किए जाने की ऐतिहासिक उपलब्धि पर देश के परमाणु वैज्ञानिकों की सराहना की और इसे आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक मील का पत्थर बताया। यह उपलब्धि भारत की वैज्ञानिक क्षमता, शोध कौशल और वैश्विक स्तर पर बढ़ती प्रतिष्ठा का सशक्त प्रमाण है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में संचालित जनगणना अभियान में आधुनिक नवाचारों और डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से जनगणना प्रक्रिया अधिक पारदर्शी, सटीक और सरल बन रही है। इस जनगणना से शासन-प्रशासन को नीतिगत निर्णय लेने में मजबूती मिलेगी और योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी रूप से पहुंच सकेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ब्राजील में आयोजित अंतरराष्ट्रीय चीज प्रतियोगिता में भारतीय चीज के दो ब्रांड्स को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने का उल्लेख करते हुए इसे देश के डेयरी क्षेत्र की बड़ी उपलब्धि बताया। यह सफलता 'मेक इन इंडिया' की भावना को सशक्त करती है और भारतीय उत्पादों की वैश्विक गुणवत्ता को दर्शाती है। ■

# वीर योद्धा छत्रसाल

**महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोम-रोम में स्फूर्त-संचार करती गया।**

उन्होनें बुंदेलखंड को स्वतंत्र करने का वीर-संकल्प लिया। तत्पश्चात महाराज से विदाई लेकर वे सीधा बुंदेलखंड को वापस गये।

बुंदेलखंड का स्वातंत्र्य भी छीना गया था। वहाँ का प्रमुख राजा चंपतराय औरंगजेब के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया था। चंपतराय की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी खड्ग से अपना सिर कटवा कर मर गयी। चंपतराय के पुत्र छत्रसाल एक तेजस्वी राजकुमार थे, बुंदेलखंड की स्वाधीनता का सपना उसकी पलकों में फुदक रहा था। तथापि उसे किस प्रकार पूरा करना है, यह उस कच्ची उम्र वाले छत्रसाल को पता नहीं था। आस-पास का माहौल भी उसके विरोध में ही था। शेष सब हिंदू राजा परकीयों (दूसरों) की गुलामी करने की होड़ में ही व्यस्त थे। यह सब देखकर छत्रसाल की आत्मा विद्रोह पर उतारू हो जाती थी। परंतु मार्ग पता न होने से वह छटपटा रहा था। उसी मनःस्थिति में वह राजा जयसिंह के आश्रय में आकर उसकी सेना में भर्ती हुआ था। उसने वहाँ अतुल पराक्रम दिखाया, लेकिन उसकी ओर किसी ने आँख उठाकर भी नहीं देखा। तभी उसे परकीयों की चाकरी क्या चीज होती है, इसका मजा चखने को मिला। छुटपन से ही छत्रसाल के कानों में शिवाजी का नाम तथा कारनामों की बातें आती थी। उनका साहस, स्वातंत्र्य समरों की स्फूर्ति गाथा सुन कर वह रोमांचित हो उठा था। इसी कारण, चाकरी करनी ही हो तो स्वधर्म स्वराज्य के संरक्षक उस शिवाजी के चरणों का दास बनना पसंद करूंगा, विधर्मी, अत्याचारी औरंगजेब का गुलाम कतई नहीं बनूँगा, ऐसा उस नवयुवक ने अपने मन में ठान लिया था।

औरंगजेब ने दिलेर खान तथा बहादुर खान को फिर एक बार शिवाजी पर हमला करने भेज दिया। तब छत्रसाल भी उनके साथ था। दक्खन में आने के बाद, एक दिन उसने दिलेर खान के पास जाकर शिकार खेलने जाने की इजाजत माँगी। अनुमति मिलते ही, फौज की छावनी से अपनी पत्नी तथा साथियों के साथ निकल पड़ा। गिरि-कंदराओं के अपरिचित राहों पर दिन-रात दौड़ते-हाँफते उसने भीमा, कृष्णा आदि नदियों को पार किया। अंत में, स्वराज्य की सीमा में महाराज के सेना-शिविरों में पहुँच गया। बुदेलखंड का राजकुँवर छत्रसाल अपने परिवार के साथ अपनी ओर आ रहा है, यह समाचार गुप्तचरों द्वारा शिवाजी महाराज तक पहले ही पहुँच चुका था। महाराज ने उनके स्वागत की उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। फिर भी उन्हें अचंभा, यह नवतरूण इस तरह क्यों दौड़कर आ रहा हैं।

अपने डेरे में छत्रसाल प्रवेश कर ही रहा था कि महाराज ने खड़े होकर प्रेम भरे स्वर में, आइए, वीर योद्धा छत्रसालजी ऐसा कहकर स्वागत किया। स्वतंत्र महाराष्ट्र ही मानो खड़ा होकर स्वाधीनता के उत्सुक बुंदेलखंड का स्वागत कर रहा था। इतना मनोभावन, अपूर्व दृश्य था वह। राजपुरूष शिवाजी को देखने वह कितनी लालसा, कितनी परेशानियों, परिश्रम, कितनी पहाड़ों, नदियों को पार कर दौड़-धूप करके आया था। आखिर अपनी प्राणों की आस सफल हुई, यह देखकर छत्रसाल का हृदय पुलकित हो उठा। महाराज ने उस वीर किशोर को परम वात्सल्य से अपने पास बुलाकर बैठा लिया। बताइए, अब सब कुछ, ऐसा बड़ी आत्मीयता से पूछा। छत्रसाल ने अपने जीवन की पूरी रामकहानी बतायी। अंत में, महाराज से आश्रय की याचना की। स्वराज्य के एक सेवक के नाते अपना स्वीकार हो, इस व्यथा के साथ उसने प्रार्थना की।

छत्रसाल के एक-एक शब्दों में स्फुटित हो रही उसके अंतःकरण की वेदना, तिलमिलाहट, आकांक्षाएँ देखकर महाराज का हृदय भी उमड़ आया। उन्होंने अपनी भावपूर्ण ओजस्वी वाणी में कहा, छत्रसाल, आप क्षात्रकुल के मुकुटमणि हैं। आप बुंदेलखंड वापस चले जाइए। उसे मुक्त करिए। तुर्क हाथी के समान होंगे, लेकिन आप सिंह हो। आप भी अपनी सेना खड़ी करिए, लड़िए, शत्रु को भगाइए। बुंदेलखंड को स्वतंत्र बनाइए। चिन्ता मत करो, आप विजयी होंगे। हम दोनों के एक साथ रहकर लड़ने से बेहतर होगा कि अलग-अलग जगहों पर संघर्ष करें। रणनीति की दृष्टि से दो-दो मोर्चों पर औरंगजेब का दमछाक करना उचित तथा आसान होगा। मेरे पास सेवक बनकर रहने से आपके सब पराक्रम का श्रेय भी मुझे ही मिलेगा। वैसा न हो। आप एक स्वतंत्र राजा के नाते झलकते रहें, यही मेरी इच्छा हैं। तुम्हारी विजय-दुंदुभी शीघ्र ही हमारे कानों में आ जाये।

महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोम-रोम में स्फूर्ति संचार करती गयी। उसने बुंदेलखंड को स्वतंत्र करने का वीर संकल्प लिया। तत्पश्चात् महाराज से विदाई लेकर वह सीधा बुंदेलखंड को वापस गया। आखिर छत्रसाल ने महाराज के आदेशानुसार अतुल पराक्रम से बुंदेलखंड को स्वतंत्र किया। यमुना से नर्मदा तक, चंबल से टास तक फैला है उसके तेग का तेज, ऐसा भूषण कवि ने उसके बारे में अपने काव्य में वर्णन किया है। आगे छत्रसाल के वृद्ध होने पर, मोहम्मद बंगशाह ने बुंदेलखंड पर आक्रमण किया।

तब छत्रसाल ने पहले बाजीराव पेशवा से सहायता की याचना की। बाजीराव ने शिवाजी की परंपरा को ही आगे बढ़ाते हुए दौड़ते जाकर उसकी मदद की।

खुद के व्यक्तिगत बड़प्पन की किंचित मात्र भी कल्पना रखने वाला कोई भी हो, छत्रसाल जैसा महापराक्रमी हिंदू राजा को अपने पास सरदार की हैसियत से रखे बिना नहीं रह पाता। तथापि, विशाल राष्ट्रीय दृष्टि होने के कारण ही शिवाजी महाराज ने छत्रसाल को वैसी स्वतंत्र प्रेरणा देकर भेज दिया। तब शिवाजी के पास था, केवल हथेली भर राज्य। परंतु, उनकी दृष्टि हिंदुस्तान की पूरी लंबाई-चौड़ाई पर दौड़ती थी। ▪

# लोकमाता महारानी अहिल्याबाई

भारत वर्ष में वीरांगनों के बलिदान और उत्कर्ष का समृद्ध इतिहास है। इतिहास की एक ऐसी ही अद्वितीय वीरांगना थी अहिल्या बाई होल्कर। मर्यादित व्यवहार और आदर्श आचरण की पर्याय अहिल्या बाई ने तीस वर्षों तक होल्कर राज्य का कुशल संचालन किया। न्यायप्रिय रानी ने सुशासन की मिसाल कायम की। उनके समय में होल्कर राज्य समृद्धि के चरम पर था। उन्होंने एक ऐसे लोक मंगलकारी राज्य की स्थापना की जहां पर सबके लिए न्याय, समदृष्टि और बराबरी का स्थान था। न्यायोचित व्यवस्था और आदर्श भाव के कारण ही अहिल्या बाई को लोकमाता से संबोधित किया गया। अहिल्या बाई अपने जीवन काल में ही किंवदती बन चुकीं थीं। राज्य को जनता की धरोहर मानते हुए उन्होंने जन कल्याण की भावना से शासन का संचालन किया। राज्य की रक्षा के लिए अहिल्या बाई युद्ध के मैदान में उतरीं और लड़ाईयाँ लड़ीं। मंदसौर में उनका संघर्ष बहुत चर्चित रहा। वहाँ उन्होंने दुश्मनों से लोहा लेकर जीत हासिल की थी।

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के पाथर डीना गाँव में हुआ था। गाँव के पटेल मनकोजी शिन्दे के यहाँ 17 मई 1725 में जन्मी अहिल्याबाई का कण्ठ अत्यन्त मधुर था। बाल्यकाल में ही मनकोजी ने अपनी पुत्री को अनेक धर्मग्रन्थों के ज्ञान से समृद्ध किया और अनेक स्त्रोत और भजन याद करवा दिए। पाथर डीना गाँव की बच्ची अहिल्या बाई के जीवन में बड़ा बदलाव तब आया जब 1737 में इन्दौर नरेश मल्हार राव होल्कर ने पूना से इन्दौर लौटते समय रास्ते में पाथर डीना के पास पड़ाव डाला। शाम को भगवान त्रयंबकेश्वर के दर्शन करने पहुँचे। वहाँ उन्हें शिव आराधना के स्त्रोत की शास्त्रोक्त उच्चारण सहित मधुर ध्वनि सुनाई दी। मधुर गायन से मुग्ध मल्हार राव ने आरती के बाद कन्या से नाम पूछा वह अहिल्या बाई थी।

मल्हार राव ने मंदिर के पुजारी से अहिल्या बाई के घर परिवार की जानकारी ली और उसके घर पहुँचे। अहिल्या बाई के पिता मनकोजी से अपने पुत्र खाण्डेराव के लिए अहिल्या बाई का हाथ मांगा। मनकोजी स्तब्ध थे। होना ही था, कहाँ एक साधारण पटेल की बेटी अहिल्या और कहाँ इन्दौर नरेश का बेटा राजकुमार खाण्डेराव। भगवान त्रयंबकेश्वर की कृपा पाकर वे धन्य हो गये। जल्द ही विवाह संपन्न हुआ, अहिल्या बाई मल्हारराव की पुत्र-वधू बन इन्दौर के राजमहल आ गई। अहिल्या बाई की विनयशीलता, सेवा भाव, शान्त मृदु स्वभाव ने उन्हें सबका विशेष बना दिया।

**मल्हार राव अहिल्या बाई की विलक्षण प्रतिभा को समझते थे इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को हाथी, घोड़े की सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया और राजकाज के कार्यों में सलाह मशवरा भी करने लगे। पति खाण्डेराव भी सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर संतुष्ट थे।**

मल्हार राव अहिल्या बाई की विलक्षण प्रतिभा को समझते थे इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को हाथी, घोड़े की सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया और राजकाज के कार्यों में सलाह मशवरा भी करने लगे। पति खाण्डेराव भी सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर संतुष्ट थे। विवाह के दसवें वर्ष में खाण्डेराव के यहाँ पुत्र मालेराव और तेरवें वर्ष में पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ।

होल्कर कुमार खाण्डेराव वीर और साहसी थे, उन्होंने युद्ध कार्य का संचालन आरंभ कर दिया था जब युद्ध अभियानों को विजित कर खाण्डेराव वापस आते तो, अहिल्या बाई अति अभिमान के साथ पति की आरती उतारती। नियती चक्र में दोनों के सुखी दांपत्य जीवन को कुछ और ही स्वीकार्य था। सन् 1754 में जब राजपूत रजवाड़ों ने विद्रोह किया तो खाण्डेराव दमन अभियान पर चल दिये। युद्ध में खाण्डेराव वीरगति को प्राप्त हुए।

अहिल्या बाई पति के साथ सती होना चाहती थीं परन्तु मल्हार राव होल्कर को अपनी पुत्रवधु अहिल्या बाई की बुद्धिमता और धर्मनिष्ठा पर पूर्ण विश्वास था इसलिए उन्हें सती होने से रोक दिया गया। 20 मई 1766 को मल्हार राव होल्कर चल बसे। 23 जुलाई 1766 को अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव गद्दी पर बैठे लेकिन वे भी लंबे समय तक जीवित नहीं रहे। 13 मार्च 1767 को मालेराव की मृत्यु होने के बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की बागडोर संभालने आगे आयीं। हालांकि एक महिला का राज्य संचालन करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी लेकिन इसमें अहिल्या बाई पूर्ण रूपेण सफल रहीं। अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव की मृत्यु हो जाने के बाद मल्हार राव के दीवान गंगाधर ने राधौबा दादा को अपनी ओर मिलाकर एक षडयंत्र रचा जिसमें उसने राधौबा को लालच दिया कि आपके प्रयत्न से अहिल्या बाई मेरे किसी पुत्र को गोद ले लेंगी तो मैं आपको एक बड़ी रकम नजर करूँगा। रुपयों के लालच में राधौबा ने अहिल्या बाई पर गोद लेने के लिए दबाव डाला परन्तु अहिल्या बाई ने गोद लेना कबूल नहीं किया। फलस्वरूप राधौबा ने इन्दौर पर चढ़ाई करने की योजना बनायी।

अहिल्या बाई ने राधौबा को कहलवाया कि तुमको एक स्त्री के साथ युद्ध नहीं करना चाहिए, यदि इस युद्ध में तुम्हारी पराजय हुई तो सच मानो तुम संसार में मुँह ऊँचा करने के लायक भी नहीं रहोगे। राधौबा की सेना भी इस कार्य से प्रसन्न न थी। युद्ध के लिये सिंधिया और भौंसले की सहमति भी नहीं थी। युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व ही माधवराव पेशवा का पुत्र राधौबा के पास पहुँचा और कहा कि वे अहिल्या बाई से युद्ध न करें। इस तरह यह युद्ध टल गया। इसके बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की उत्तराधिकारी बनीं और महेश्वर को नई राजधानी बनाया। तुकोजी राव होल्कर सेनापति बनाए गए।

सन् 1767 से 1795 तक के अपने शासनकाल में अहिल्या बाई ने सारे भारत में दान-धर्म की गंगा प्रवाहित कर दी। होल्कर राज्य तथा देश के अन्य भागों में अहिल्या बाई ने अनेक मंदिर, घाट, कुएँ, बावड़ियाँ, धर्मशालाएँ, तालाब आदि का निर्माण करवाया। महारानी अहिल्या बाई प्रजा की खुशहाली के लिए समर्पित रहीं। उनके तीस वर्षों का शासनकाल होल्कर राज्य के उत्कर्ष का प्रमाण है। ▪

# सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर ने

कुछ व्यक्ति जन्म से ही महान होते हैं। कुछ महान बनाये जाते हैं। किन्तु कुछ ऐसे होते हैं जिनकी महानता उनके जीवनकाल में स्वीकारी नहीं जाती। विनायक दामोदर सावरकर इस तीसरी श्रेणी में आते हैं। उनकी महानता इसी बात में हैं कि अपने ही लोगों से अनदेखी व अपमान झेलते हुए भी उन्होंने सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित रखी। दुर्भाग्य से वे हिन्दू जनसाधारण को स्वीकार्य नहीं थे क्योंकि वे जन्म से ब्राह्मण पुराणमतवाद के घोर शत्रु रहे। इसीलिये एक विचित्र विरोधाभास यह रहा कि दकियानूसी ब्राह्मण उनके अस्पृश्यता के विरोध में उनके तीव्र व स्पष्ट दृष्टिकोण के कारण उन्हें 'अछूत तात्या' (तात्या उनको प्यार से पुकारते थे) कहकर उनका तिरस्कार करते थे। परन्तु इस कारण वे अछूतों के लिये, हिन्दू समाज के लिये, निचले तबके के लिये अपने आप स्वीकार्य नहीं बन गये।

बड़े विचित्र व स्वार्थी कारणों से ब्राह्मणेतर नेता और दलित वर्ग के नेता भी, निजी तौर पर यह स्वीकारते हुए भी कि सावरकरजी ने हिन्दू समाज से अस्पृश्यता व दूसरी सामाजिक बुराईयाँ दूर करने में क्रान्तिकारी योगदान दिया था, उस कार्य को लोगों की नजरों में लाने में बड़ी आनाकानी की। यह भी सच है कि 13 वर्ष की लंबी अवधि के लिये 1911 से 1923 तक वे अंडमान की सैल्युलर जेल में भारत भूमि से दूर कष्ट झेलते रहे और जब उन्हें वापस लाया गया तो उन्हें रत्नागिरी में १४ वर्षो तक स्थानबद्ध रखा गया इसीलिये उनके क्रियाकलाप (जो केवल सामाजिक हो सकते थे)उसी स्थान तक सीमित रहे। फ्रान्स के समुद्र तट के पास पानी में छलांग लगाकर उन्होंने अपनी जो अखिल भारतीय प्रतिमा बनाई थी वह धीर-धीरे जनता की स्मृति से ओझल हो गई, और जब 1937 में उन्हें राजनीति में सक्रिय होने की छूट मिली तो, जैसा कि हम पहले ही देख चुके है, उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का झंडा उठाने के सिवाय दूसरा पर्याय नहीं था व हिन्दू जनता की नजरों में उसका अर्थ ब्राह्मणवाद का समर्थन होता था।

जब 1947 में देश स्वाधीन हुआ तब हिन्दू समाज के आराध्य महात्मा गांधी की हत्या हिन्दू राष्ट्रवाद को बचाने की बात कहकर की गई जिससे की मतलबी लोगों को सावरकर तथा उनके हिन्दुत्व

**सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था।**

परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो नि:संदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है...

दर्शन पर आघात करने का मौका मिला। डॉ. के.बी.हेडगेवार द्वारा 1925 में हिन्दू समाज की जैविक एकता वापस लाने हेतु स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी उस मामले में घसीटा गया व उस पर पाबन्दी लगाई गई। कठिन सत्व परीक्षा के बाद पाबन्दी हटाई गई। गांधी हत्या मुकदमे से सावरकर भी निर्दोष मुक्त हुए। किन्तु जिस कारण सावरकर व संघ दोनों को ही इस मामले में घसीटा गया था, वह उद्देश्य सफल रहा। हिन्दू राष्ट्रवाद जो विभाजन के बाद के वातावरण में फलता फूलता उसे गहरा आघात पहुँचा। सावरकर ब्राह्मण थे। संघ के अधिकतर कार्यकर्ता भी ब्राह्मण दकियानूसी करके दोनों को हिन्दू जनता की नजरों में बदनाम किया जा सका। डॉ. के. बी. हेडगेवार द्वारा स्थापित हिन्दू संगठन की उनकी कार्य प्रणाली तथा उनके द्वारा एकत्रित किया गया निष्ठावान स्वयंसेवकों का समूह इनकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी थोड़ी है क्योंकि 1948 के भयंकर आघात के पश्चात् भी संघ न केवल अस्तित्व में रहा बल्कि फलता फूलता गया और न केवल भारत में बल्कि सारे विश्व में फैल गया।

हिन्दू राष्ट्रवाद को सांप्रदायिक कहकर उसका अस्तित्व मिटाने के प्रयासों का उल्टा असर पड़ा। यह तथ्य कि हिन्दू राष्ट्रवाद धीरे-धीरे व निश्चित रूप से हिन्दू समाज में मान्यता प्राप्त कर रहा हैं, इस बात का द्योतक है कि जो पैंतरा सावरकर जी ने 1937 में लिया था वह सही था तथा हिन्दू समाज उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद के महापुरूष के रूप में स्वीकार करता है। यह सही है कि संघ सावरकर की बुद्धि की उपज नहीं थी। सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था। परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो नि:संदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है।

इस प्रकार सामाजिक व राजनीतिक क्रान्तिकारी के रूप में सावरकर जी की महानता धीरे-धीरे हिन्दू समाज में स्वीकारी जा रही है। अब तो उस पक्ष के नेता ब्राह्मणों समेत सभी के लिये न्याय व समान बर्ताव की मीठी-मीठी बातें करते हैं। यह सद्भाव व सहकार की भावना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वीर सावरकर की चेतना हिन्दू समाज में जीवित है व बढ़ रही हैं। इसका प्रकटीकरण अयोध्या आंदोलन के समय हुआ तथा कांग्रेसी नेता भी जो अपने आपको हिन्दू कहलवाना टालते थे अब उस बात पर गर्व करने लगे हैं। एक प्रमुख कांग्रेसी नेता व एक समय के पक्ष के महासचिव ने सुझाव दिया था कि कांग्रेस की कार्यक्रम सूची में हिन्दुत्व का होना उपयोगी रहेगा, वे नेता थे स्वर्गीय श्री व्हि. एन.गडगिल। ▪

# संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आम लोगों ने यहां संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं।

आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural Progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

**भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है।**

यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई। हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ।

संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है।

यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है-ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जानेवाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है। तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है।

लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कुसंस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा- 'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है। ▪

**(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)**

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल ने पार्टी के स्थापना दिवस पर ध्वजारोहण किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने गांव-बस्ती चलो अभियान के तहत गांवों का भ्रमण कर संवाद किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने अनुसूचित जनजाति मोर्चा की कामकाजी बैठक को संबोधित किया।

▪ ''नारी शक्ति वंदन'' अधिनियम के समर्थन में मशाल जुलूस निकाला गया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मां नर्मदा मंदिर उद्गम स्थल पर दर्शन व पूजन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने भाजपा विधायक दल की बैठक को संबोधित किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने संयुक्त मंडल प्रशिक्षण वर्ग की प्रदर्शनी का उद्घाटन कर संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 1.25 लाख लाड़ली बहनों के खाते में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की राशि अंतरित की।

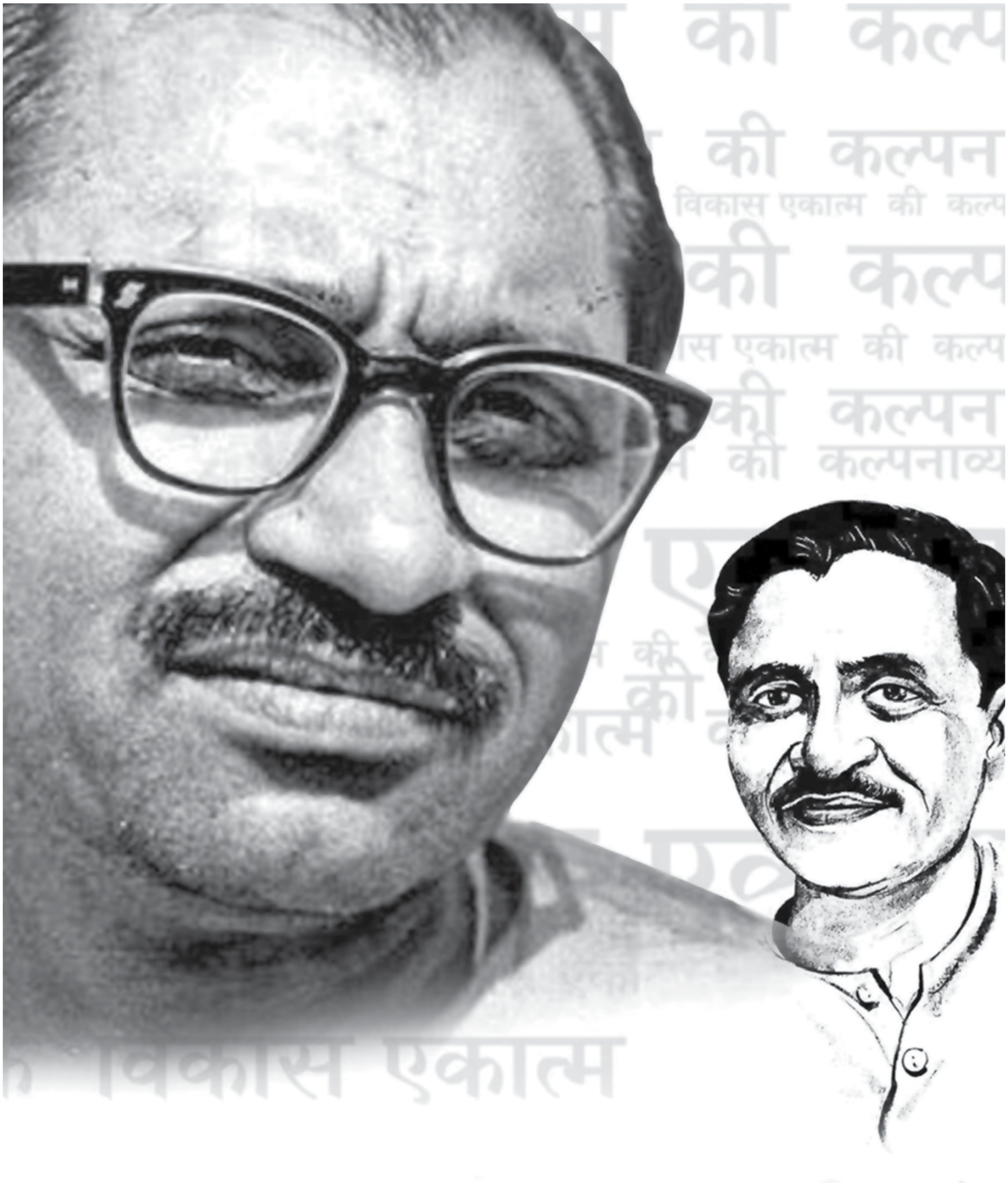

**मानव प्रकृति में दोनों प्रवृत्तियां रही हैं-**
**एक तरफ क्रोध और लोभ तो दूसरी तरफ प्रेम और त्याग**

**पं. दीनदयाल उपाध्याय**